* क्रिकेट में बेजोड़ कपिल
* सबसे सुंदर प्रतियोगिता के इनाम
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन
अप्रैल '९४
पांच रुपए

'शोलों से खेलना उसका 'शौक था! आग लगाना उसका काम था!! वह अपने आतंक से सबको भयभीत करना चाहता था!!!

डायमण्ड कॉमिक्स

में पहली बार

एक नया चरित्र

जिसे आप हीरो नहीं

खल-नायक

के रूप में पसंद करेंगे

एक नया चरित्र नेगेटिव में आपको भायेगा।

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

1994
चाचा चौधरी का
रजत जयंती वर्ष

डायमंड कॉमिक्स

डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
प्राण
चाचा चौधरी-11

प्राण
श्रीमतीजी
पार्टी ड्रैस

प्राण
रमन और
टेबल टेनिस

पाण
दाबू
और नंदिनी

मुफ्त!
इस सैट के साथ
W W F
SUPER STAR
TRUMP GAME

जेम्स बाण्ड-19

डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
मोटू छोटू-6

डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
मैण्ड्रेक-18

फौलादी सिंह
और ब्लनिया

डायमण्ड कॉमिक्स
का नया चरित्र
डायनामाइट

शोलों से खेलना उसका शौक था।
आग लगाना उसका काम था।
वह अपने आतंक से सबको
भयभीत करना चाहता था।
डायमण्ड कॉमिक्स में पहली बार
एक चरित्र जिसे आप हीरो नहीं
खलनायक के रूप में पसंद करेंगे।

एक नया चरित्र नेगेटिव रोल
में आपको भायेगा।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज नई दिल्ली-110002

फन कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स

थ्रिल कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स

एक्शन कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

पुराने ज़माने में एक आदमी था। एक बेटी को छोड़कर उसका कोई नहीं था। उसने दूसरी शादी कर ली। वह औरत बुरे स्वभाव की थी। उसकी दो बेटियां हुईं। बड़ी होने पर वे भी मां की तरह दुष्ट हो गईं। सौतेली मां, अपनी सौतेली बेटी सिंड्रेला से ही घर का सारा काम-काज कराती।

वहां के राजा ने एक दावत दी। उसमें सभी खास-खास लोगों को बुलाया। दोनों बहनें भी उस दावत में जाने वाली थीं।

आखिर दावत की सांझ आ गई। गर्वीली लड़कियां बग्घी में बैठकर राजमहल के लिए चल दीं। सिंड्रेला बग्घी को जाते हुए देखती रही। जब बग्घी आंखों से ओझल हो गई, तो वह रसोईघर में आई और फूट-फूटकर रोने लगी। तभी एक बुढ़िया वहां आई। उसने सिंड्रेला को धीरज बंधाया। बोली— "तुम भी राजा की दावत में शामिल होना चाहती हो ना। बाग में से एक कद्दू तोड़ लाओ।"

सिंड्रेला सबसे बड़ा कद्दू ले आई। बुढ़िया ने उसे भीतर से खोखला किया। फिर अपनी जादुई छड़ी से छुआया, तो वह चमचमाती बग्घी में बदल गया। दो चूहों को बुढ़िया ने शानदार घोड़ों में बदल दिया। घोड़ागाड़ी तो तैयार हो गई, लेकिन कोचवान भी तो चाहिए। उसने एक मोटा-सा चूहा लिया और छड़ी घुमाकर उसे कोचवान बना दिया।

फिर परी ने झट से सिंड्रेला से छड़ी छुआ दी। उसके शरीर पर बेशकीमती पोशाक आ गई। परी ने चमचमाते मखमली जूतों का जोड़ा भी उसे दिया।

परी ने सिंड्रेला से कहा कि रात में बारह बजने से पहले ही वहां से लौट आना। यदि बाद में क्षण भर भी वहां रुकोगी, तो उसका जादू समाप्त हो जाएगा। गाड़ी कद्दू बन जाएगी, कोचवान और घोड़े चूहे बन जाएंगे।

सिंड्रेला खुशी-खुशी राजमहल के लिए रवाना हो गई। दरबार में पहुंचकर राजा को सूचना दी कि कोई राजकुमारी आई है। राजकुमार उसका स्वागत करने को आगे आया।

जैसे ही पौने बारह बजे, सिंड्रेला ने वहां से विदा ली और तेजी से लौट चली। घर आने पर उसने परी मां को धन्यवाद दिया। उसने कहा कि कल शाम को राजकुमार ने उसे फिर आमंत्रित किया है।

दूसरे दिन शाम को सिंड्रेला फिर राजमहल गई। आज उसने और भी शानदार कपड़े पहन रखे थे। राजकुमार ने उसका स्वागत किया। वह हर समय उसी के साथ-साथ रहा। लेकिन उस गहमागहमी में सिंड्रेला परी की बात ही भूल गई। जैसे ही घड़ी ने आधी रात का घंटा बजाया, वह चौंक उठी। आनन-फानन में वहां से लौट चली। इस हड़बड़ाहट में उसका एक मखमली जूता भी वहीं छूट गया।

राजकुमार ने डोंडी पिटवाई कि जिसके पांव में वह जूता ठीक आएगा, वह उसी से शादी करेगा। ऊंचे घराने की कितनी ही युवतियों ने जूता पहनना चाहा, पर किसी के पांव में ठीक न बैठा। राजा के सिपाही राजधानी में गली-गली घूमने लगे। वे सिंड्रेला के घर भी पहुंचे। दोनों सौतेली बहनों ने जूता पहनने की कोशिश की, पर पहन नहीं पाईं। सिंड्रेला ने जूता पहनकर देखना चाहा तो दोनों बहनें उसका मजाक उड़ाने लगीं। सिंड्रेला के पांव में जूता एकदम ठीक आया। तभी सिंड्रेला ने अपनी जेब से उसके साथ का दूसरा जूता भी निकाला और पहन लिया। सभी यह देखकर हैरान रह गए। अब सौतेली बहनें समझ गईं कि दावत की राजकुमारी सिंड्रेला ही थी।

सिंड्रेला की शादी राजकुमार के साथ हो गई। दोनों बहनों को उसने माफ कर दिया। सिंड्रेला की यह कहानी दुनिया के हर देश में पढ़ी-सुनी गई है। जीवन की राह पर बेसहारा भी सफल हो जाते हैं। बुझा दीपक लेकर नहीं, आशा-विश्वास संजोकर चलें।

—तुम्हारे भइया

नंदन

अप्रैल '९४
वर्ष : ३० अंक : ६

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

आवरण : शमशेर अ. खान; एलबम : अशोक वाही

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा, उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : नारायण

राजमाता

—हेमचंद्र जोशी

नंदन भट्ट छोटी उम्र में ही आचार्य कौशाम्बेय की शरण में काशी चला गया। वेदांत व ज्योतिष विज्ञान में वह आचार्य के कुशलतम छात्रों में से एक बना। उसकी विनम्रता व सेवाभाव के कारण आचार्य का उसके प्रति विशेष स्नेह था।

एक बार आचार्य ने उसका हाथ देखा। कहा—"नंदन, तुम एक महान ज्योतिषी बनोगे। तुम्हारी कही हुई बातें सच होंगी। अतः तुमको इस विषय का अध्ययन करना चाहिए।"

शिक्षा प्राप्ति के बाद नंदन भट्ट अपने घर लौट आया। काशी से शिक्षा प्राप्त करने पर भी उसे कोई प्रतिष्ठित पद प्राप्त नहीं हुआ।

एक बार नगर में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मंदिर के मुख्य पुजारी ने मंदिर में शास्त्रार्थ, प्रार्थना, गायन व ज्योतिष आदि विषयों पर चर्चा करवाई, ताकि मेधावी लोगों का परिचय मिल सके।

चर्चा की समाप्ति के बाद अपना भविष्य जानने के लिए लोग ज्योतिषियों के पास जाने लगे। इसी भीड़ में एक विवाहित महिला, अपने दो-तीन महीने के बच्चे के साथ खड़ी थी। वह भी अपना हाथ दिखाना चाहती थी। उसका पति राजा की फौज में बहुत दूर मोर्चे पर तैनात था। परंतु गरीब महिला पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इधर भीड़ नंदन भट्ट के ऊपर भी कोई ध्यान नहीं दे रही थी। अतः नंदन ने महिला को पुकारा—"देवी, इधर आइए। मैं आपका भविष्य बताऊंगा।"

वहां के जाने-माने ज्योतिषियों ने नंदन भट्ट की आवाज सुनकर, उस ओर देखा। नंदन भट्ट वहां अपरिचित था। अतः उपस्थित ज्योतिषी एक-दूसरे को देखकर मुसकराए।

नंदन भट्ट बहुत देर तक महिला का हाथ देखकर गणनाएं करता रहा। वह चकित था। उसने बालक का ललाट ध्यानपूर्वक देखा। फिर गम्भीर वाणी में कहा—"देवी, तुम्हारी रेखाओं के अनुसार तुम राजयोग की अधिकारिणी हो। पर तुम्हारा पति या पुत्र राज्य का स्वामी नहीं होगा।"

नंदन भट्ट अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि उपस्थित ज्योतिषी खिलखिलाकर हंस पड़े। बोले—"श्रीमन्, ऐसा कैसे सम्भव है? फिर यह तो गरीब किसान महिला है।"

नंदन भट्ट ने महिला से आगे कहा—"तुम्हारा पति एक बहादुर व पराक्रमी व्यक्ति है, किंतु तुम बहुत समय तक सौभाग्यवती न रह सकोगी। अतः..."

उसकी बातें पूरी होने से पहले ही महिला नाराज हो उठी। वह चिल्लाकर बोली—"अरे पाखंडी ज्योतिषी, तुम अपनी विद्वत्ता अपने पास रखो और मुझे ठगने की कोशिश न करो।"

फिर वह भला-बुरा कहती, पैर पटकती वहां से चली गई। उपस्थित लोगों को नंदन भट्ट का मखौल उड़ाने का मौका मिल गया। उसकी बातें सभी को बड़ी ही विचित्र लगी थीं। कुछ लोगों ने तो उसपर उलटी-सीधी भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी का लांछन लगा दिया।

नंदन भट्ट ने ललकारते हुए गम्भीर वाणी में कहा—"शास्त्रों में की गई व्याख्या के अनुसार, मेरी

भविष्यवाणी सत्य होनी चाहिए। बाकी ईश्वर की इच्छा। मन से तो मैं भी यही कामना करता हूं कि मेरी भविष्यवाणी गलत हो और महिला का सुहाग बना रहे।"

उसकी गम्भीर वाणी सुनकर लोग स्तब्ध रह गए। महिला के परिचित लोगों ने कहा—"महोदय, ज्ञानी होने पर भी आपको इतना कटु सत्य नहीं बोलना चाहिए था।"

नंदन भट्ट ने कहा—"सच है। यदि मैं मात्र अच्छी लगने वाली भविष्यवाणियां ही करूं और बुरी बातें न बताऊं, तो यह झूठ के समान ही होगा। मैं वही कहता हूं जो गणनाएं बताती हैं। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं कहता।"

लोगों की बातों से खिन्न होकर नंदन भट्ट वहां से चल दिया। घटना के बारे में किसी को कुछ ध्यान भी न रहा। कुछ ही सप्ताह बाद महिला के पति की युद्ध के मोर्चे पर मृत्यु की सूचना मिली। वह बहादुरी से लड़ता हुआ मारा गया था।

उस शोक की वेला में भी लोग नंदन भट्ट की भविष्यवाणी की बात करने लगे। सभी लोगों के बीच उसकी चर्चा थी। लोग उसे देखने के लिए इच्छुक हो उठे। सब नंदन भट्ट की खोज करने लगे।

संयोगवश, उस देश का राजा सपरिवार नंदन भट्ट के इलाके से गुजरा। नगर की शोभा को देखकर, उसने कुछ दिन वहीं पड़ाव डालने का निश्चय किया।

राजा के निश्चय को जानकर पूरे इलाके में उसके रुकने की घोषणा करवा दी गई। सभी नगर व ग्रामवासी राजा की सेवा में दूध, दही, घी, फल आदि भेंट करने आने लगे।

राजा से मिलने की इच्छा उस सैनिक विधवा की भी थी। पर बेचारी क्या भेंट करती ? उसने कहीं से दूध व किसी से चावल लेकर थोड़ी-सी खीर बनाई। एक कटोरे में सजाकर, राजा से भेंट करने चल दी। उसने सोचा था कि इसी बहाने, वह राजा को अपनी परेशानियों के बारे में भी बताएगी।

परेशान व घबराई-सी वह राजा के खेमे के पास पहुंची। उसके हाथ में छोटा-सा कटोरा देखकर, उसके परिचितों ने व्यंग्य कसा—"देखो-देखो ! राजमाता, क्या भेंट लाई हैं !"

उसको देखकर कुछ उपस्थित बालकों ने भी ढिठाई की और चिल्लाए—"राजमाता ! राजमाता..."

बच्चों के चिल्लाने की आवाज सुनकर, राजा चौकन्ना हुआ। उसने गुस्से में मंत्री से पूछा—"मंत्री जी, इस सब का क्या मतलब है ? गड़बड़ी करने वालों को तुरंत मेरे सामने पेश करो।"

राजा की सभा में सन्नाटा छा गया। बेचारी विधवा की आंखों से, अपमान के कारण आंसू बहने लगे।

थोड़ी देर में मंत्री ने उपस्थित लोगों से जानकारी हासिल की। राजा को नंदन भट्ट की भविष्यवाणी व महिला के दुर्भाग्य की कथा सुनाई। राजा भावुक हो उठा। उसने महिला को एक आसन पर बिठाया। सभी उपस्थित लोगों से कहा—"हमारे देश को ऐसी वीर महिलाओं पर गर्व है। मुझे दुःख है कि शहीद सिपाहियों की विधवाओं को हमारे देश में इतना कष्ट सहना पड़ रहा है।

"मैं घोषणा करता हूं, इस महिला के साथ-साथ

देश के सभी शहीद सिपाहियों के आश्रितों को राज्य की ओर से वजीफा दिया जाएगा।''

इसी के साथ राजा ने महिला की भेंट स्वीकार कर, उसको एक हजार स्वर्ण मुद्राएं भेंट कीं।

चारों ओर राजा के जय-जयकार की आवाजें गूंजने लगीं। राजा ने प्रसन्नता पूर्वक महिला द्वारा भेंट खीर बड़े स्वाद के साथ ग्रहण कर ली।

राजा अभी विचारमग्न ही था कि भीड़ में से एक महिला चिल्लाई। वह विधवा की पड़ोसिन थी। उसी ने विधवा को बासमती चावल उधार दिए थे। विधवा को प्राप्त एक हजार स्वर्ण मुद्राओं को देख, उसके मन में ईर्ष्या जाग उठी। उसने राजा से शिकायत की—''राजन्, यह विधवा बहुत दुष्ट है। पहले इसने अपने पति को खा लिया। अब इसने अपने दूध से खीर बनाकर आपको भेंट की है। इसने आपको भी भ्रष्ट कर दिया है।''

उसको आशा थी कि राजा यह सुन क्रोधित हो उठेगा। उसकी बातें सुनकर पूरी सभा में खलबली मच गई। सभी किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत हो उठे।

महिला की आंखों से अनवरत बहते आंसुओं को देखकर, राजा सचाई समझ गया। वह अपने आसन से उठा। महिला के पास जाकर बोला—''हे माता, अपने दूध से सींचकर आपने मुझे अपना ऋणी बना दिया है। मैं आजीवन आपका आभारी रहूंगा। आप मुझे आशीर्वाद से भी अनुग्रहीत करें।''

फिर राजा ने महिला के पांव छूकर कहा—''मां, मुझे आशीर्वाद दीजिए।''

राजा महिला को अपने साथ राजमहल ले गया। उसे राजमाता का स्थान दिया। राजा ने नंदन भट्ट की खोज में चारों दिशाओं में अपने दूत भेजे। नंदन भट्ट की खबर मिल जाने पर राजा स्वयं उसके पास गया। बोला—''गुरुवर, आप राज ज्योतिषी का पद संभालकर राज्य को कृतार्थ करें।''

राजा के आग्रह को स्वीकारकर, नंदन भट्ट ने राज ज्योतिषी का पद ग्रहण कर लिया। ●

पहला कदम

—संतोषकुमार शर्मा

एक समय की बात है, जब विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए ऋषियों के आश्रमों में जाया करते थे। उसी समय शलभाचार्य नामक के एक ऋषि थे।

एक बार उनके आश्रम में तीन बालक ज्ञान पाने के लिए आए। वे तीनों ही काफी बुद्धिमान लग रहे थे। ऋषि ने तीनों बालकों की परीक्षा लेने का निश्चय किया। सुबह ऋषि ने तीनों बालकों को अपने पास बुलाया। कहा—'' मेरे हाथ में यह जो फल देख रहे हो, यह इस आश्रम के चारों ओर एक कोस भूमि के दायरे में मिलता है। तुम तीनों में से जो बालक इस जैसे फल को दो दिन के भीतर मुझ तक पहुंचाएगा, वही मेरा शिष्य बनेगा।''

यह सुनकर तीनों बालक,उस फल की तलाश में आश्रम से रवाना हो गए।

दो दिन बाद ऋषि ने उन तीनों बालकों को फिर बुलाया और उस फल के बारे में पूछा। पहले दो बालकों ने जवाब दिया कि उन्हें वह फल एक कोस की दूरी तक नहीं मिला। मगर तीसरे बालक ने कुछ और ही जवाब दिया। बोला—''गुरुदेव, यह फल तो आपके आश्रम के बगीचे में ही मिल गया।''

यह सुनकर ऋषि ने पहले दोनों बालकों से पूछा—''क्या तुम दोनों ने यह फल हमारे बगीचे में नहीं देखा ?''

वे बोले—''नहीं गुरुदेव, आपने कहा था कि यह फल एक कोस भूमि के दायरे में होगा। हमने सोचा कि शायद यह फल बहुत दूर मिलेगा।''

तीसरा बालक बोला—''गुरुदेव, किसी भी लक्ष्य को पाने की यात्रा पहले कदम से शुरू होती है। इसलिए मैंने सबसे पहले इस आश्रम के चारों ओर इस फल को तलाश किया।''

सुनकर शलभाचार्य मुसकरा उठे। उन्होंने इसी बालक को अपना शिष्य बनाया और विद्या का दान दिया। ●

नंदन एलबम
कपिल देव
गेंदबाजी में विश्व-रिकार्ड बनाया
POWER
कपिल देव

सुर खो गया

— कविराज ओमप्रकाश

सभा भवन तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

महाराज राघवेंद्र सिंह ने मोतियों की माला देवसेन के गले में डाल दी। बोले—"आपने रस की ऐसी धारा बहाई कि मैं सब कुछ भूल गया। अद्‌भुत गायक हैं आप!"

देवसेन ने कृतज्ञ भाव से हाथ जोड़ दिए। सबकी नजरें उन पर टिकी थीं। सचमुच बहुत अच्छा गाते थे देवसेन। राघवेंद्र सिंह के जन्म दिन के अवसर पर राजमहल में विशेष संगीत समारोह हुआ था। उसमें दूर-दूर से संगीतकार आए थे। एक से एक बड़े कलाकार। लेकिन देवसेन ने मात दे दी थी।

महाराज राघवेंद्र सिंह ने घोषणा की—'मैं देवसेन को राज गायक का पद देता हूं। यह हमारे राज्य की शोभा हैं।' सभा भवन में स्वर गूंजने लगे—"महाराजा राघवेंद्र सिंह की जय।"

देवसेन राजकीय अतिथिशाला में ठहरे हुए थे। वहां भी प्रशंसकों की भीड़ उन्हें घेरे हुए थी। द्वार पर तैनात सैनिक सबको जाने को कह रहे थे। अब अंदर आरामदेह शय्या पर लेटे देवसेन सोच रहे थे—'आज जीवन सफल हुआ।' रह-रहकर सभा भवन का दृश्य आंखों के सामने तैर जाता। उनकी अंगुलियां मोतियों की बहुमूल्य माला से खेलने लगतीं।

एकाएक देवसेन का ध्यान भंग हुआ। सेवक सामने खड़ा था। उसने कहा—"बाहर एक आदमी आया है। अपना नाम विजय बताता है। वह तुरंत आपसे मिलना चाहता है। हम लोग उससे चले जाने को कह रहे हैं, पर वह नहीं मानता। कहता है कि आपसे बिना मिले नहीं जाएगा।"

विजय का नाम सुनकर देवसेन को जैसे कुछ याद आया। उन्होंने कहा—"अंदर भेज दो।"

एक व्यक्ति अंदर आया। वह विजय था, उनका गुरुभाई। उन दोनों ने एक साथ गुरु पूर्णदेव से संगीत की शिक्षा ली थी। देवसेन को बहुत ख्याति मिली, पर विजय का नाम उतना आगे न आ सका। और अब तो देवसेन राज गायक बन गए थे।

विजय ने पूछा—"कब चलेंगे मेरे साथ ?"

"कहां जाना है हमें ?"—देवसेन ने आश्चर्य से विजय की ओर देखा।

"इतनी जल्दी भूल गए ! मां ललिता बीमार हैं। आपने कहा था न कि उनके दर्शन करने चलेंगे।"—विजय बोला।

मां ललिता अर्थात गुरु पूर्णदेव की धर्मपत्नी। पूर्णदेव अब नहीं थे। ललिता अपना बुढ़ापा छोटे से गांव में बिता रही थीं। पूर्णदेव की मृत्यु के बाद संगीतशाला भी बंद हो चुकी थी। घर में और कोई था नहीं। बस, विजय ही वहां रहकर मां ललिता की देखभाल कर रहा था।

देवसेन भूले नहीं थे, लेकिन इतनी दूर निपट देहात में जाना ! वह सोच में पड़ गए। फिर मना कर दिया।

विजय के चेहरे पर गहरी निराशा का भाव था। उसने ऐसे रूखे व्यवहार की कल्पना भी नहीं की थी। कुछ देर वहां खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे बाहर चला गया। कक्ष में उसका स्वर गूंजता रह गया–"मां, अंतिम बार आपसे एक भजन सुनना चाहती थीं। बार-बार आपका ही नाम लेती हैं।"

विजय चला गया, पर देवसेन आराम से न बैठ सके। मन ही मन कहते रहे—"अब मैं इस तरह हर कहीं नहीं जा सकता। क्या विजय इतना भी नहीं समझता ?"

प्रातः काल राजभवन से संदेश आया कि संध्या समय विशेष संगीत समारोह है। देवसेन पूरी तैयारी करके आएं। राजा ने कई विशेष मेहमानों को बुला रखा था। देवसेन अभ्यास में जुट गए। संध्या समय पालकी में बैठकर दरबार की ओर चले, तो विजय द्वार पर फिर खड़ा नजर आया।

विजय ने क्या कहा, इसे देवसेन नहीं सुन पाए। तब तक पालकी आगे बढ़ गई थी। दरबार में आज भी काफी लोग उपस्थित थे जो केवल देवसेन को सुनने आए थे। आज कोई प्रतियोगिता नहीं थी। सबके होंठों पर देवसेन का ही नाम था।

देवसेन को देखकर महाराज राघवेंद्र सिंह मुसकराए। देवसेन ने हाथ जोड़कर सिर झुका दिया। कुछ समय बाद गायन आरंभ हुआ। देवसेन ने जमकर अभ्यास किया था। सभा भवन में शांति थी। एकाएक देवसेन की आंखों के सामने एक दृश्य तैर गया—गुरुपत्नी ललिता शय्या पर लेटी हैं। वह जोर-जोर से कराह रही हैं। देवसेन के कानों में ललिता मां की कराहें गूंजने लगीं। फिर उनका स्वर अवरुद्ध हो गया।

राघवेंद्र सिंह ने कहा—"देवसेन, यह क्या हो रहा है। क्या आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है ?"

देवसेन लज्जित हुए। उन्होंने फिर से गायन आरंभ किया। लेकिन यह क्या ! फिर वही दृश्य उभर आया। और उनका कंठ फिर से अवरुद्ध हो गया।

सभा भवन में सन्नाटा छा गया। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। देवसेन गाना आरंभ करते और उनका स्वर विकृत हो जाता। मुंह से अजीब-सी आवाज निकलने लगती। जैसे कोई कराह रहा हो।

महाराज के माथे पर बल पड़ गए। आंखों में क्रोध झलकने लगा। उन्होंने मित्रों को विशेष रूप से आमंत्रित किया था और यह देवसेन . . .

एकाएक राघवेंद्र सिंह चिल्ला उठे—"बंद

करो !'' और उठकर सभा भवन से बाहर चले गए। फिर तो एक-एक करके सारे मेहमान चले गए।

जब देवसेन खड़े हुए, तो उनका शरीर कांप रहा था। शरीर से पसीना बह रहा था और आंखों से आंसू। वह हारे हुए योद्धा की तरह अतिथिशाला में चले आए। लेकिन अंदर न जा सके। राज सैनिकों ने देवसेन को बाहर ही रोक लिया। उन्हें राजा का आदेश सुना दिया गया—''इसी समय यहां से चले जाओ। फिर कभी मत आना।''

''किंतु . . .''—देवसेन ने कुछ पूछना चाहा, पर बात पूरी न कर सके। वहीं गिरकर बेहोश हो गए।

अचानक माथे पर किसी का स्पर्श पाकर देवसेन की आंखें खुलीं। देखा, सब तरफ अंधेरा है। पास में विजय बैठा है। वह उठने का प्रयास करने लगे, तो विजय ने कहा—''मैं यहां आया, तो देखा आप मूर्च्छित पड़े हैं और आस पास कोई नहीं है। क्या हुआ ? आप तो संगीत समारोह में गए थे।''

देवसेन जैसे-तैसे विजय का हाथ पकड़कर उठ खड़े हुए। उनकी देह डगमगा रही थी। धीरे से बोले—''चलो।''

''कहां ?''—विजय ने अचरज से पूछा।

''वहीं।''—देवसेन के होंठों से निकला। आंखों के सामने मृत्यु शय्या पर पड़ी गुरुपत्नी का चेहरा तैर गया। कानों में उनकी कराह गूंजने लगी। एक बार पलटकर पीछे देखा—अंधेरे में जगमगाते राजमहल की ओर, फिर आगे चल दिए। विजय उन्हें थामे हुए था। देवसेन को पता था, उन्हें कहां जाना है। ●

सपना देखा

—डॉ. देशबंधु शाहजहांपुरी

ललितपुर के राजा शीतलाप्रसाद बड़े ही दयालु थे। सभी से मृदु वाणी बोलते। क्रोध करना तो जैसे उन्हें आता ही नहीं था। उनका छोटा-सा परिवार था। बेटी शालिनी, बेटा चंदन और स्वयं राजा-रानी, बस। चंदन का जन्म काफी लम्बे समय के बाद हुआ था। उसके जन्म दिन मनाने की इस बार बड़े जोर-शोर से तैयारियां चल रही थीं।

चंदन की ननिहाल से उसके नाना-नानी ढेर सारे उपहार लेकर आज ही ललितपुर आए थे। दोपहर के भोजन के बाद चंदन के नाना वीरसिंह एवं राजा शीतलाप्रसाद शिकार पर निकले।

काफी देर जंगल में घूमने के बाद अचानक वीरसिंह ने एक नन्हे से हिरन के बच्चे को देखा। वह अपनी हिरनी मां के साथ खेल रहा था। अभी वीरसिंह निशाना लगाने ही वाले थे कि शीतलाप्रसाद ने उन्हें रोकते हुए कहा—''इसे मत मारिए। कितना प्यारा बच्चा है ! इसको पकड़कर महल में ले चलेंगे। चंदन के लिए यह अद्‌भुत उपहार होगा। बड़ा होकर वह इसके साथ खूब खेलेगा।''

जिस समय सिपाही उस बच्चे को पकड़कर ले जाने लगे, राजा शीतलाप्रसाद ने देखा कि बच्चे की हिरनी मां अपनी आंखों में आंसू भरे कुछ दूर तक पीछे-पीछे चली। फिर अचानक पीछे मुड़कर तेजी से भागकर जंगल में गुम हो गई। हिरनी के इस व्यवहार से शीतलाप्रसाद को बहुत आश्चर्य हुआ। महल में

पहुंचकर भी वह इस घटना को भुला नहीं पाए।

रात्रि भोज के बाद वह अपने शयन कक्ष में गए। अचानक उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि वही हिरनी उनके पास खड़ी है। वह कुछ क्षण उस हिरनी को एकटक देखते रहे। हिरनी ने भी राजा को देखा और फिर रानी के पलंग की ओर बढ़ गई।

राजा की समझ में नहीं आ रहा था कि हिरनी रानी के पलंग के पास क्या करने गई है। उन्होंने धीरे से उठकर देखा। हिरनी ने चंदन को अपने मुंह में दबाया और दरवाजे की ओर भाग चली। यह देखकर राजा की ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। एक पल को तो वह भौंचक्के होकर पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े रहे। अचानक उन्होंने अपनी कटार उठाई और हिरनी के पीछे भाग चले।

"मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा। मेरे दुधमुंहे बच्चे को कहां लेकर भाग रही है दुष्ट ... !" —कहते हुए वह उसके पीछे बेतहाशा दौड़ रहे थे। दौड़ते-दौड़ते उनकी सांस फूलने लगी। अब उनसे दौड़ा नहीं जा रहा था। अचानक कुछ दूरी पर हिरनी ने चंदन को जमीन पर पटक दिया। फिर मनुष्य की आवाज में बोली—"दुष्ट मैं नहीं, तू है राजा ! तूने भी तो मेरे दुधमुंहे बच्चे को मुझसे अलग करके कैद कर रखा है। जिस तरह तुझे अपना बच्चा प्यारा है, वैसे ही मुझे भी मेरा बच्चा प्यारा है। मैं कितना रोई थी, जब तेरे सिपाही उसे पकड़कर ले जा रहे थे। मैंने तेरे पीछे-पीछे चलकर तुझसे उसे छोड़ देने की विनती की थी, लेकिन तू ने मेरे आंसुओं को देखकर भी अनदेखा कर दिया।" कहते-कहते हिरनी चुप हो गई। चंदन जोर-जोर से रो रहा था। राजा ने उसे उठाकर अपने गले से लगाना चाहा, तभी अचानक उन्हें किसी ने पकड़कर जोर से हिलाया। पीछे मुड़कर देखा, तो रानी थी।

तभी अचानक जंगल का दृश्य खत्म हो गया था। वह अपनी चारपाई पर लेटे थे। उनका सारा बदन पसीने से तर था। उनके चारों ओर उनके अंगरक्षक खड़े थे। उनका ध्यान चंदन की आवाज पर गया। वह अभी भी रो रहा था।

"यह रो क्यों रहा है ?" — उन्होंने पूछा।

"यह तो भूख से रो रहा है, लेकिन आप अभी किसको मार डालने की बात कर रहे थे ? कौन दुष्ट थी ?"—रानी घबराए हुए स्वर में बोलीं।

राजा को समझ में आ गया कि अभी वह जो कुछ भी देख रहे थे, वह एक सपना ही था। उन्होंने सपने की सारी घटना रानी को सुनाकर कहा—"मां की ममता हमेशा अपने बच्चे के साथ रहती है, चाहे वह जानवर ही क्यों न हो। यह बात मुझे इस सपने ने समझाई है। मैं कल सुबह ही उस हिरनी के बच्चे को जंगल में छोड़ने जाऊंगा।"

दूसरे दिन सुबह राजा अपने सिपाहियों के साथ हिरनी के बच्चे को छोड़ने गए। उन्होंने देखा कि हिरनी आज भी उसी स्थान पर बैठी है, जहां से कल उसको, उसके बच्चे से अलग किया गया था। उसकी आंखों से अभी भी आंसुओं की अविरल धारा बह रही थी।

जैसे ही सिपाहियों ने उस मृगछौने को छोड़ा, हिरनी तुरंत उठकर खड़ी हो गई। पास आते बच्चे को देखकर वह तेजी से उसकी ओर दौड़ पड़ी। उसने अपनी जीभ से उसको बेतहाशा चाटना शुरू कर दिया। अचानक उसने रुककर राजा की ओर कृतज्ञता भरी दृष्टि से देखा और फिर बच्चे के साथ जंगल में खो गई। राजा अपने महल की ओर लौट पड़े। ●

तीन वचन

— डा. शिवकुमार 'निडर'

पटनीगिर राज्य पर राजा धनसिंह का शासन था। वह शूरवीर होने पर भी धूर्त और हठी था। उसे अपनी प्रशंसा बहुत अच्छी लगती थी। इसलिए चाटुकार उसे हर समय घेरे रहते थे।

उसी राज्य के उत्तरी भाग में एक छोटा-सा गांव था। वहां रामधन नाम के एक पंडित अपनी पत्नी और पंद्रह वर्षीय पुत्र वल्लभ के साथ रहा करते थे। वह गांव के अनपढ़ बच्चों को शिक्षा दिया करते थे। दूर दराज के विद्वान और ग्रामीण लोग उनसे अपनी समस्याओं का हल पूछने आते और संतुष्ट होकर जाया करते थे। इसलिए उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। बात उसी समय की है। पटनीगिर राज्य पर अकाल के बादल छाने लगे। नदियां-कुएं, तालाब सूखने लगे। हरी-भरी फसलें नष्ट हो गईं।

आखिर में गांव के लोग मिलकर रामधन के पास पहुंचे और अपनी समस्या के निवारण का उपाय पूछने लगे। उनकी समस्या को राजा के पास पहुंचाने की बात सुनकर वह चिंतित हो गए। उन्हें विश्वास था कि धूर्त राजा उन्हें उनकी बात सुने बिना ही फांसी पर लटका देगा।

काफी सोच-विचार करने के बाद कुछ लोगों को साथ ले, वह राजा को अपना दुःख-दर्द सुनाने चल दिए।

राज दरबार में पहुंचकर रामधन ने राजा को सारी बात कह सुनाई। राजा कुछ कह पाता, उससे पहले ही राजा का मंत्री मधुसूदन बोला— "महाराज, ये सब झूठे और मक्कार लोग हैं। देश में कहीं कोई अकाल नहीं, सब ओर खुशहाली है। इन सब को झूठ और मक्कारी के लिए आप तुरंत मृत्यु दंड दें।"

मृत्यु दंड की बात सुनते ही साथ आए लोग धीरे-धीरे वहां से खिसकने लगे। केवल रामधन ही राजा के सामने खड़े रह गए। राजा ने बिना कुछ सोचे-समझे उन्हें मृत्यु दंड सुना दिया।

दूसरे दिन फांसी दिए जाने से पहले रामधन से कहा गया कि वह तीन वचन मांगे। किंतु ये वचन सिर्फ राजा की भलाई के लिए होने चाहिएं। वह थोड़ी देर सोचते रहे, मगर कुछ भी न मांग सके। अंत में उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। राजा मुसकराता हुआ अपने महल चला गया। जैसे ही यह समाचार रामधन की पत्नी को मिला, वह दुःख के मारे बेहोश हो गई। थोड़ी देर बाद उसका देहांत हो गया।

वल्लभ अपने माता-पिता की असमय मृत्यु का कारण राजा को मानते हुए आंसू बहाने लगा। आखिर मन में दृढ़ संकल्प कर दूसरे दिन वह राजधानी की तरफ चल दिया। वह सोचता जा रहा था— 'या तो राजा को सही मार्ग पर ले आऊंगा, अन्यथा मैं भी अपने प्राण दे दूंगा।'

राजधानी पहुंचकर उसने किसी तरह राजदरबार में प्रवेश पा लिया। राजा को बिना प्रणाम किए ही एक सभासद की खाली कुर्सी पर जाकर बैठ गया। जैसे ही राजा की नजर उस पर पहुंची, वह क्रोध से आगबबूला हो गया। सिपाहियों ने राजा के संकेत पर उसे बंदी बना लिया। राजा ने उससे बहुत कुछ पूछा, मगर उसके मुंह से एक शब्द न निकला। इस पर राजा ने क्रोधित हो, उसे मृत्यु दंड सुना दिया।

दूसरे दिन उसे फांसी देने से पहले उससे सिर्फ

राजा के लिए तीन वचन मांगने को कहा। सुनते ही वल्लभ बड़ी निडरता के साथ गम्भीर और ओजपूर्ण वाणी में बोला— "महाशय, मैं तीन वचन सिर्फ आपके लिए मांगूंगा। पर मुझे संदेह है कि आप मेरे वचनों को पूरा करेंगे भी या नहीं।"

सुनकर राजा की आंखें क्रोध से लाल हो गईं। बोला— "बालक, हम बहुत हठी हैं। हम तुम्हें वचन देते हैं कि तुम्हारे तीनों वचनों को अवश्य पूरा करेंगे। मगर वे वचन केवल हमारे लिए ही होने चाहिएं।"

वल्लभ मुसकराते हुए बोला— "महाराज, मेरे तीन वचन पूरे हो जाने के बाद ही मुझे मृत्यु दंड दिया जाए। मेरा पहला वचन है कि आप एक दिन और एक रात बिना कुछ खाए ही, भूखे रहकर बिताएं। दूसरा वचन मैं यह मांगता हूं कि आप एक दिन और एक रात बिना पानी पिए ही गुजारें। मेरा तीसरा वचन यह है कि आप तीसरी रात बिलकुल जागते हुए बिताएं। एक पल के लिए भी न सोएं। बस, इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए।" वचन सुनकर राजा और सभी दरबारी आश्चर्य से उसे देखने लगे। तीनों वचन सिर्फ राजा के लिए ही मांगे गए थे। राजा सोच में पड़ गया।

वल्लभ का प्राण दंड रोककर राजा ने उसे अपने वचन पूरे करने का विश्वास दिलाया। दूसरे दिन सभासदों के बहुत मना करने पर भी राजा अपनी जिद पर अड़ा, वल्लभ के वचन पूरे करने में लग गया। दोपहर होते ही राजा भूख से तड़पने लगा। उसका मन किसी काम में नहीं लग रहा था। किसी तरह शाम हुई। पूरी रात भूख से परेशान हो, राजा को नींद न आई। उसे अहसास हुआ कि भूख की तड़पन क्या होती है। सुबह होते ही वह भोजन पर टूट पड़ा, मगर उस दिन पानी न पीने का वचन था। ज्यों-ज्यों दिन बढ़ा, उसी तरह प्यास बढ़ती गई। होंठ और जीभ पूरी तरह सूखने लगे। उसे बुरी तरह चक्कर आने लगे। अब वह खड़ा रहने में भी असमर्थ था। आखिर शाम होते-होते उसने बिस्तर पकड़ लिया। वह पूरी रात तड़प-तड़प कर गुजारी।

उस दिन उसे मालूम हुआ कि भूख-प्यास आदमी की कितनी बड़ी आवश्यकता है। वह भूख-प्यास की तकलीफ अच्छी तरह जान चुका था। तीसरी रात उसने जबरन जागते हुए बिताई। वह पूरी रात यही सोचता रहा कि इस बच्चे ने मुझ से ऐसे वचन क्यों मांगे ? सुबह होते ही वह अपने सभासदों को साथ ले, वल्लभ के पास पहुंचा और बड़ी नम्रता से बोला— "हे बालक, तुम निश्चय ही बुद्धिमान हो। मुझे सच बताओ कि तुमने ये तीन वचन मुझ से किसलिए मांगे थे ?"

वल्लभ बोला— "महाराज, मैंने अपनी कहानी सुनाने के लिए आपके मृत्युदंड को स्वीकार किया था। मैं जानता था कि एक दिन भूखे और एक दिन प्यासे रहने के बाद जब तीसरी रात आप जागेंगे, तो आपको रह-रह कर मेरा ध्यान अवश्य आएगा। आप जानना चाहेंगे कि मैंने आपसे ये वचन क्यों मांगे ? और वही हुआ जो मैं चाहता था।

"मैं पंडित रामधन का इकलौता पुत्र वल्लभ हूं। पिता की सच बात को आपने सुना नहीं और उन्हें मृत्यु दंड दे दिया। उनके शोक में मेरी माता भी चल बसी। महाराज, आज मैं भी वही कहने जा रहा हूं जो मेरे पिता आपसे कहना चाहते थे। आप भूख और प्यास की तकलीफ को अच्छी तरह जान चुके हैं। देश में भीषण अकाल पड़ रहा है। मनुष्य, पशु-पक्षी भूख-प्यास से मर रहे हैं। कुछ अन्न जो गरीबों के पास बाकी था, उसे आपके कारिंदे जबरन 'राज्य कर' के नाम पर हमसे छीन लाए हैं। हे राजन, मुझे मृत्यु दंड देने के तुरंत बाद आप भूख-प्यास से तड़पती अपनी प्रजा की रक्षा करें। यही मेरी आपसे प्रार्थना है।"

सुनकर राजा सन्न रह गया। उसने दौड़कर वल्लभ को अपने सीने से लगा लिया। उसके बंधन अपने हाथों से खोलते हुए बोला— "हे पुत्र, तुम धन्य हो। तुमने मेरी आंखें खोल दीं।"

वल्लभ ने राजा के चरण स्पर्श किए। राजा ने फिर उसे अपनी छाती से लगा लिया। उसी दिन से राजा प्रजा की भलाई में जुट गया। ●
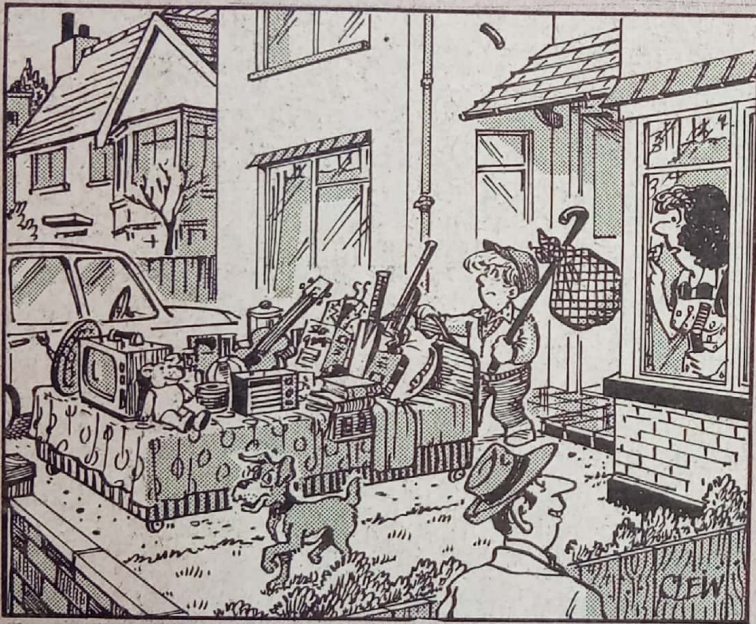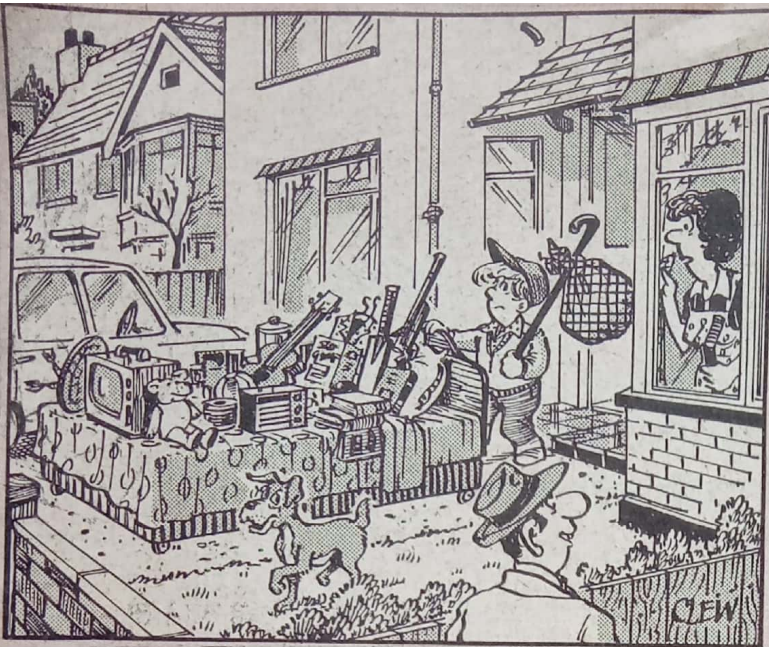
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय : **१५ मिनट ।**

कहानी लिखो : १२५

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे **१५ अप्रैल** तक **कहानी लिखो-१२५, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—११०००१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : जून '९४ अंक

चित्र - पहेली : १२५

परी लोक : इस विषय पर चटख रंगों से एक चित्र बनाइए । चित्र के पीछे अपना **नाम, आयु** और **पता** साफ-साफ लिखिए । चित्र **१५ अप्रैल '९४** तक **नंदन कार्यालय** में भेज दीजिए । चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : जुलाई '९४ अंक

पारस मणि

—डॉ. रामकुमार तिवारी

किसुनपुर से पांच किलोमीटर उत्तर में एक छोटा-सा गांव है— बोडेया। यहां लक्ष्मीनारायण नामक एक ब्राह्मण रहा करते थे। वह कृष्ण के परम भक्त थे। अतः उन्होंने कृष्णजी के एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर आज भी मदनमोहन मंदिर के नाम से विख्यात है।

लक्ष्मीनारायण प्रतिदिन मंदिर में पूजा किया करते। अपनी पत्नी और दो पुत्रों के साथ जीवन आराम से कट रहा था। वह उदार प्रकृति के थे। मंदिर में जो कुछ भी दान-दक्षिणा मिलती थी, उसे जरूरतमंदों के बीच बांट दिया करते। मंदिर के नाम जो खेत थे, उनकी फसलों से मदनमोहन स्वामी का भोग भी लगता, लक्ष्मीनारायण की जीविका भी चलती।

उनकी उदारता की चर्चा इलाके भर में फैली हुई थी। राजा रघुनाथ शाही ने भी लक्ष्मीनारायण के बारे में सुना। एक दिन वह स्वयं बोडेया गांव जा पहुंचे। राजा को आया देख, लक्ष्मीनारायण काफी खुश हुए। उन्होंने राजा का भरपूर स्वागत-सत्कार किया।

सबसे पहले राजा को मंदिर से मदनमोहन स्वामी का प्रसाद दिया गया। बाद में ब्राह्मण एवं राजा ने एक साथ भोजन किया। राजा के लिए कोई विशेष तैयारी नहीं की गई थी।

भोजन की सादगी एवं ब्राह्मण की सरलता देखकर, राजा बहुत प्रसन्न हुए। जब तक राजा रुके, तब तक कई गरीब लोग लक्ष्मीनारायण से अन्न, वस्त्र एवं मुद्रा आदि लेकर चले गए।

राजा उनकी सेवा भावना देखकर मुग्ध हो गए। उन्होंने सोचा— 'जो काम राजा का था, वह काम तो मंदिर का यह पुजारी कर रहा है।' राजा ने प्रसन्न होकर लक्ष्मीनारायण से कहा— "हे ब्राह्मण श्रेष्ठ, आपकी उदारता, जनसेवा तथा त्यागमय जीवन देखकर मैं नतमस्तक हूं। आप मुझसे जो भी चाहें मांग सकते हैं। मैं अपना सर्वस्व आपके चरणों में अर्पित करता हूं। आपके बारे में जैसा सुना था, वैसा ही यहां आकर देखा।"

लक्ष्मीनारायण बोले— "राजन्, ईश्वर सम्पत्ति किसी भले काम के लिए ही प्रदान करता है। आप इसे मेरे चरणों में क्यों रखेंगे? क्या ही अच्छा होता कि मदनमोहन मंदिर की तरह एक राम मंदिर का भी निर्माण किया जाता।"

राजा को लक्ष्मीनारायण के विचार भा गए। उन्होंने वचन दिया कि राम मंदिर का निर्माण जल्दी ही प्रारम्भ हो जाएगा।

कहा जाता है, राजा जब बोडेया से लौटने लगे, तो लक्ष्मीनारायण ने राजा को काफी सोना दिया। आग्रह किया कि इस धन का उपयोग राम मंदिर के निर्माण में किया जाए।

लक्ष्मीनारायण के पास इतना सोना देखकर राजा अचंभित थे, किंतु वह क्या कह सकते थे! सोचा कि मंदिर में विभिन्न भक्तों द्वारा चढ़ाया गया सोना होगा।

सोना इतना ज्यादा था कि राजा का हाथी उसके भार से कई जगह बैठ-बैठ जाता था।

बोडेया से लौटते ही राजा ने चुटिया नामक स्थान में राम मंदिर का निर्माण प्रारंभ कर दिया। उन्होंने यह

काम अपने राजगुरु पंडित हरि ब्रह्मचारी को सौंपा। आखिर मंदिर बन कर तैयार हो गया।

समय बीतता गया। लक्ष्मीनारायण बूढ़े हो गए। उनके दोनों पुत्र बड़े हो गए। शादी-विवाह के बाद वे बाल बच्चेदार भी हो चुके थे। अपने पिता की तरह, अब वे दोनों प्रतिदिन मंदिर में मदनमोहन स्वामी की पूजा अर्चना करने लगे थे।

एक दिन किसी बात पर दोनों भाई झगड़ पड़े। और बात यहां तक बढ़ गई कि दोनों अलग-अलग रहने लगे। जिस घर में सदा शांति विराजती थी, आज वह घर अशांत हो गया। लक्ष्मीनारायण ने अपनी सारी सम्पत्ति दोनों बेटों में बांट दी। मगर दोनों भाई इस बंटवारे से संतुष्ट नहीं थे। उनकी नजर लक्ष्मीनारायण के पुराने संदूक पर थी जिसमें मंदिर में दान दिया गया सोना-चांदी रखा हुआ था। उस संदूक में सोने-चांदी से भी कीमती चीज थी— पारस मणि। दोनों उस पारस मणि को पाना चाहते थे।

लक्ष्मीनारायण ने अपने दोनों पुत्रों से साफ-साफ कह दिया था— "जो कुछ भी अपनी सम्पत्ति थी, वह तुम दोनों को दे दी। अब तुम लोग परिश्रम से अपनी

जीविका चलाओ। मंदिर से प्राप्त जितना सोना-चांदी संदूक में है, उसे मैं जरूरतमंदों को दिया करूंगा। पारस मणि नदी में स्नान करते समय मिली थी, इसे मेरे पास रहने दो। गरीब एवं जरूरतमंदों की इसके सहारे मदद करता रहूंगा। यह पारस मणि तो मदनमोहन जी का आशीर्वाद है।"

पारस मणि का स्पर्श होते ही, लोहा सोने में बदल जाता था। एक दिन नदी स्नान करते समय लक्ष्मीनारायण जी का लोटा इस पत्थर से छू गया। देखते ही देखते उनका लोटा सोने का हो गया। वह उस पत्थर को घर ले आए।

उसी रात मदनमोहन स्वामी ने स्वप्न में कहा—"ब्राह्मण, यह कोई मामूली पत्थर नहीं, पारस मणि है। इसे मैंने ही तुम्हें सौंपा है। इसे संभाल कर रखो। गरीबों तथा जरूरतमंदों की सेवा करो। इसका दुरुपयोग भूलकर भी मत करना। यदि ऐसा होने लगे, तो इसे पुनः नदी में फेंक देना। अन्यथा यह संसार घोर संकट में फंस जाएगा।"

तभी से लक्ष्मीनारायण उसे अपनी संदूकची में संभालकर रखे हुए थे। यह बात उनके पुत्र एवं धर्मपत्नी के सिवाय और कोई नहीं जानता था। वह समय-समय पर जरूरतमंदों की उसी पारस मणि की सहायता से मदद किया करते थे।

पारस मणि की ही मदद से उन्होंने राजा को काफी सोना प्रदान किया था। लेकिन दोनों बेटे पारस मणि को पाना चाहते थे।

बड़ा लड़का कहता था— "पारस मणि का हकदार मैं हूं क्योंकि मैं बड़ा भाई हूं।"

छोटा भाई कहता— "चाहे खून-खराबा क्यों न हो जाए, पारस मणि मैं ही लूंगा।"

लक्ष्मीनारायण को यह झगड़ा कतई पसंद नहीं था। उन्होंने मन ही मन कुछ निश्चय किया। एक दिन लक्ष्मीनारायण दोनों बेटों के साथ नदी स्नान करने गए। 'जय मदनमोहन स्वामी' कहकर, उन्होंने पारस मणि को नदी की बीच धारा में फेंक दिया। 'छपाक्' शब्द के साथ पारस मणि विलीन हो गई।
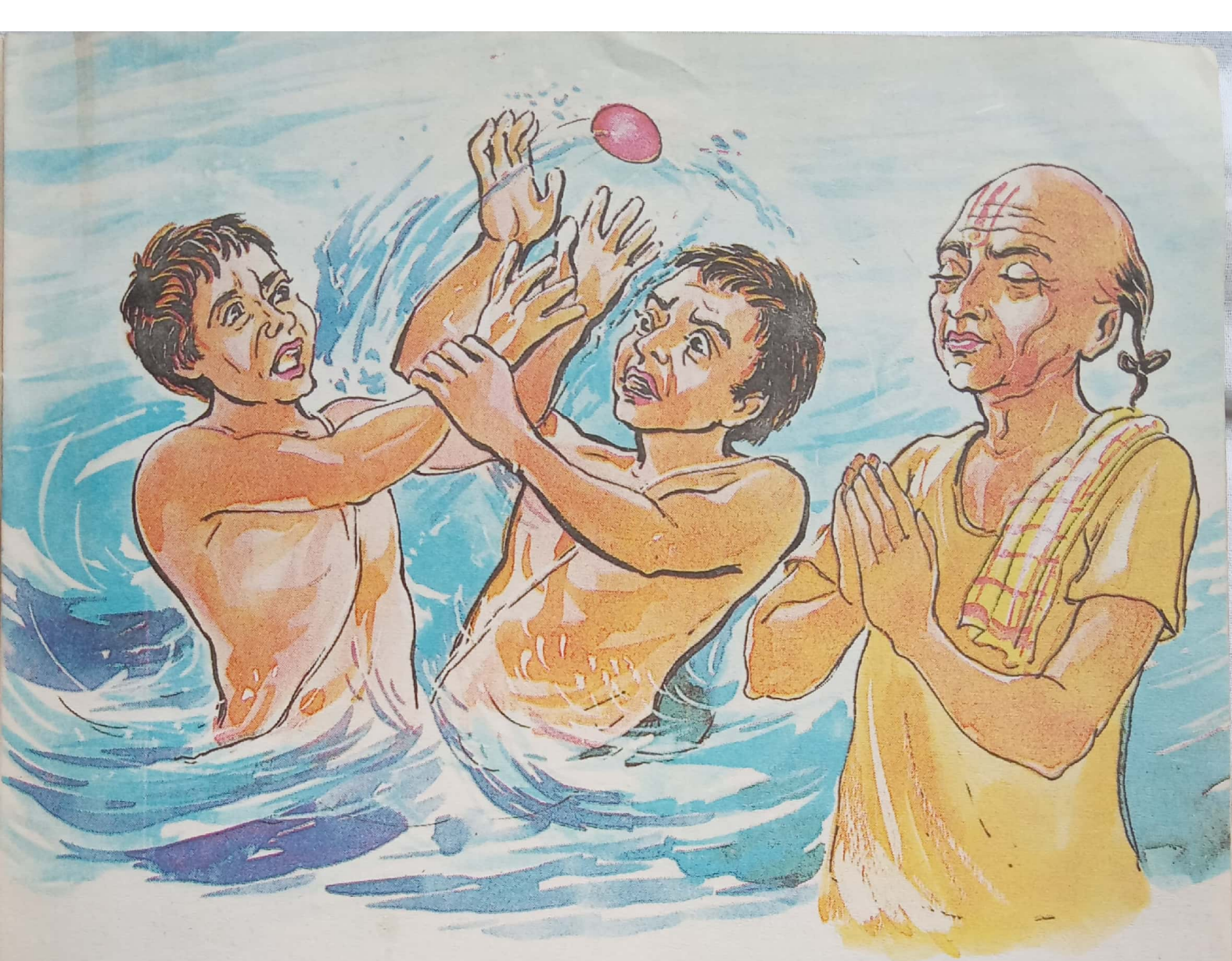
अब तीनों उसे ढूंढ़ने के लिए नदी में उतर गए। पिता तो अत्यंत वृद्ध थे, अतः वह किनारे पर ही खड़े रहे। किंतु दोनों भाई तैरते हुए उस स्थान तक पहुंच गए, जहां पारस मणि गिरी थी। वे दोनों जी-जान से डुबकी लगा-लगाकर उसे ढूंढ़ रहे थे।

लेकिन यह क्या ! घोर आश्चर्य ! वह पारस मणि तो लक्ष्मीनारायण के पैरों के पास पड़ी थी। उन्होंने उसे उठा लिया।

उनके दोनों पुत्र विस्मित थे। उनकी आंखों के सामने बीच धारा में फेंकी गई मणि पिता के पास कैसे आ पहुंची ? लक्ष्मीनारायण अभी कुछ बोलते कि अचानक दोनों भाई पारस मणि पर टूट पड़े। छीन-झपट करते-करते आपस में लड़ने लगे।

लक्ष्मीनारायण भौंचक खड़े थे। वह वृद्ध व्यक्ति थे, कर ही क्या सकते थे। इस लोभपूर्ण लड़ाई को देखकर, दुखी मन से मदनमोहन स्वामी की प्रार्थना करने लगे।

उधर दोनों की छीना-झपटी, खींचतान एवं उठा-पटक थमने का नाम नहीं ले रही थी। अचानक दोनों के हाथों से फिसलकर पारस मणि छप्प से नदी के किनारे पानी में गिर पड़ी। वे उसे पकड़ने के लिए झपटे। लेकिन पारस मणि वहां नहीं थी। उन दोनों की मुट्ठियों में केवल बालू भरी हुई थी।

दोनों की लड़ाई अचानक थम गई। दोनों ने अपने पिता जी की ओर देखा। वह मुसकरा रहे थे। शर्म से उनकी गर्दन झुक गई। लक्ष्मीनारायण ने दोनों की पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा— ''यही होना था। जो वस्तु तुम्हारी नहीं, उसको अधिकार में लेने का प्रयत्न ही व्यर्थ है।''

●

भारत के संगीतकार

भीमसेन जोशी— हिन्दुस्तानी संगीत

गिरिजा देवी— हिन्दुस्तानी संगीत
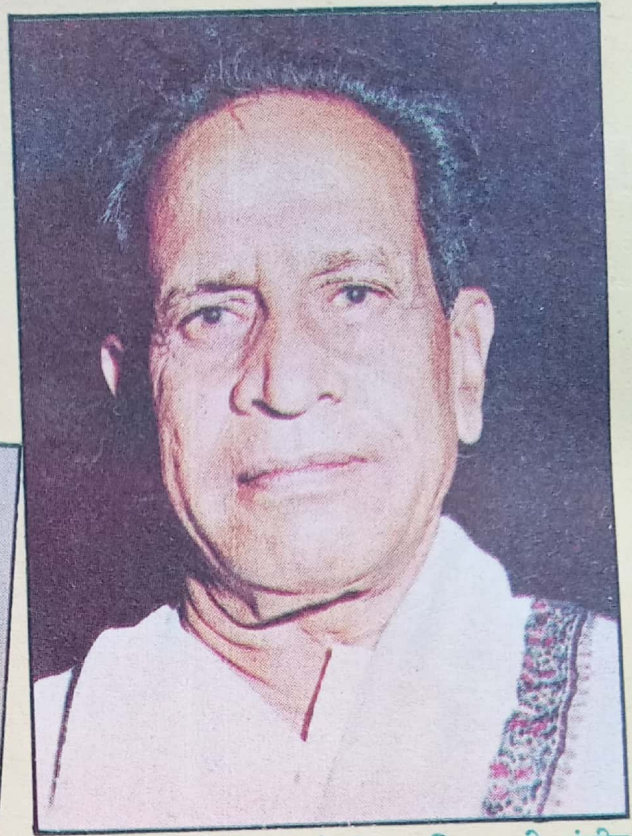
अमजद अली— सरोद

< हरिप्रसाद चौरसिया— बांसुरी
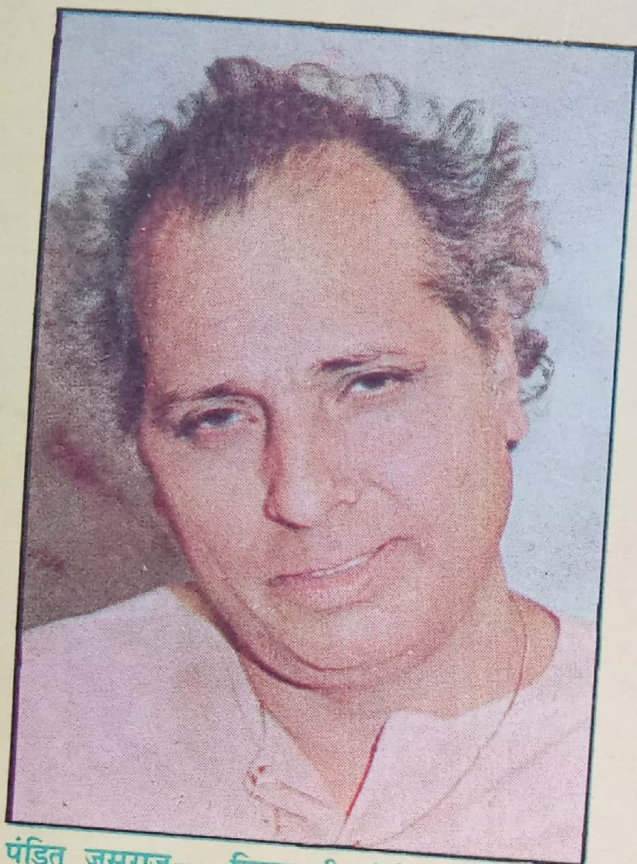
पंडित जसराज— हिन्दुस्तानी संगीत

भूपेन हजारिका—लोक संगीत— असम
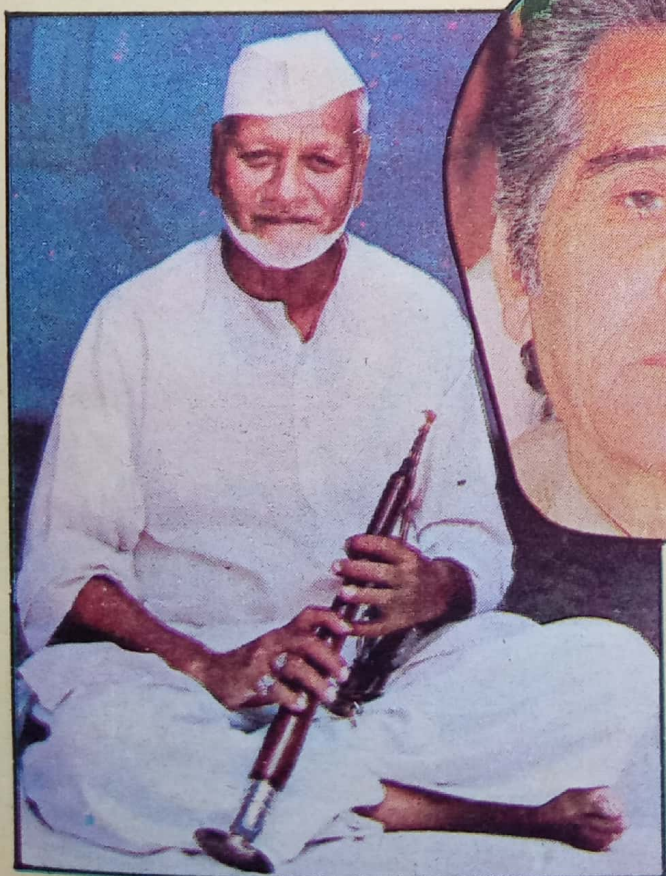
< उमाशंकर मिश्रा—सितार

बिस्मिल्ला खां—शहनाई
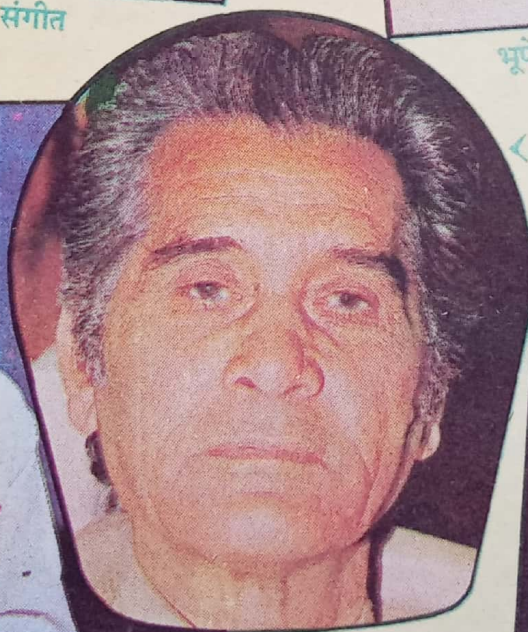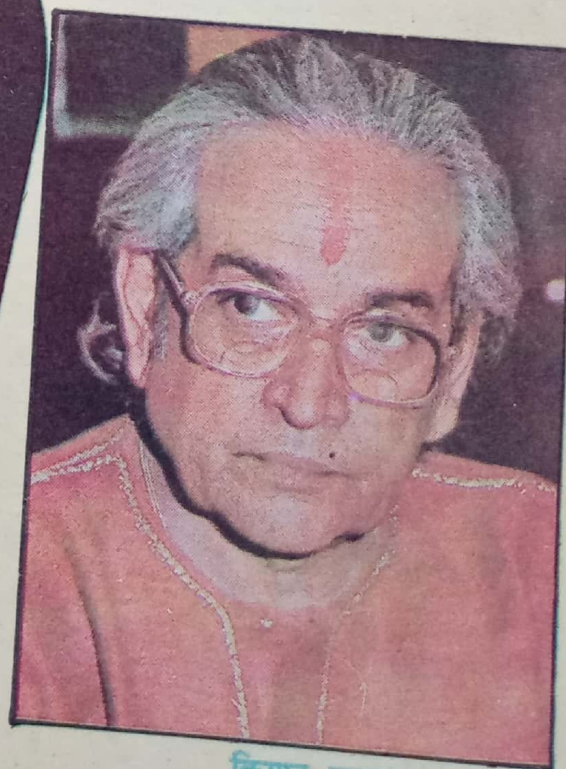
किशन महाराज— तबला

सौजन्य : संगीत नाटक अकादमी

विश्व की महान कृतियां : स्वीडन

खुशी का दिन

—एस्ट्रिड लिंडग्रेन

तूफानी रात थी । बिजली कड़क-कड़ककर जमीन को छूने की कोशिश कर रही थी। बादल भी गड़गड़ाकर साथ दे रहे थे। तभी एक जोर की हलचल और गड़गड़ाहट हुई । पहाड़ी के शिखर पर बना पुराना किला बीचोंबीच से दो टुकड़ों में बंट गया । उसके दो भागों के बीच अब थी कोई ६ फीट चौड़ी और न जाने कितनी गहरी खाई ।

किले में मैट परिवार बहुत वर्षों से रहता आया था । उसी के नाम पर किले को मैट का दुर्ग कहते थे । आसपास का सारा जंगल भी मैट के नाम से जाना जाता था ।

उस भयंकर रात में मैट और उसके साथी किले में भय से छिपे थे । जंगल के जीव-जंतु भी अपनी खोहों में घुसे हुए थे । इसी वक्त मैट के घर बेटी ने जन्म लिया । मैट की पत्नी लेना ने उसका नाम क्रिस्टी रखा ।

मैट के दल में सबसे बूढ़ा, पर सबसे हंसमुख एक सदस्य था—स्किनी पैट । शायद उसके कमजोर शरीर और गंजे सिर की वजह से उसका यह नाम पड़ा था । पोपले मुंह से हंसते हुए वह प्यार से क्रिस्टी को देख रहा था । मैट ने बच्ची को उसकी गोदी में लिटा दिया था । मैट के किले में उस भयंकर रात खूब खुशियां मनाई गईं ।

मैट एक दिन स्किनी पैट से बोला—''सुना है, रानुल्फ के कोई संतान नहीं है । अब क्रिस्टी को किसी का डर नहीं । हम इस जंगल पर बेखटके राज करेंगे ।''

''नहीं !'' —गोदी में क्रिस्टी को झुलाते हुए स्किनी पैट बोला --''मैंने सुना था कि उस भयंकर रात रानुल्फ के घर बेटा पैदा हुआ था ।''

रानुल्फ और मैट में पड़दादाओं के जमाने से दुश्मनी चली आ रही थी । उस जंगल से गुजरने की हिम्मत किसी में नहीं थी । कभी मैट, तो कभी रानुल्फ के डाकू हर राहगीर को लूट लेते थे । कभी-कभी दोनों दलों में भिड़ंत हो जाती थी । मैट के दादा ने रानुल्फ खानदान को उस क्षेत्र से बाहर खदेड़ दिया था । अब मैट का वहां एकछत्र शासन था ।
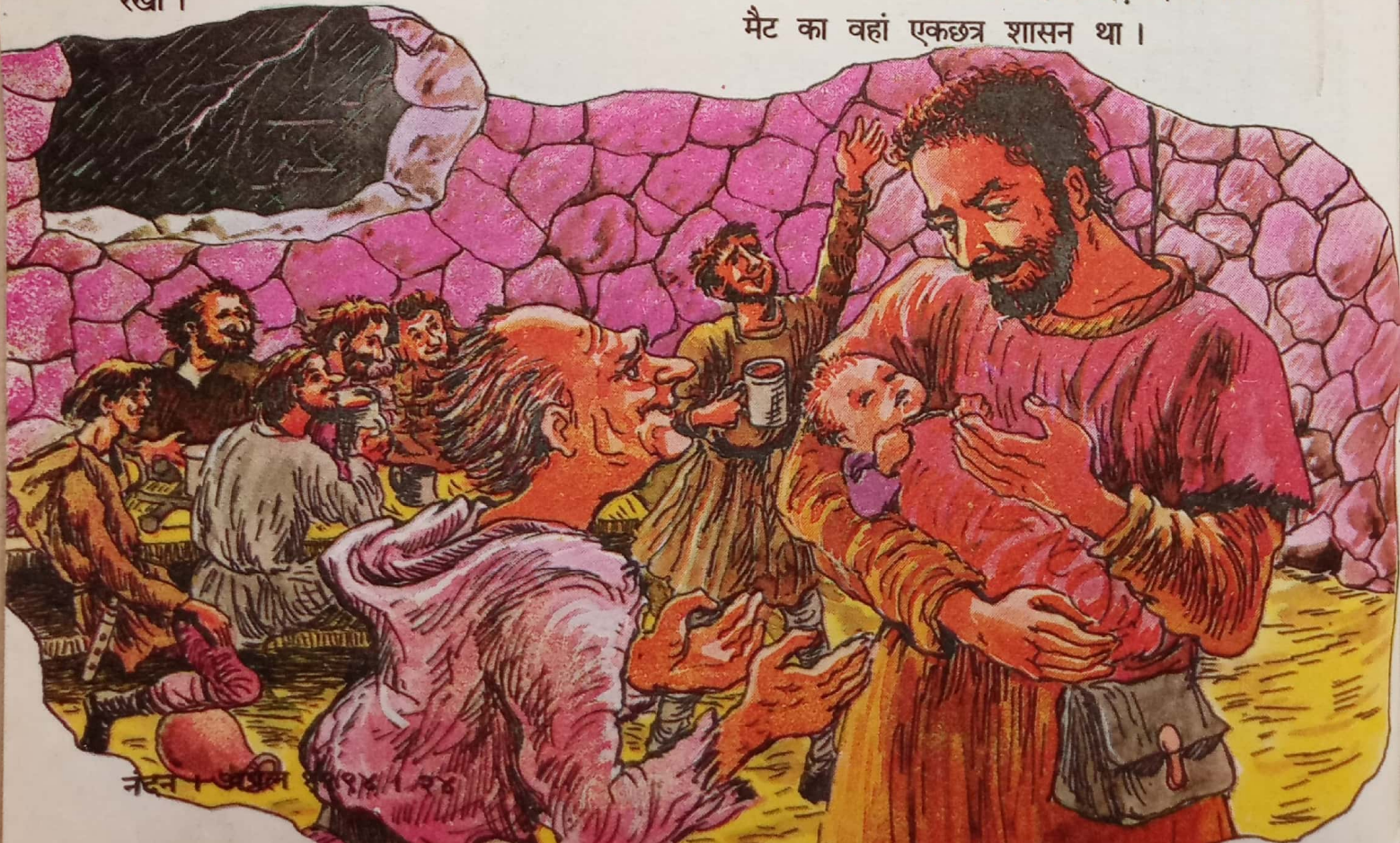
निर्दयी डाकू उस नन्ही बच्ची से प्यार करने लगे। वे उसे लड़कों जैसे कपड़े पहनाते। लेना एतराज करती, तो मैट कहता—"क्रिस्टी बेटा और बेटी दोनों है। बड़ी होकर इसे मेरे पूरे राज को संभालना है।" इन बातों से बेखबर क्रिस्टी हंसती-खिलखिलाती इधर से उधर घूमती। समय तेजी से बीतता जा रहा था।

क्रिस्टी की मां लेना सुबह-सुबह नाश्ता बनाकर उसके झोले में रख देती। उसे लेकर क्रिस्टी दिन भर जंगल में खेला करती। किले से बाहर निकलकर क्रिस्टी ने जाना था कि दुनिया कितनी बड़ी है। नदी, झरने, पहाड़, फूल तथा परिंदे जैसे उसे बुलाते रहते—'क्रिस्टी, आओ हमारे साथ खेलो।' क्रिस्टी तितलियों के पीछे भागती, पेड़ों की डालों पर बंदरिया की तरह झूलती। प्रकृति के बीच रहकर वह खुश थी। शाम को थक-हारकर वह किले में लौट आती। फिर भोजन करके पैट से कहानियां सुनती-सुनती सो जाती। मां भी उसे गीत सुनाती थी।

मैट जितना कठोर लगता था, लेना उतनी ही कोमल थी। वह क्रिस्टी को अच्छी सीख देती थी। उसे लेकर मैट और लेना में अक्सर तकरार होती थी, पर अंत में जीत लेना की ही होती।

एक दिन क्रिस्टी जंगल में खेल रही थी। खेलते-खेलते थककर नदी किनारे उभरी चट्टान पर बैठ गई। झोले में से निकालकर भोजन किया, फिर सो गई। जब वह जागी, तो उसने पाया रात हो चुकी है। छोटे-छोटे बौने उसे घेरकर नाच रहे हैं। ठंड से उसके हाथ-पैर अकड़े जा रहे थे। बौनों के डर से कांपती वह रोने लगी। उधर मैट क्रिस्टी को न पाकर चीख रहा था।

मैट की दहाड़ सुनकर बौने डरकर अपनी गुफा में छिप गए। पिता को देखा, तो क्रिस्टी दौड़कर उसकी गोद में दुबक गई। यह देख, मैट जोर-जोर से हंसने लगा—"डर गई मेरी बहादुर बेटी! अरे, बौने तो तेरे चिल्लाने से भी भाग जाते।" यह सुनकर क्रिस्टी खिलखिला उठी।

जंगल क्रिस्टी को पुकारता, लेकिन अब उसे डर

लगने लगा था। एक दिन वह किले को बांटने वाली दरार को देखने के लिए छत पर चढ़ी। मन ही मन वह सोच रही थी—'मैं उसे दूर से ही देखूंगी, उसमें झांकूंगी नहीं।' उसने एक पत्थर उठाया और उस दरार में फेंक दिया। बिना आवाज किए वह पत्थर न जाने कितनी गहराई में पहुंच गया था। क्रिस्टी सोचकर कांप उठी। तभी उसकी नजर दरार के दूसरी तरफ बैठे एक हमउम्र लड़के पर पड़ी, जो उसकी ओर देखकर हंस रहा था। लड़के ने अपने पांव दरार में लटका रखे थे।

"डर गई न!" —लड़के ने उसे चिढ़ाते हुए कहा।

गुस्से में बिफरती हुई क्रिस्टी ने पूछा—"तुम कौन हो और हमारे किले में क्या कर रहे हो?"

लड़के ने बताया कि वह रानुल्फ का बेटा बर्ल है।

"तुम्हारे घर में और कौन-कौन हैं?" —क्रिस्टी ने आगे जानना चाहा।

—"मेरे पिता, मां हाना और बारह डाकू।"

तभी बर्ल ने हवा में छलांग लगाई और दरार को पार करके क्रिस्टी की तरफ आ गया। क्रिस्टी डर गई। तभी बर्ल ने उसे चिढ़ाया—"तुम भी ऐसे ही कूदकर दिखाओ न।"

गुस्से से भरकर क्रिस्टी भी उछली और दरार के दूसरी ओर पहुंच गई। फिर तो यही खेल चलने लगा। कभी बर्ल क्रिस्टी की तरफ आता, तो कभी क्रिस्टी उस तरफ पहुंच जाती। अचानक बर्ल का पैर चूका और वह दरार में झूल गया। क्रिस्टी कांप उठी। उसने दरार में झांका, तो बर्ल दीवार से निकले एक छोटे पत्थर पर टिका दिखाई दिया।

क्रिस्टी ने अपनी कमर में बंधी चमड़े की रस्सी खोली और दरार में बर्ल की ओर लटका दी । झुककर उससे कहा कि वह रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ आए । फिर छत पर बनी एक चिमनी को पकड़कर क्रिस्टी लेट गई । उधर बर्ल ने रस्सी थामकर चढ़ना शुरू कर दिया । उसके वजन से क्रिस्टी भी दरार की तरफ खिंचने लगी । उसने और भी कसकर चिमनी को पकड़ लिया । तभी एक झटके के साथ बर्ल दरार से ऊपर आ गया । डर से उसका मुंह सफेद पड़ा हुआ था, पर फिर भी हंसते हुए बोला—"धन्यवाद ! कभी मैं भी तुम्हारे काम आऊंगा ।"

डरते-कांपते क्रिस्टी ने रानुल्फ, हाना और बर्ल के बारे में अपने पिता को बता दिया ।

"क्या कहा? रानुल्फ मेरे किले में !"—चीखते हुए मैट बोला । क्रिस्टी बुरी तरह डर गई । उस रात मैट ने गुस्से में खाना फेंक दिया । रात भर वह और उसके साथी यही सोचते रहे कि रानुल्फ किस रास्ते से किले में घुसा है ? उसे कैसे निकाला जाए ?

दूसरी सुबह दोनों दुश्मन दरार के आर-पार खड़े दहाड़ रहे थे । हाना और लेना बेबस आंखों से उन्हें देख रही थीं । स्किनी पैट ने मैट को समझाया कि रानुल्फ को आमने-सामने की लड़ाई में नहीं हराया जा सकता । इसके लिए कोई तरकीब सोचनी होगी ।

उस रात क्रिस्टी ने अपने पिता से पूछा कि डाकू क्या होते हैं और रानुल्फ कौन है ? मैट बहुत देर चुप रहा । उसे शर्म आ रही थी । पर उसे उत्तर देना पड़ा—"डाकू लोगों से उनकी चीजें छीन लेते हैं ।"

क्रिस्टी को मैट की यह बात अच्छी नहीं लगी । वह बोली—"मैं आपकी बेटी नहीं हूं । कोई डाकू मेरा पिता हो, यह मुझे पसंद नहीं ।" मैट चुप खड़ा रह गया ।

सर्दियां आईं,तो सारा किला और जंगल बर्फ की चादर से ढक गया । बर्ल और क्रिस्टी स्की के सहारे बर्फ पर दौड़ते फिरते । एक दिन क्रिस्टी जमे हुए तालाब पर स्कीइंग कर रही थी, तो अचानक छिछली बर्फ में धंस गई । वह ठंडे पानी में डूबती जा रही थी, तब बर्ल ने उसे बाहर निकाला । क्रिस्टी के मुंह से निकला—"काश, तुम मेरे भाई होते ।" बर्ल ने हंसते हुए जवाब दिया—"हां, मैं तुम्हारा भाई ही हूं । मैं भी उसी दिन, उसी वक्त पैदा हुआ था जब तुमने जन्म लिया था ।"

बर्फ में धंसने से क्रिस्टी बीमार पड़ गई । मैट और उसके साथी परेशान थे कि हंसती-खेलती क्रिस्टी को क्या हो गया । वे रात भर जागकर उसकी देखभाल करते रहे । लेना ने जड़ी-बूटियों का काढ़ा बनाकर क्रिस्टी को पिलाया,तो चार-पांच दिन में वह ठीक हो गई । वह फिर से पहले की तरह भाग-दौड़ करने लगी । लेकिन मैट ने उसका घर से बाहर निकलना बंद कर दिया ।

क्रिस्टी ने अब किले में खोज शुरू कर दी । स्किनी पैट ने उसे सारे गुप्त मार्ग बता दिए । क्रिस्टी बर्ल की याद करती रहती । अब वे दोनों साथ नहीं खेल सकते थे । पैट ने उसे एक सुरंग दिखाई । उसका दूसरा सिरा पत्थरों से बंद कर दिया गया था । क्रिस्टी पिता के हथियारों में से एक कुदाल जैसी चीज ले आई और दीवार को तोड़ने लगी । अब वह रोज यही करती रहती ।

एक दिन उसने दीवार में सूराख बना लिया । तभी उसे आवाजें सुनाई देने लगीं । यह बर्ल था । उसके पुकारने पर बर्ल इस तरफ चला आया । तभी पैट वहां आ गया । दोनों पत्थरों के ढेर के पीछे छिप गए । पैट ने पुकारा,तो क्रिस्टी छिपने के स्थान से बाहर निकल आई ।

पैट ने टूटी दीवार देखी,तो पूछा—"यह तुमने अकेले किया ?"

"हां, और वह बर्ल है, रानुल्फ का बेटा ।" —क्रिस्टी ने पैट को बर्ल का परिचय दिया, फिर हाथ जोड़कर बोली—"इस बारे में पिता जी से कुछ मत कहना, नहीं तो...."

स्किनी ने कहा कि वह चुप ही रहेगा । वह क्रिस्टी से बहुत स्नेह करता था और मैट तथा रानुल्फ की दुश्मनी से परेशान हो चुका था । स्किनी ने बर्ल से उसके परिवार का हाल पूछा, तो बर्ल ने बताया कि उनका भोजन समाप्त हो चुका है । आग जलाने के लिए लकड़ियां भी नहीं हैं । कपड़े फट चुके हैं ।

मित्र का दुःख सुनकर क्रिस्टी का मन परेशान हो उठा । उस दिन से वह मां से अधिक भोजन मांगकर लाने लगी । सुरंग में आकर बर्ल को भोजन दे देती । दोनों देर तक बातें करते रहते ।

एक दिन बर्ल किले में घूम रहा था, तभी मैट ने उसे पकड़ लिया । उसे बहुत मारा और रस्सी से बांध दिया । फिर उसे लेकर दरार के पास जाकर चीखने लगा—"रानुल्फ, मेरे पास तुम्हारा बेटा है । यदि तुम मेरे किले को घंटे भर में खाली नहीं कर देते, तो मैं तुम्हारे लड़के को इसी दरार में ढकेल दूंगा ।"

तभी क्रिस्टी के दिमाग में एक विचार आया और वह हवा में उछलकर दरार के पार चली गई । अब वह रानुल्फ की बगल में खड़ी थी । रानुल्फ ने उसे कसकर पकड़ लिया और मैट से बोला—"अब तुम्हारी बेटी मेरे पास है ।" क्रिस्टी को दरार पार करते देख, मैट चीख उठा—"क्रिस्टी, मेरी बेटी, दरार में कूदकर जान मत दो । मैं बर्ल को छोड़ दूंगा ।" लेकिन जब उसने क्रिस्टी को रानुल्फ के पास खड़े देखा, तो गुस्से से बोला—"मेरी कोई बेटी नहीं है ।"

"मेरी तो है ।"—लेना ने कह दिया ।

आखिर मैट ने बर्ल को मुक्त कर दिया और रानुल्फ ने क्रिस्टी को । लेना और हाना दोनों बच्चों की दोस्ती की गहराई को समझ गई । क्रिस्टी चीख रही थी—"मैं डाकू की बेटी नहीं बनना चाहती ।" उधर बर्ल भी अपने पिता को बुरा-भला कह रहा था ।

क्रिस्टी ने विद्रोह कर दिया । वसंत आया । सारा जंगल फूलों से खिल उठा । यात्री निकलने लगे । मैट और रानुल्फ यात्रियों को लूटने में लग गए । रोज-रोज यह देखकर क्रिस्टी दुखी रहने लगी । एक दिन उसने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया । मैट भी उससे नहीं बोलता था । क्रिस्टी ने थोड़ा-सा सामान लिया और एक गुफा में रहने लगी । बर्ल भी वहीं आ गया ।

इधर स्किनी पैट मैट को समझाता रहता—"जिद छोड़ दो । बेटी को ले आओ ।"

सर्दियां आ गईं । दोनों बच्चे गुफा में ही रह रहे थे । एक दिन क्रिस्टी नदी से पानी ला रही थी । तभी उसने मैट को एक तरफ बैठे देखा । वह रो रहा था । क्रिस्टी को देखकर उसने कहा—"क्रिस्टी, मेरी बच्ची, घर लौट चल ।" उसके इतना कहते ही क्रिस्टी भी उससे लिपटकर रोने लगी ।

थोड़ी दूर पर बर्ल उदास खड़ा था । क्रिस्टी का मन कचोटने लगा कि वह बर्ल को छोड़कर कैसे जाए । बर्ल ने जैसे उसकी उलझन समझ ली । बोला—"क्रिस्टी, तुम अपने पिता के साथ चली जाओ ।"

"मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगी ।"—क्रिस्टी ने कह दिया ।

तभी मैट ने बर्ल को बुलया । कहा—"तुम भी मेरे साथ चलो ।" वह दोनों को कंधों पर बैठाकर किले में ले आया । लेना ने देखा, तो रोने लगी । मैट चीखा—"अरे, आज खुशी का दिन है, रोती क्यों हो ?"

बर्ल सुरंग के रास्ते पिता के पास पहुंचा । उसे पूरी घटना बता दी । "मैट इतना बुरा नहीं है ।"—रानुल्फ ने कहा । उसी समय मैट लेना से कह रहा था—"रानुल्फ से दुश्मनी ठीक नहीं ।" तभी बिजली कड़की और किले को दो भागों में बांटने वाली दरार पट गई । उसका कोई निशान बाकी न रहा । मैट और रानुल्फ की दुश्मनी समाप्त हो गई थी । यह चमत्कार क्रिस्टी और बर्ल ने किया था ।

(प्रस्तुत—डा. मृदुला गुप्त)

महाबली बेटा

— डा. भगवतीशरण मिश्र

एक बार नारद ज़ी अपने भांजे पर्वत मुनि के साथ पृथ्वी पर आए। वे राजा सृंजय के दरबार में पहुंचे। राजा सृंजय अत्यंत प्रतापी थे और पूरी पृथ्वी पर उनका सम्मान था।

"नारायण ! नारायण !"— सृंजय को पैरों पर पड़ते देख, नारद ज़ी बोले। फिर कहा— "वत्स ! मैंने यह तय कर लिया है कि अपने भांजे पर्वत मुनि के साथ अब मैं कुछ दिनों के लिए तुम्हारे यहां ही वास करूंगा। इससे तुम्हारा कल्याण ही होगा।"

नारद मुनि अपने भांजे पर्वत मुनि के साथ राजा सृंजय के राजमहल में विराजने लगे।

कुछ दिनों के पश्चात् जब दोनों के चलने का समय आया, तो पर्वत मुनि ने नारद जी से कहा— "मामा जी, इस राजा ने अत्यंत भक्ति भाव से हमारी सेवा की है। हमें इसे कुछ वरदान देना चाहिए।"

नारद मुनि ठहरे सदा के मनमौजी। बोले— "यह छोटा-सा काम तुम्हीं कर दो।"

राजा की कोई संतान नहीं थी। अतः उन्होंने पर्वत मुनि से कहा— "महामुनि, अगर आप दोनों सचमुच मुझसे प्रसन्न हैं, तो मुझे एक अत्यंत पराक्रमी पुत्र दीजिए जो देवताओं के राजा इंद्र को भी पराजित कर सके।"

"तथास्तु।"— पर्वत मुनि ने कहा— "तुम्हें बलशाली पुत्र प्राप्त होगा, परंतु वह कुछ ही दिन जीवित रह पाएगा। तुमने इंद्र को पराजित कर, स्वर्ग का राज्य हड़पने के लिए ऐसा वर मांगा है। इसलिए इंद्र तुम्हारे पुत्र को जीवित नहीं रहने देगा।"

पर्वत मुनि की बात सुनकर राजा सृंजय बहुत घबराए। उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर कहा— "आप दोनों महान तपस्वी हैं। अगर मेरा पुत्र जीवित ही नहीं रहा, तो इस वरदान से लाभ ही क्या ? आप लोग कृपा कर मेरे लड़के को दीर्घ जीवन प्रदान कर दें।"

पर्वत मुनि तो चुप कर गए। उनका हृदय भी पर्वत की तरह ही कठोर था, पर नारद मुनि को दया आ गई। उन्होंने कहा— "नारायण सब अच्छा करेंगे राजन। अगर आपके बालक का सचमुच कुछ बिगड़ा, तो मुझे स्मरण कीजिएगा। मैं सब ठीक कर दूंगा।" इतना कहकर नारद मुनि अपने भांजे पर्वत मुनि के साथ विष्णु लोक को प्रस्थान कर गए।

कुछ दिनों पश्चात् राजा सृंजय की पत्नी ने सचमुच एक अत्यंत विचित्र बालक को जन्म दिया। जन्म के

समय ही वह सामान्य शिशु नहीं, बल्कि काफी बड़ा लग रहा था । वह बहुत तेजी से बढ़ने लगा और पांच वर्ष की उम्र होते-होते ही किसी विशाल हाथी के समान बलशाली हो गया ।

राजा सृंजय के मन में अपने बालक के इस रूप को देखकर भय उत्पन्न हो गया । उन्हें लगा कि पर्वत मुनि की बात सत्य होकर रहेगी और देवराज इंद्र इसे जीवित नहीं छोड़ेंगे । इस डर से राजा ने सपरिवार अपना महल छोड़ दिया । एक घोर जंगल में छिपकर रहने लगे ।

इधर देवराज इंद्र भी बालक के स्वरूप को देखकर भयभीत हो उठे । उन्होंने उसे हर हालत में समाप्त करने का निश्चय कर लिया ।

देवराज इंद्र ने अपने प्रसिद्ध अस्त्र वज्र को बुलवाया । कहा— "तुम एक विशाल बाघ का रूप धारण कर जंगल में चले जाओ । अवसर मिलते ही हाथी के समान बलशाली उस राजकुमार का काम तमाम कर दो ।"

वज्र ने वही किया । वह इंद्रलोक से धरती पर उतरा । बाघ का रूप धारण कर उसी जंगल में जा पहुंचा, जहां राजा सृंजय सपरिवार रह रहे थे ।

वन में छिपा, बाघ बना वज्र मौके की खोज में था । एक दिन राजकुमार नदी के किनारे खेलने निकल आया । बाघ को मौका मिला । वह भी वहां प्रकट हो गया । बाघ को देखते ही राजकुमार का खून खौल उठा और वह बाघ पर टूट पड़ा ।

दोनों बारी-बारी से एक-दूसरे पर आक्रमण करने लगे । दोनों के गर्जन से दिशाएं गूंज उठीं । अंत में दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए । कभी एक ऊपर, तो कभी दूसरा । पर बाघ बने इंद्र के वज्र के सामने एक बालक कब तक ठहरता ? बाघ ने उसे मार डाला । बालक के प्राण-पखेरू उड़ गए । बाघ अपना काम पूरा कर इंद्र के पास लौट गया ।

इधर गर्जन-तर्जन की आवाज सुन, राजा सृंजय महारानी के साथ नदी तट पहुंचे । अपने प्रिय पुत्र की देह को खून में लथपथ देख, हाहाकार करने लगे । उनकी पत्नी इस दारुण दुःख को नहीं झेल सकीं । अचेत होकर, कटे पेड़ की तरह जमीन पर जा गिरीं ।

काफी देर तक रोने-बिलखने के पश्चात् सृंजय को नारद मुनि का दिया हुआ वचन याद आया । राजा ने नारद मुनि का ध्यान किया । वह करताल बजाते, हरि गुण गाते वहां उपस्थित हो गए— "नारायण ! नारायण !"

नारद जी देखते ही सारी बातें समझ गए । उन्होंने अपने कमंडल से जल निकाला । जैसे ही राजकुमार पर उसके चंद छींटे दिए, वैसे ही वह जीवित होकर उठ बैठा ।

"अब तुम्हारे पुत्र का शरीर वज्र के समान ही कठोर हो गया । इंद्र भी इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता । तुम अपने परिवार के साथ जाकर राजमहल में सुख से रहो । तुमने हमारी बहुत सेवा की थी ।

उसका बदला मैंने चुका दिया ।"–नारद जी ने राजा सृंजय से कहा और तत्काल अंतर्धान हो गए । उनके मुख से निकलता "नारायण ! नारायण !" का स्वर देर तक वातावरण में गूंजता रहा । ●

आलू

सबको अच्छा लगता आलू,
आलू से बन गया कचालू।
आलू–गोभी, बढ़िया सब्जी,
आलू, मटर, टमाटर सब्जी।
आलू-बैंगन बढ़िया सब्जी,
आलू-पालक बढ़िया सब्जी।
आलू भरकर बनता डोसा,
आलूवाला गरम समोसा।
आलू टिकिया चिप्स बनाओ,
आलू भूनो, छीलो, खाओ,
सबका स्वाद बढ़ाता आलू,
सबमें घुलमिल जाता आलू।

— राष्ट्रबंधु

भूल भुलैया

संजूजी ऐंठे बैठे हैं
लेकर बाइसकोप,
दिखा रहे हैं लंगड़ी धोबिन
शेरशाह की तोप।
पछताओगे करके देर,
दस पैसे में बब्बर शेर!

उड़नेवाला घोड़ा देखो
डरती जिससे रेल,
इससे आगे जा पाने में
वायुयान तक फेल।
पप्पू सिर पर मत रख हाथ,
झटपट ला गुड़िया को साथ!

हवा महल जयपुर का देखो,
देखो कुतुब मीनार,
झांसी की रानी को देखो
चला रही तलवार।
ताजमहल का उजला रंग,
देख-देख दुनिया है दंग!

लखनऊ की भूल भुलैया
जिसकी अपनी शान,
कलकत्ता-बम्बई देख लो
सारा हिंदुस्तान।
जेब कहे तो पैसे फेंक,
वरना आ फोकट में देख!

—विजयेन्द्र कुमार

नया शौक

भालू दादा को कविता का,
नया शौक चर्राया,
उलटी-सीधी तुकबंदी कर,
पहला छंद बनाया।

इधर-उधर से जोड़-गांठकर,
कविता नई बनाई,
अब तो छप ही जाएगी यह,
मन में आस लगाई।

फौरन बंद लिफाफे में कर,
कविता भेजी छपने,
और बाद में लगा देखने,
सोते-जगते सपने।

सभी जानवरों ने कर डाली,
उसकी खूब खिंचाई,
सम्पादक के खेद सहित जब,
कविता वापस आई।

—देवशर्मा विचित्र

कब सोती है

कितनी लंबी होती रेल,
पापा, कब सोती है रेल!
पटरी पर दौड़ा करती है,
धुआं भी छोड़ा करती है,
जाती कब खेलने खेल?

कितने सारे डिब्बे होते,
फिर भी जैसे थोड़े होते,
हरदम होती धक्कमपेल।

डिब्बे में भी डिब्बा होता,
बिल्कुल पिंजरे जैसा होता,
बाहर से लगता वह जेल!

इसके भी होते हैं नाम,
इसके बिना न चलता काम,
एक्सप्रेस, पैसेंजर व मेल!

—रेखा व्यास

घोड़े का पिंजरा

— उमा पंत

सोन और जोन जुड़वां भाई थे। दोनों की कद-काठी और रूप-रंग एक जैसा था। बाहर के लोग तो पहचानने में धोखा खाते ही थे, उनके घर के लोग भी जल्दी में कई बार सोन को जोन और जोन को सोन समझ बैठते थे। एक जैसी आदतें, एक जैसा स्वभाव और तो और दोनों की पसंद-नापसंद भी एक जैसी थी। तैराकी और तीरंदाजी दोनों भाइयों को प्रिय थी।

मां छत पर लाऊ-कुमड़ा (लौकी-कद्दू) रखे रहती कि समय-असमय काम आएंगे, परंतु ये भाई उन्हें तीरों से छलनी कर डालते। मां डांटती,तो सोन कहता जोन ने किया और जोन कहता सोन ने किया। मां तालाब से कलमी का साग चुनकर लाने को कहती, तो दोनों भाई तैराकी में ही सारा दिन बिता देते। आते-जाते रास्ते का हर परिंदा उनके तीर का निशाना बनकर रह जाता। पूरे गांव में इन भाइयों जैसा तैराक और निशानेबाज कोई दूसरा न था।

असम में एक बार ऐसी भीषण बाढ़ आई कि गांव के गांव बह गए। सोन और जोन के गांव को भी बाढ़ लील गई। अच्छा तैराक होने की वजह से जोन किसी तरह तैरते हुए दूसरे गांव के किनारे जा पहुंचा। चारों तरफ पानी ही पानी। वह अकेला कहां जाए! मां-बाप से बिछुड़ने का दुःख उसे उतना न था जितना जुड़वां भाई से बिछुड़ने का दुःख था।

"सोन! सोन!" —पुकारते भाई की खोज में वह दूर एक जंगल में जा पहुंचा। चलते-चलते वह बहुत थक गया,तो एक पेड़ के नीचे सुस्ताने बैठ गया। भूख और थकान से पस्त वहीं सो गया।

आंख खुलीं तो देखा, सामने उसका घोड़ा खड़ा था। वह खुशी से उछल पड़ा। देर तक घोड़े की पीठ सहलाता रहा।

"तू तो मिल गया सिप्पो,पर सोन नहीं मिला। चल अब दोनों मिलकर सोन को ढूंढ़ते हैं।"— कहते हुए जोन घोड़े की पीठ पर सवार हो गया।

जोन को अपनी पीठ पर लिए घोड़ा दौड़ पड़ा। घने पेड़ों के कारण रास्ता ठीक से दिखाई नहीं दिया। घोड़ा गड्ढे में गिर पड़ा। वह बुरी तरह घायल हो गया था, पर जोन को उसने एक खरोंच तक न आने दी।

क्या करे जोन! आसपास कहीं पानी भी न था कि घाव धो सके। घोड़े को वहीं पर छोड़कर वह पानी की तलाश में निकला। बहुत दूर जाने पर एक सोता दिखलाई दिया। पानी लेकर वापस आ रहा था, तो आसमान में चील उड़ती दिखाई दी। 'उफ्! कहीं यह सिप्पो पर न टूट पड़े।' उसने उड़ती चील पर निशाना साधा। चील पंख फड़फड़ाती हुई नीचे गिर पड़ी।

जोन का सोचना सही निकला। घोड़े के ऊपर मंडराती एक और चील मांस नोचने को तैयार थी। चील को भगाकर,उसने सिप्पो का घाव धोकर साफ किया और उसके पास बैठ गया।

"एक-दो दिन यहीं आराम कर लेते हैं। जब तू ठीक हो जाएगा,तब आगे बढ़ेंगे। मैं पहले जंगल से बूटी खोज लाता हूं,ताकि तू जल्दी ठीक हो जाए।"— कहकर जोन ने अपनी कमान संभाली और सिप्पो के चारों तरफ तीरों से घेराबंदी कर दी। उसके सधे हुए तीर इस तरह पडे कि सिप्पो के चारों तरफ एक किला-सा बन गया। उसके भीतर चील तो

क्या, नन्ही-सी चिड़िया फूलसूंघनी तक नहीं फटक सकती थी।

जोन घोड़े के घावों पर लेप लगाने के लिए जड़ी-बूटी की तलाश में निकला। उधर सोन भी अपने जुड़वां भाई की खोज में गांव-गांव, जंगल-जंगल भटकता फिर रहा था। दूर से उसे तीरों का किला दिखाई दिया। उसने सोचा-'ऐसी तीरंदाजी मेरे भाई के अलावा और कोई कर ही नहीं सकता।' आगे बढ़ा, तो उसे अपना घोड़ा भी दिखाई दिया।

"मिल गया... मेरा भाई मुझे मिल गया...!"— सोन खुशी से चिल्ला पड़ा।

उसकी आवाज सुन, जोन तेज-तेज चलने लगा। अपने जुड़वां भाई को वहां पर देख, वह खुशी से झूम उठा। दोनों भाई एक-दूसरे के गले लगे। मारे खुशी के उनकी आंखें भर आईं।

जोन जंगल से जड़ी-बूटी और कंदमूल फल ले आया था। सिप्पो के घावों में जड़ी का लेप लगाया। फिर तीनों ने कंदमूल फल खाए। दोनों भाई आपबीती कहते-सुनते वहीं आराम करने लगे। पास के कबीले का सरदार उधर से जा रहा था। उसे तीरों का एक अनोखा पिंजरा दिखाई दिया।

"ऐ... कौन है यहां! यह घोड़ा किसका है?"— सरदार चिल्लाया।

"हम हैं जोन और सोन। घोड़ा हमारा है।"— सोन ने कहा।

— "यहां कैसे आए? यह बीच रास्ते में पिंजरा क्यों खड़ा किया है? तुम कहते हो घोड़ा तुम्हारा है। अगर घोड़ा तुम्हारा ही है, तो पिंजरे में बंद क्यों किया है? सब कुछ सच-सच बताओ, वरना यह भाला तुम्हारे सीने के आर-पार होगा।"

उत्तर में जोन ने पूरी कहानी सुनाई कि किस तरह गांव में बाढ़ आई, परिवार बिछड़ा, घोड़ा घायल हुआ और कैसे घोड़े की रक्षा के लिए उसने तीरों की यह घेराबंदी की।

वह बोला— "मैं यहां के कबीले का सरदार हूं। तुम्हारी तीरंदाजी देख बहुत प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें अपने कबीले की जिम्मेदारी सौंपता हूं। आज से तुम दोनों भाई मेरे साथ ही रहोगे।"

"लेकिन सरदार! जब तक हमारा घोड़ा ठीक होकर चलने-फिरने नहीं लगता, हम यहां से नहीं जा सकते। इस घोड़े को आप हमारा तीसरा भाई समझें। इसके ठीक होते ही हम तीनों एक साथ आपकी सेवा में उपस्थित होंगे।"— जोन और सोन ने कहा।

घायल घोड़े से जोन-सोन का यह लगाव देख, सरदार और भी खुश हुआ। उसने सोचा कि जो पशु से इतना प्यार करते हैं, उनके हाथों में मेरा कबीला पूरी तरह सुरक्षित रहेगा।

"मुझे तुम्हारी बात पसंद है।"— कहकर सरदार चला गया।

थोड़ी देर में सरदार का भेजा एक घुड़सवार बहुत सारी खाने-पीने की चीजें और घोड़े के घावों के लिए जड़ी-बूटियों का लेप लेकर आ गया।

उस लेप के चमत्कार से सिप्पो दो दिनों में ही उठ खड़ा हुआ। दोनों भाई अपने घोड़े को ले, उस घुड़सवार के साथ, सरदार के पास जा पहुंचे।

सरदार ने उनका जोरदार स्वागत किया। एक शानदार जश्न मनाया और घोषणा की कि जोन-सोन और सिप्पो आज से हमारे कबीले में शामिल हुए। इस कबीले की हिफाजत मैं इनको सौंपता हूं।

कुछ ही दिनों में जुड़वां भाइयों ने कबीले वालों का दिल जीत लिया। सरदार ने अपनी दोनों बेटियों का विवाह उन दोनों से कर दिया। तीरों के उस अनोखे किले के बाहर पत्थरों की पक्की दीवार खड़ी कर दी गई।

बरसों बीत गए। उस कबीले के लोग, जोन-सोन के वंशज अब वहां हैं भी कि नहीं, किसी को नहीं मालूम। लेकिन असम के उस गांव में आज भी कबीले के सरदार की बनवाई हुई वह दीवार और उस पर गढ़े हुए तीरों के निशान मौजूद हैं। ●

पिकनिक

सैगांव के उत्तर में छोटा-सा घना जंगल था। जंगल के पार नदी थी। एक बार गांव के स्कूली बच्चे नदी पर पिकनिक मनाने गए ....
जल्दी बच्चो! रात से पहले ही जंगल पार करना है।
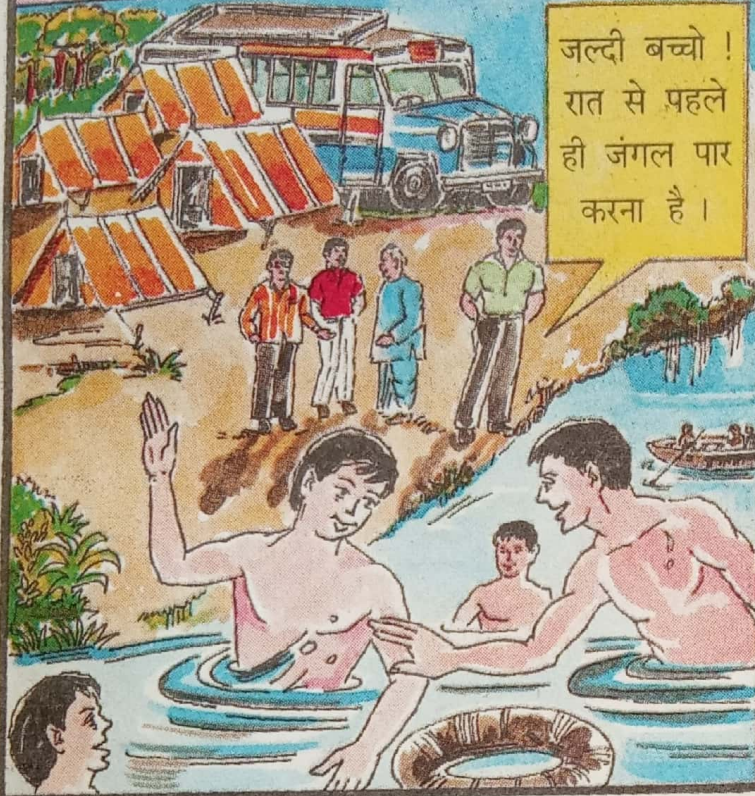
शाम से पहले ही बच्चे लौट चले। अचानक रास्ते में ...
बीच जंगल में बस क्यों रोक दी?
इंजन में कुछ खराबी...देखता हूं...
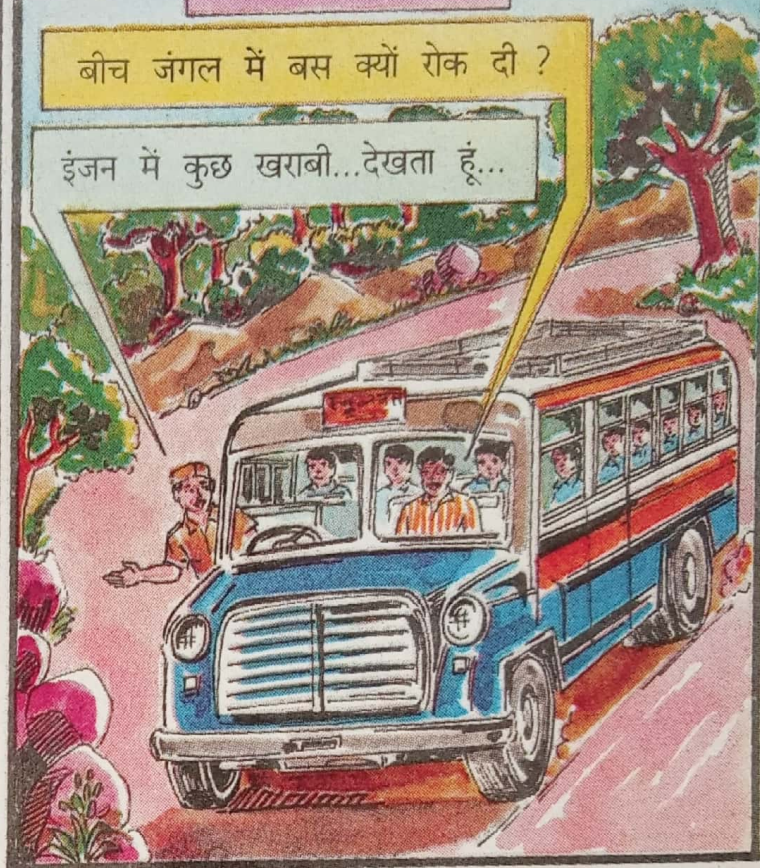
कुछ देर बाद ...
साब, खराबी सवेरे से पहले ठीक नहीं होगी...
कितना सुंदर जंगल.... रात में पिकनिक...
मर गए। अंदर तो बड़ी गर्मी...
बाहर चलें?
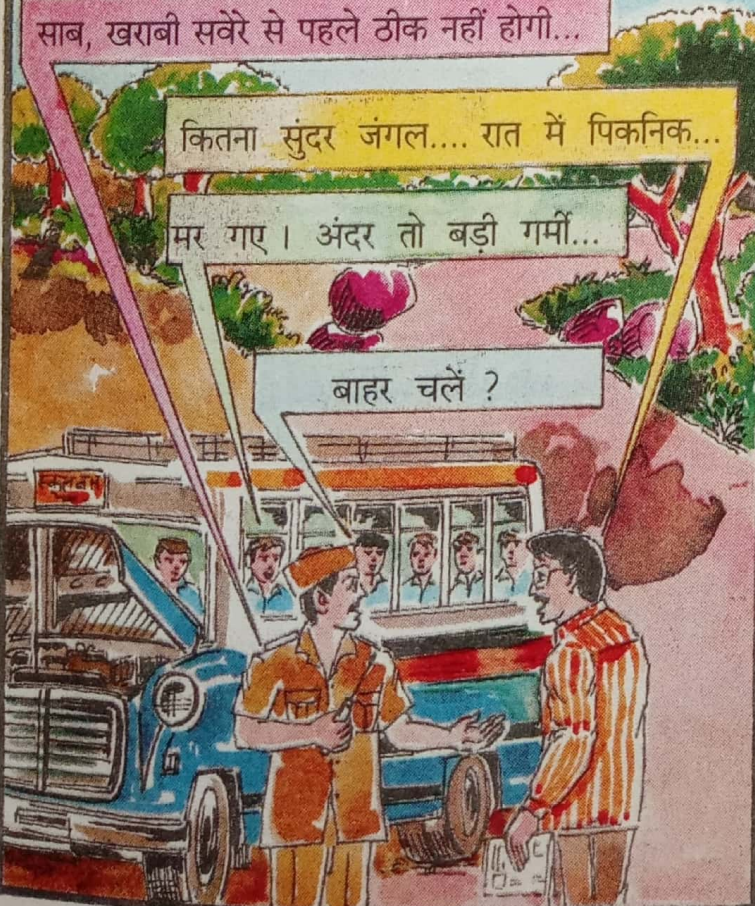
बच्चे कैम्प लगाने लगे
फिक्र नहीं। जंगल में..
ये निकम्मे अतुल और अकरम...
निखट्टू भी...
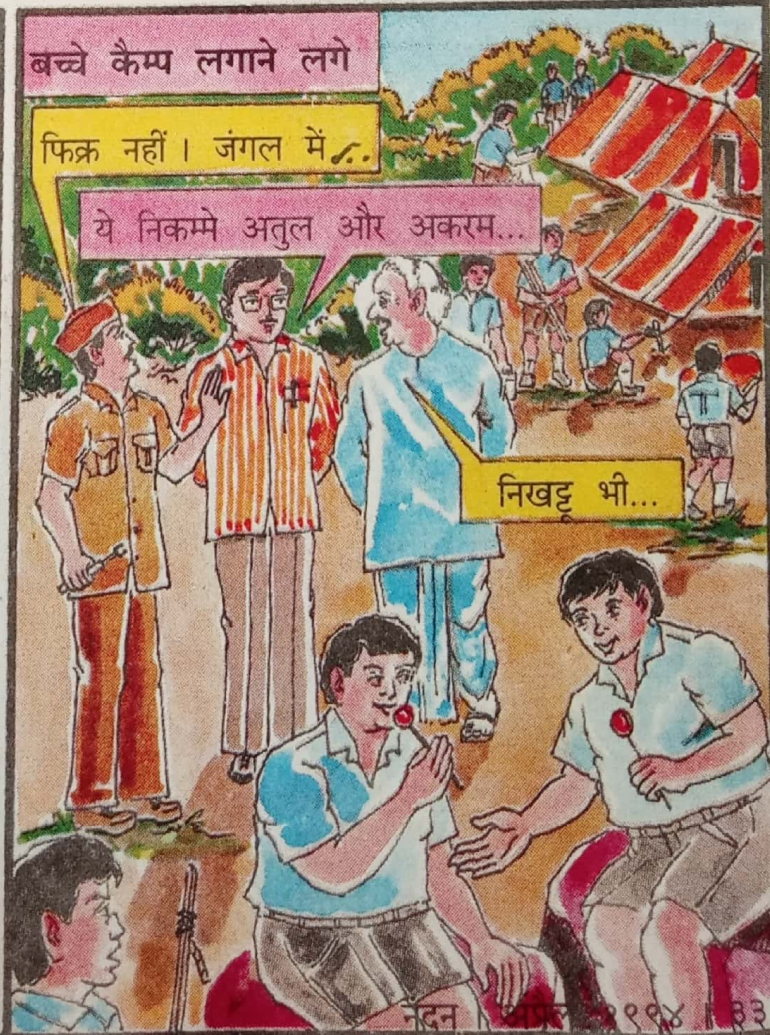
अध्यापकों के कहने पर भी अतुल और अकरम न उठे, तो
दूसरे बच्चे काम कर रहे हैं और तुम दोनों....शर्म नहीं आती ।
सबके सामने डांट .... जानते नहीं मेरे पिता जी ...
कहने दो ... सुनो मत ।
रात हुई, तो बच्चों को कैम्पों में सोने को कह, अध्यापक लाठियां और टार्च लेकर ....
वह ... वह ... उधर ... शायद शेर या तेंदुआ
पूरी चौकसी रखनी है । बेशक खतरा नहीं ... फिर भी ...
बूढ़े अध्यापक ने पीछे देखा ....
कोई जंगली जानवर ...
कौन ... शेर... नहीं ... तेंदुआ ... टार्च ...... जलाओ ... जल्दी ... यह भी नहीं जलती ...
टार्च ! जलती नहीं ....
आग सुलगा दो ...
दियासलाई कैम्प में ... लाता हूं ...
एक अध्यापक दियासलाई लाने कैम्प में घुसा ही था कि ....
उफ, यह कौन कूदा ? बचाओ ! बचाओ ! कैम्प में शेर ...

चीख-पुकार सुन सारे बच्चे घबराकर गिरते-पड़ते ...
जल्दी करो। ... जल्दी ...
भागो ! शेर आया !
बस में ...
बस में ...
सब बस में बैठ गए। दरवाजे कस कर बंद कर लिए गए। अचानक ....
धम्म
धम्म
हिम्मत रखो, डरो मत। वह अंदर नहीं आ सकता ....
शायद अब बस की छत पर ...
हे भगवान ...
दो घंटे बाद धमाधम बंद हो गई। किसी तरह रात बीती ....
धूप खिल गई। खतरा टला .. अब बाहर ... ।
हां, छत पर भी कोई आवाज नहीं। ...
मगर हम बाहर नहीं जाएंगे ...
पहले ड्राइवर साहेब ...
अचानक अकरम उठा। बोला—'बाहर मैं जाऊंगा।'
अकेले ! पागल है क्या ?
नहीं अकरम। बाहर शेर हुआ तो ...
कुछ नहीं होगा। शेर हुआ तो मैं उसे मार डालूंगा !

अकरम दरवाजा खोल बाहर कूद गया। सीना तानकर टहलने लगा। देखा-देखी सब बच्चे ....
कोई नहीं ...
आओ खेलें !
पहले लाइन बनाओ। गिनती होगी।

गिनती में अतुल कम निकला। सबके चेहरे फक्क— 'कहां गया अतुल ? कहीं तेंदुआ तो उठाकर नहीं ले गया उसे!'... तभी ....
आक् ... छीं ...
छत पर कौन है ?
शायद अतुल ...
वह कैम्प में भी नहीं दीखा ...
हां, वही है।
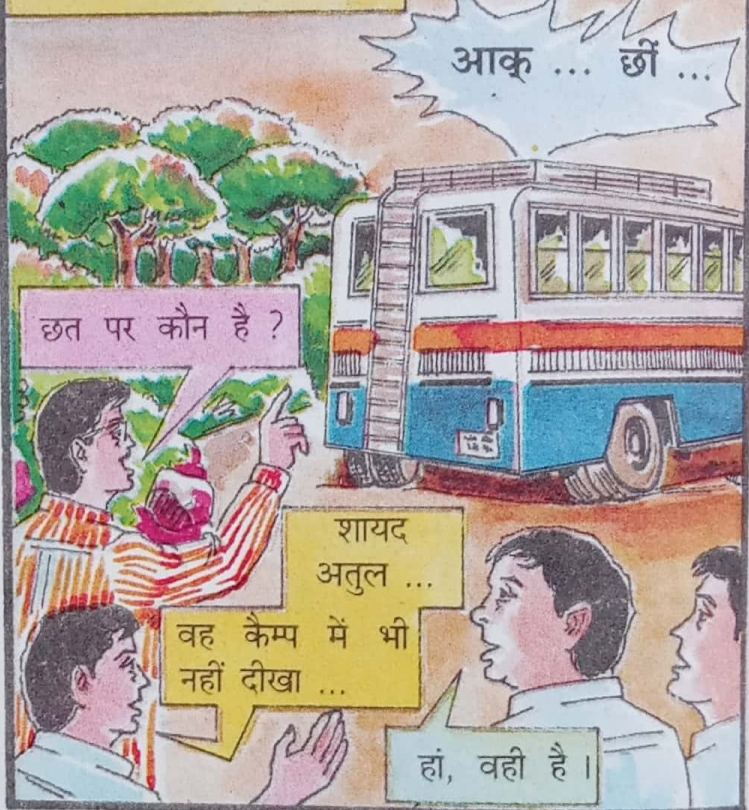
छत पर अतुल ही था। बच्चों ने राहत की सांस ली, किंतु अध्यापकों को दाल में कुछ काला लगा ...
छत पर क्यों चढ़े ?
दो टार्चें ... इतने सारे सैल ... हमारी टार्चों के हैं न ... हमें मूर्ख बना रहे थे ?
शुक्र है, मेरा नाम नहीं लिया ...
कैम्प में टीचर जी पर तकिया तो मैंने ही फेंका था ...
मैं ... मैं ... ही झाड़ी से टार्च चमका कर ...
आपने हमें सबके सामने डांटा ... इसीलिए ...

और स्कूल में ....
टीचर ने भले के लिए डांटा, पर तुमने इन सब को सारी रात परेशान ... अंधेरे में तुम पर कोई जंगली जानवर हमला कर देता तो ....
मुझे क्षमा कर दीजिए। अब टीचर जी की डांट का बुरा नहीं मानूंगा ...
मैंने भी इस शरारत में साथ देकर गलती की ....
कुलदीप

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : ३०, अंक : ६, अप्रैल '९४, नई दिल्ली; चैत्र-वैशाख, शक सं. १९१६

चित्र में बाएं से दाएं-सर्वश्री कृष्ण कुमार बिड़ला, श्री विद्याचरण शुक्ल, श्री विजय तेंदुलकर और न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र।

नाटककार को सरस्वती सम्मान

नई दिल्ली। मराठी के प्रसिद्ध नाटककार विजय तेंदुलकर को के.के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से सरस्वती सम्मान प्रदान किया गया। केंद्रीय जल संसाधन मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने तीन लाख रुपए का चैक, शाल, प्रशस्तिपत्र तथा स्मृति चिह्न श्री तेंदुलकर को भेंट किए।

उन्होंने प्रधानमंत्री का भाषण भी पढ़ा। प्रधानमंत्री ने कहा था—'श्री तेंदुलकर की रचनाओं में समाज की समस्याओं एवं बुराइयों को बहुत अच्छे ढंग से उठाया गया है।'

के.के. बिड़ला फाउंडेशन के अध्यक्ष और सांसद श्री कृष्णकुमार बिड़ला ने कहा—"फाउंडेशन 'सरस्वती सम्मान' प्राप्त कृतियों या उस लेखक की किसी अन्य रचना को मूल भाषा से अन्य भारतीय भाषा में अनुवाद और प्रकाशन का कार्य शुरू करेगी।"

श्री बिड़ला ने आगे कहा कि भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने का एक प्रभावशाली साधन अनुवाद भी है। अनुवाद को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारा साहित्य हमेशा ही शाश्वत मूल्यों से प्रेरित रहा है। हमारे रचनाकारों ने सदा हमारी राष्ट्रीय चेतना में प्राण फूंके हैं। श्री बिड़ला ने तेंदुलकर के नाटकों की प्रशंसा की।

श्री तेंदुलकर ने कहा कि यह सच है कि मैंने जो जिया है और अपने इर्द-गिर्द दूसरों को जीते देखा है, लिखते वक्त मैं उसके प्रति ईमानदार रहा हूं। मैंने अपने युग से बेईमानी नहीं की। लिखने के अलावा और कुछ मुझसे नहीं हो सकता था।

हिंदुस्तान टाइम्स समूह की निदेशिका श्रीमती शोभना भरतिया ने कहा कि तेंदुलकर सिर्फ अच्छे लेखक ही नहीं हैं, उन्हें मनुष्य के स्वभाव की भी गहरी जानकारी है। श्रीमती भरतिया ने अतिथियों को धन्यवाद भी दिया।

इससे पहले सरस्वती सम्मान डा. हरिवंशराय बच्चन तथा श्री रमाकांत रथ को दिया जा चुका है।

वाहन चालकों के लिए

चंडीगढ़। यहां के वैज्ञानिकों ने नया कंप्यूटर बनाया है। यह असावधानी से वाहन चलाने वालों की जांच करेगा। ब्रेक लगाने, क्लच दबाने से लेकर यह चालक की दृष्टि को भी परखेगा।

रोबोट बताएगा रास्ता

ब्रिसबेन। आप जंगल में रास्ता भूल गए हैं, कोई बात नहीं। अगर एक नन्हा सा रोबोट आपके साथ हैं तो वह सही रास्ता ढूंढ़ देगा। इस रोबोट से रास्तेभर कपूर की गंध निकलती रहती है। इसी के सहारे यह वापस रास्ता ढूंढ़ लेता है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

नंदन बाल समाचार

दया, मैत्री और दान से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं है ।—शुक्राचार्य

बच्चों के नाटक

राजधानी से बहुत दूर नहीं है मेरठ शहर । वहां एक स्कूल है ऋषभ अकादमी । स्कूल पुराना नहीं है लेकिन अच्छी पढ़ाई और साफ-सुथरा भवन । हाल में स्कूल की ओर से बच्चों की नाटक प्रतियोगिता हुई । अनेक स्कूलों ने उत्साह से भाग लिया ।

अकादमी के व्यवस्थापक ने काफी बड़ी और सुंदर वैजयंती (ट्राफी) तैयार कराई । वैजयंती प्रथम पुरस्कार पाने वाले स्कूल को दी गई । इसके अलावा कलाकारों के लिए सौ इनाम और भी । समारोह में मैंने कहा कि जो काम दिल्ली वाले न कर पाए, वह जैन बंधुओं ने कर दिखाया ।

बच्चों के नाटकों को बढ़ावा देने की बहुत जरूरत है । हर बड़े शहर में सुंदर वैजयंती रखी जाएं और प्रतियोगिताएं हों । इस तरह बाल-नाटक को बढ़ावा मिलेगा । बच्चे भटकाव से बचेंगे ।

हमारे मेहमान

जाने-माने नाटककार श्री विजय तेंदुलकर ने बच्चों के लिए भी छह नाटक लिखे हैं । ये नाटक हिन्दी में 'चौपट राजा' और 'पापा खो गए' पुस्तकों में हैं ।

'नंदन' देखकर वह बहुत खुश हुए । कहने लगे—"बच्चों के लिए लिखना बहुत मुश्किल काम है । मैं तो बच्चों से बहुत कुछ सीखता हूं । पूरी दुनिया को बच्चों से सीखना चाहिए । बड़ों का मन बच्चों जैसा सरल हो, तभी बात बने ।"

श्री तेंदुलकर का मानना है कि बच्चों पर कुछ लादना नहीं चाहिए । बच्चों के नाटकों के बारे में उन्होंने कहा कि जब वे नाटक खेले गए, तो उन्होंने बच्चों से कहा कि जरूरी नहीं, वे वही बोलें, जो लिखा है । बल्कि वे जो चाहें, बोल सकते हैं । श्री तेंदुलकर चाहते हैं—कि बच्चों पर रोक-टोक न हो । बड़ों को हमेशा यही नहीं सोचते रहना चाहिए कि वे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं ।

श्री तेंदुलकर ने बड़ों के लिए बहुत— से नाटक लिखे हैं । दिल्ली में उनके नाटक 'जाति न पूछो साधु की' के सौ प्रदर्शन हो चुके हैं ।

भारत से प्यार

उलानबातार । मंगोलिया के चारनाव अपने को धर्मपाल कहते हैं । उन्हें गंगा की धरती से बहुत प्यार है । वह उनासी वर्ष के हैं । उनकी अंतिम इच्छा है कि वह एक बार भारत भूमि के दोबारा दर्शन कर लें । वह हिन्दी बोलते हैं । उनके बच्चों को भी भारत बहुत पसंद है । वह तीस बरस तक भारत में रहे हैं । १९७१ में परिवार समेत मंगोलिया वापस चले गए थे ।

बच्चों के विकास से देश का विकास

—डा. शंकरदयाल शर्मा

नई दिल्ली । बाल मजूरों और शहरों में रह रहे बेघर बच्चों की समस्याओं को गम्भीरता से निपटाना चाहिए । यह कहना है राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा का । उन्होंने कहा कि बाल मजूरों और बेघर बच्चों की संख्या बढ़ती जा रही है । करोड़ों बच्चे मजूरी करके पेट भरने को मजबूर हैं ।

देश का विकास बच्चों और युवाओं के कल्याण से जुड़ा है । हमारे समाज में अब भी बेटियों को उचित महत्व नहीं दिया जाता । बेटियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के पूरे मौके दिए जाने चाहिएं । अब समय आ गया है कि हम बच्चों की भलाई के लिए मैदान में उतर पड़ें ।

चार साल से कम दाखिला नहीं

नई दिल्ली । अब नर्सरी कक्षा में चार साल से कम उम्र के बच्चों को दाखिला नहीं दिया जाएगा । दिल्ली के शिक्षा मंत्री श्री साहिबसिंह वर्मा का कहना है कि यह फैसला यशपाल समिति की सिफारिशों पर किया गया है । पहली कक्षा में पांच वर्ष के बच्चों को दाखिला मिलेगा ।

कांटों के बिस्तर पर कीर्ति

धनबाद । कीर्ति पांचवीं कक्षा में पढ़ती है मगर कराटे में ब्लैक बैल्ट हासिल कर चुकी है । नई दिल्ली में एक प्रदर्शन के दौरान उसके पेट के ऊपर से कार गुजर गई । एक तख्ते में कीलें लगी थीं । उस पर वह लेट गई । फिर बड़ा-सा पत्थर उसके पेट पर रखा गया । पत्थर को चूर-चूर कर दिया गया और कीर्ति मुसकराते हुए उठ खड़ी हुई । यह वह प्राणायाम के जरिए करती है ।

खिलौनों की भाषा

बम्बई । बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में उनके जीवन के पहले छह वर्ष महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । इसी उम्र में खिलौनों का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है । यह कहना है चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन के संस्थापक श्री देवेन्द्र देसाई का । उनका कहना था कि खिलौने बच्चों का मनोरंजन ही नहीं करते बल्कि उनकी कल्पना को बढ़ाते हैं । इसीलिए खिलौनों से शिक्षा देना भी सबसे अच्छा है । खिलौनों की कोई भाषा नहीं होती फिर भी वे बोलते हैं । बच्चे खिलौनों को दोस्त बनाते हैं । बातचीत करते हैं । इससे उन्हें बहुत खुशी होती है । टाय फाउंडेशन बच्चों के लिए खिलौना-संग्रहालय बनाने में भी मदद करता है ।

ऊपर की ओर बहा

खंडवा । पानी नीचे बहते तो सबने सुना है मगर बिना किसी यंत्र के सहारे पानी का चालीस फुट ऊपर पहुंचना आश्चर्य की बात है । राठिया आदिवासियों ने छोटी नालियां और छोटे पोखर बनाकर, घुमावदार रास्ते से पानी को ऊपर पहुंचा दिया और बंजर पड़ी पहाड़ी को हरा-भरा बना दिया ।

स्तूपों का पता चला

भोपाल । यहां से बीस किलोमीटर दूर सांची जैसे कई स्तूपों का पता चला है । ये सांची जितने ही पुराने हैं । भारत सरकार ने युनेस्को से आग्रह किया था कि इन स्तूपों का सही रख-रखाव किया जाए । भारत के साथ-साथ जापान सरकार इन स्तूपों की देखभाल करेगी ।

पनडुब्बी जाल में

वारसा । मछुओं ने जाल फैलाया हुआ था । अचानक लगा जैसे जाल में कोई बड़ी मछली फंसी हो । मगर वह मछली न होकर एक भारी भरकम पनडुब्बी थी ।

शेरों के नए घर

बड़ोदरा । एशियाई सिंह ईरान से लेकर भारत तक पाए जाते थे । मगर अब ये केवल गुजरात के गिर जंगलों में ही मिलते हैं । अब कोशिश की जा रही है कि गिर के अलावा इन शेरों को दूसरी जगह भी बसाया जाए । इन नए घरों की तलाश गुजरात के अलावा राजस्थान और मध्यप्रदेश में भी की जा रही है ।

घोड़े पर दुल्हिन

भोपाल । यहां के लोग चकित रह गए जब उन्होंने दूल्हे के बजाय दुल्हिन को घोड़े पर चढ़कर बारात ले जाते देखा । भीड़ इतनी अधिक जमा हो गई कि पुलिस बुलानी पड़ी । राजस्थान के पालीवाल जोशियों में दुल्हिन के घोड़े पर चढ़ने की प्रथा है । जब भी बेटी की शादी होती है, वह घोड़े पर चढ़कर पूरे शहर का चक्कर लगाती है । बाद में उसकी बारात आती है ।

गोशालाएं बनेंगी

नई दिल्ली । दिल्ली में गोशालाएं बनाई जाएंगी । इनकी देखभाल सरकार और गैर-सरकारी संस्थाएं करेंगी । पशुओं की रक्षा के लिए आवाज उठाने वाली संस्थाओं की विशेष मदद ली जाएगी । गोशालाएं गांवों के पास बनाई जाएंगी । इनमें सड़कों पर घूमते आवारा पशुओं को भी रखा जा सकेगा ।

छठी सदी के औजार

गेलीली । इस्राइल में पानी का पाइप बिछाने के लिए खुदाई हो रही थी । तभी कुछ लोहे के औजार मिले । इनमें कुल्हाड़ी, फावड़ा, संड़सी आदि थे । पता चला कि ये औजार छठी सदी के हैं । सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि इनमें और आज प्रयोग होने वाले औजारों में खास अंतर नहीं है ।

नन्हे समाचार

□ वेलु तंजावुर जिले के थोट्टाकाडु गांव में रहता है । सत्तर वर्ष पहले वह दक्षिण अफ्रीका से आया था । उसका एक चचेरा भाई वहीं रह गया था । इतने वर्षों बाद अब वे दोनों फिर मिले तो गले मिलकर रो पड़े ।

□ जोशीमठ में यात्रियों के लिए एक रज्जु मार्ग बनाया गया । यह भारत का सबसे लम्बा और एशिया में सबसे ऊंचा है ।

□ ब्राजील में बस यात्रा के दौरान एक व्यक्ति ने कहा—"आज मेरा जन्म दिन है ।" और उसने सबको इस खुशी में शरबत पिलाया । थोड़ी देर में सब बेहोश हो गए । वह व्यक्ति उनका कीमती सामान लेकर रफूचक्कर हो गया ।

□ हिसार में एक कुत्ता बीमार था । चलने-फिरने से लाचार । मालिक से उसका कष्ट न देखा गया । उसने कुत्ते को विषैला रसायन पिला दिया । उसका विचित्र प्रभाव हुआ । कुत्ता स्वस्थ हो गया ।

□ अमरीकी अंतरिक्ष संस्था ने चंद्रमा के नए चित्र जारी किए हैं । इन्हें हाल में एक उपग्रह से खींचा गया था ।

□ कहते हैं स्काटलैंड की लाक झील में भयानक जल दानव रहता है । कुछ लोग पनडुब्बी में बैठकर उसे खोजने के लिए झील में उतरेंगे । कई लोगों ने उसके फोटो उतारने का दावा किया है ।

□ पश्चिम बंगाल और कर्नाटक में नए नोट छापने के लिए कारखानों का निर्माण किया जा रहा है ।

□ भारत में बनी साइकिल रिक्शा के लिए यूरोप के कई देशों से मांग आई है ।

□ लंदन मधुमक्खी पालक समिति ने एक सलाहकार रखा । उसका वेतन था नकद नहीं, शहद ।

□ शिमला के पास एक यात्री बस ५०० मीटर गहरे खड्ड की ओर फिसली लेकिन एक वृक्ष के तने से टकराकर अटक गई । उसमें बैठे सभी यात्री बच गए ।

सचित्र समाचार
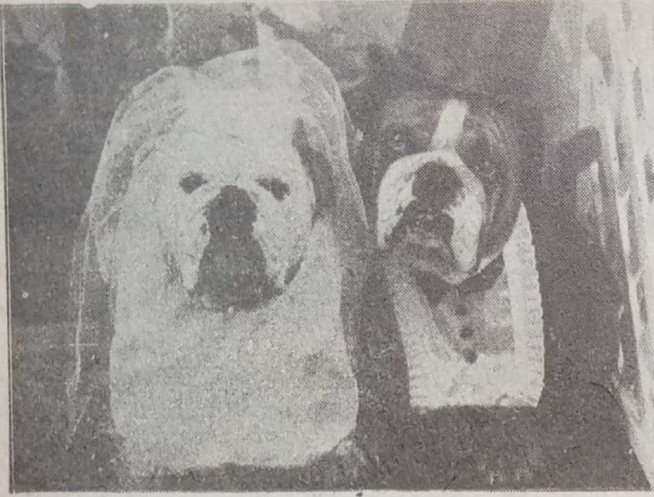
↑ सानफ्रांसिस्को में विवाह के बाद दूल्हा-दुल्हिन ने फोटो खिंचवाया।

मेरठ में बाल गीतकार सम्मेलन हुआ। संयोजन सहायक सूचना निदेशक श्यामकुमार दास ने किया।

↑ क्रेजी ब्वाय : जापान के मिनोल्टा पुरस्कार से सम्मानित। उनके चित्र 'नंदन' में भी छपते रहे हैं।

दिल्ली पुलिस ने बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता की : चित्र में पुरस्कृत बच्चे। ↑

← ये मां बेटे नहीं हैं। यह बौना दुनिया की सबसे छोटी नस्ल का घोड़ा है।

नई दिल्ली में बागवानी महोत्सव : फूलों से बने पशु-पक्षियों ने सबका मन मोह लिया।

→ फ्रांस में रहने वाली ११९ वर्ष की दादी मां जीन कालमेंट जन्मदिन के केक के साथ।

दंड को दंड
सतयुग में पृथ्वी के राजा थे मनु। उनके पुत्र का नाम था इक्ष्वाकु। एक दिन...
अब राज्य तुम संभालो। न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करो। मैं तपस्या...
जो आज्ञा!
इक्ष्वाकु राज्य करने लगा। उसका सबसे छोटा बेटा था दंड...
महाराज के सभी पुत्र योग्य हैं, किंतु दंड... न पढ़ा, न लिखा...
महामूर्ख है। भगवान जाने क्या करेगा!
इक्ष्वाकु भी दंड की ओर से चिंतित रहता। लाख समझाने पर भी दंड न सुधरा तो...
मैं तुम्हें सौ योजन भूमि देता हूं। अपना राज्य स्वयं स्थापित करो। यहां से जाओ...
ठीक है। मैं सब कर लूंगा!
उस भूमि खंड पर दंड ने सुंदर नगर बसाया। एक दिन शुक्राचार्य वहां आए...
मुझे किसी ने स्वीकार नहीं किया। आप कीजिए। मेरे पुरोहित बन जाइए...
तथास्तु।
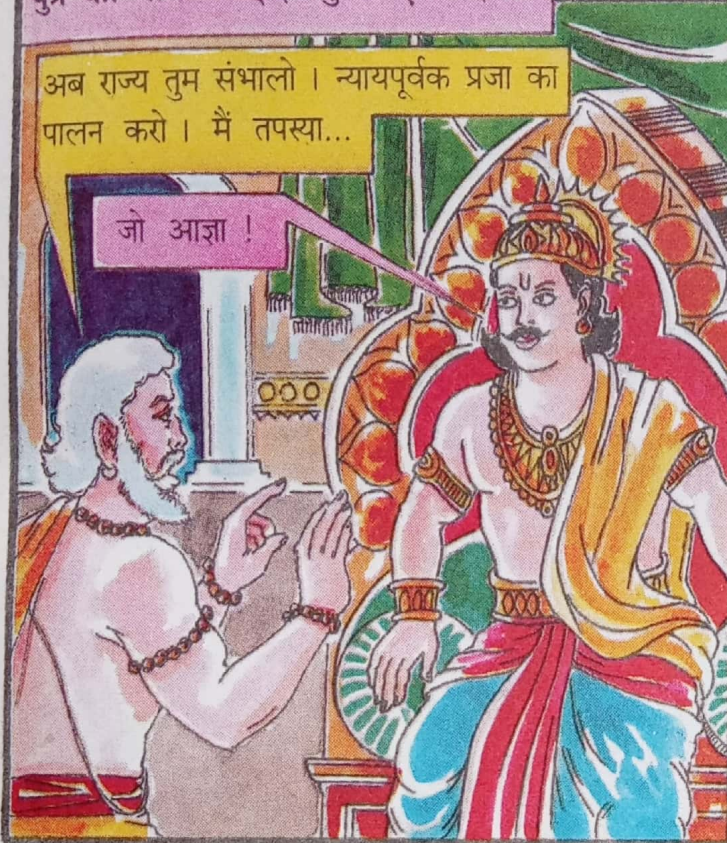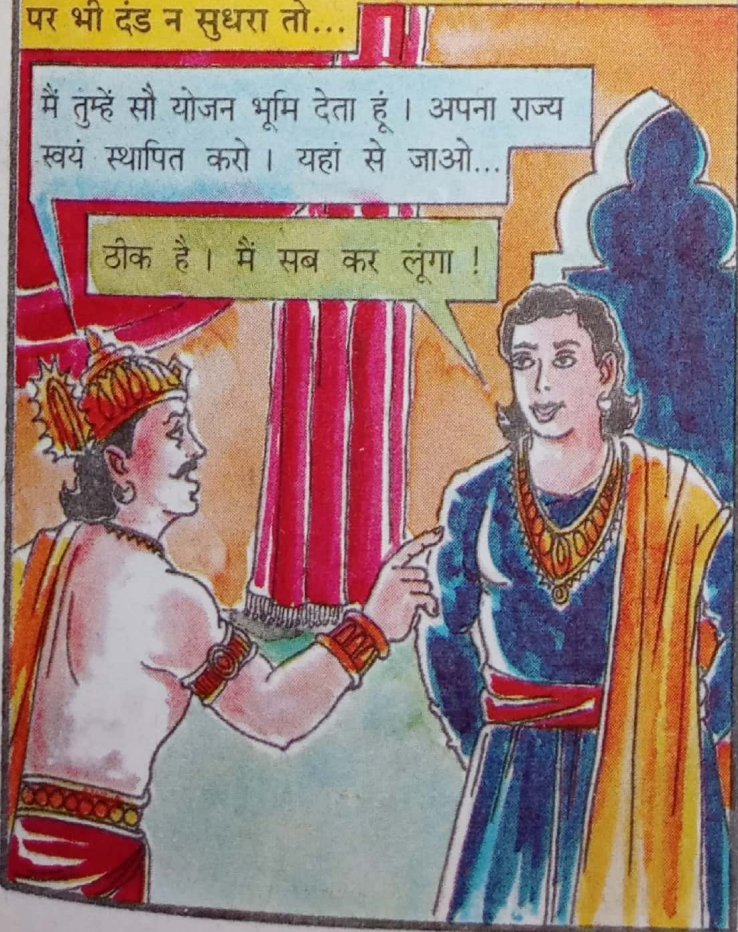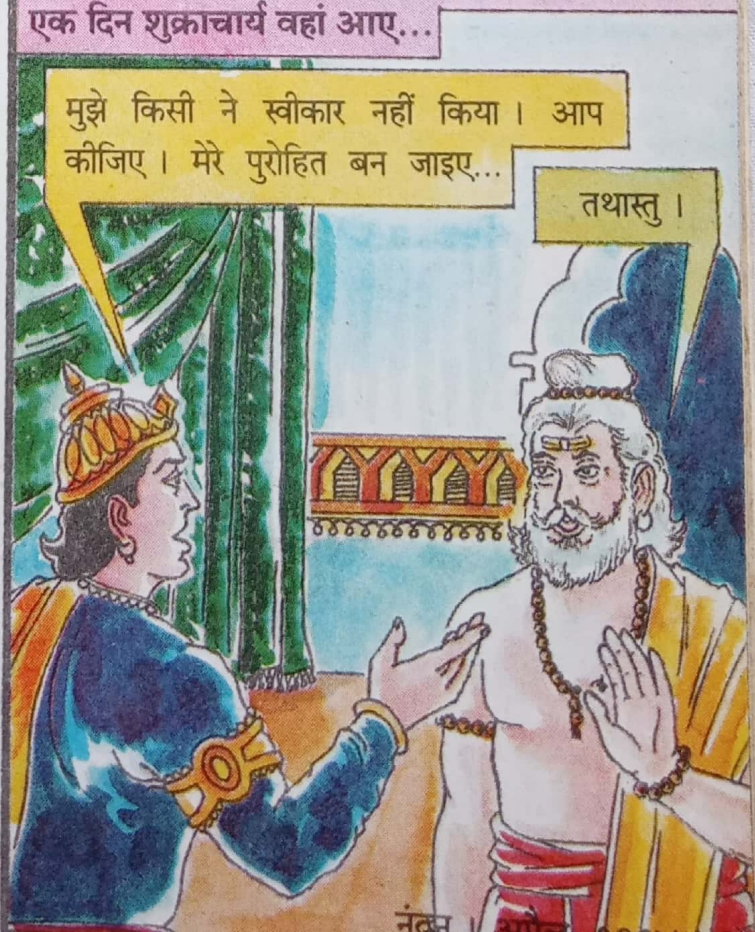
एक बार दंड सैनिकों के साथ शिकार खेलते-खेलते...
वह आश्रम... थक गया हूं... वहीं चलें। किसका है ?
पुरोहित शुक्राचार्य जी का... राजन्
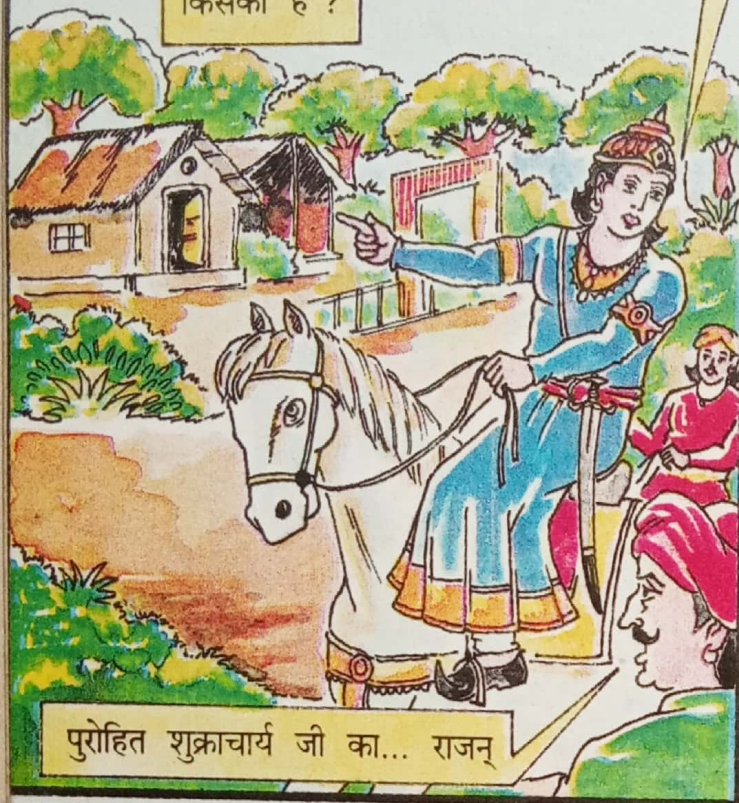
आश्रम के बाहर ही...
अरे, इतनी सुंदर... इससे कहो हम से विवाह कर ले...
आप के ही योग्य है राजन्...
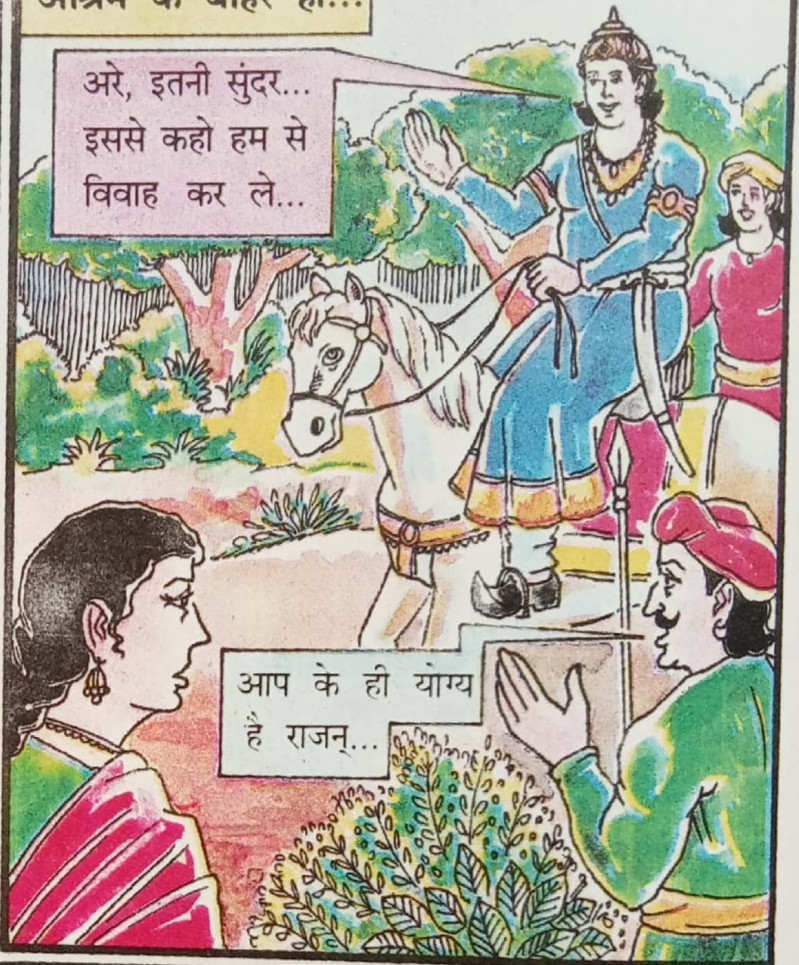
किंतु कन्या विवाह की बात सुनते ही घायल शेरनी की तरह बिफर उठी। दंड ने इसे अपना अपमान समझा...
इसे बंदी बनाकर महल में ले चलो। देखता हूं कैसे विवाह नहीं करती...
बाबा, बचाओ !
शुक्राचार्य !

दंड का यह व्यवहार देख शुक्राचार्य कुपित हो उठे..
यह मेरी पुत्री है नराधम ! तू राजा बनने योग्य नहीं। सात दिन के अंदर तेरे राज्य में धूल की वर्षा होगी। फिर अग्निकांड...
मैं राजा हूं पुरोहित ! देख लूंगा !
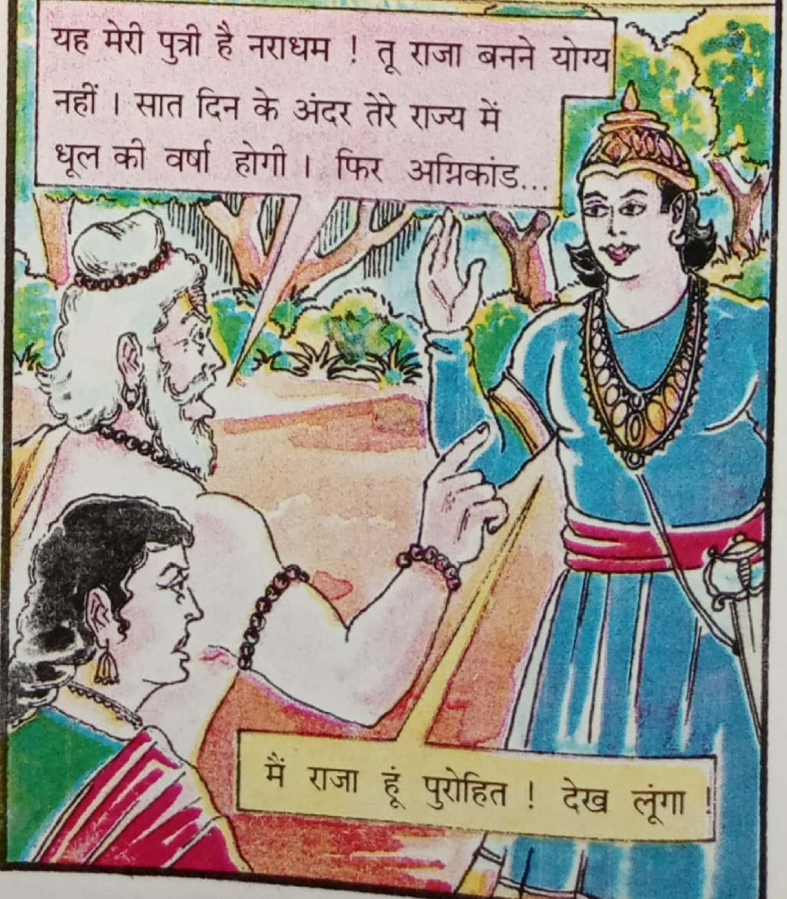
दंड ने नगर में लौटते ही...
घोषणा कर दो । सात दिन तक कोई आग नहीं जलाएगा । चारों ओर दूर-दूर तक पानी बहा दो । धूल का एक कण भी न उड़ पाए...
जो आज्ञा महाराज..,.

छह दिन शांति से बीते ।सातवें दिन दंड महल की छत पर शुक्राचार्य के शाप की हंसी उड़ा रहा था कि...
क...ड़...क
उल्का-पात !
?
?

दंड के सारे राज्य पर उल्का-पात हुआ। आग लग गई । जल भाप बनकर उड़ा, तो धूल भरी आंधियां चल पड़ीं...
महा विनाश !
बचाओ !
बचाओ !
प्रलय !

सब कुछ भस्म हो मिट्टी से ढक गया । उस पर घने जंगल उग आए। वही 'दंडकारण्य' कहलाया । उसी वन में 'सीता हरण' हुआ था ।
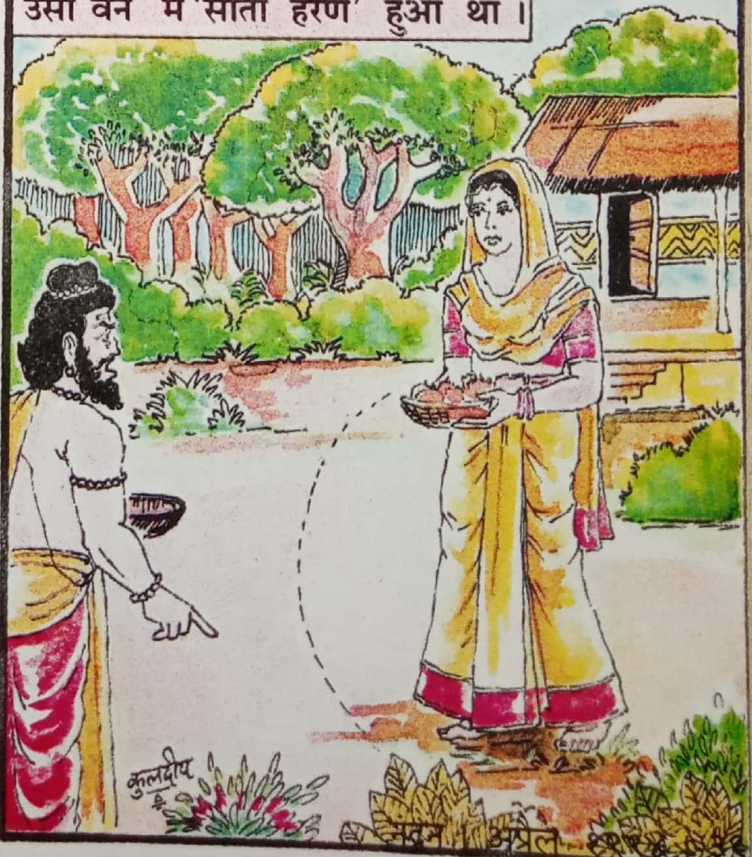
रिंग का राजा
कुश्ती मस्ती !
पछाड़ना, उछालना, उठाना,
पटकना और अपने विरोधी को जकड़ना
बस यूँ कहिए कुश्ती में है मस्ती।
जकड़ने का खेल : जकड़कर पकड़ने का खेल. कुश्ती का खेल 3 तरह से खेला जाता है:
बेल्ट और जैकेट : इसमें पहलवानों के सिर्फ कपड़े पकड़े जाते हैं.
कैच होल्ड स्टाइल : एक दूसरे के शरीर को ज़ोर से जकड़ने की कोशिश.
खुला स्टाइल : कहीं भी पकड़ सकते हैं लेकिन कपड़ों को नहीं.
ज़ोरदार पकड़, मज़बूती, दम, साहस और दुरूस्ती... यही है खूबी पहलवान की और यही खूबियां हैं लखानी जूतों में. तो पहनिए अपना लखानी जूता और हो जाइए तैयार मुकाबले के लिए.
FUN SHOES
Lakhani
THE FOOTWEAR PEOPLE
Lakhani
The Footwear People
Chaitra Leo Burnett-D LSC 5793 HIN

हार का उपहार

—हरफूल सुईवाल

एक राज्य था करणसर। वहां का राजा नंददेव वीर और दयालु था। उसकी पड़ोसी राजाओं से मित्रता थी। पड़ोसी राजा भी उसका सम्मान करते थे।

नंद का बेटा राजकुमार क्रांतिदेव अपने पिता के समान वीर था। उसकी बहादुरी की चर्चा होती ही रहती थी। पर वह अपनी वीरता सुन, अहंकार से झूम उठता था।

एक बार नंददेव राजकुमार के साथ शिकार करने गया। जंगल में घुसते ही राजकुमार अपने पिता से आगे निकल गया। नंददेव उसके पीछे था।

राजकुमार ने नदी के किनारे जल में समाधि लगाए एक महात्मा को देखा। वहीं एक मृग पानी पी रहा था। राजकुमार ने निशाना साधकर, एक तीर मृग पर छोड़ दिया। तीर लगते ही मृग ढेर हो गया।

राजकुमार सरपट घोड़े को दौड़ाकर वहां पहुंचा। वह अपनी वीरता के मद में चूर था। उसने महात्मा को देखा। महात्मा की आंखें मृग की चीख से खुल गई थीं। उनकी निगाह राजकुमार पर थी।

"इसमें भला आश्चर्य करने की क्या बात है महात्मा जी! यह तो राजकुमार क्रांतिदेव का एक छोटा-सा कमाल है।" —इतना कहकर राजकुमार ने घोड़े को एड़ लगाई। घोड़ा सरपट दौड़ाता हुआ दूर निकल गया।

राजकुमार की बातें सुनकर महात्मा को क्रोध आ गया। उन्होंने अपनी अंजलि में पानी भरकर कहा—"घमंडी राजकुमार ! मेरा शाप है कि अब तुम्हारी यह वीरता कभी तुम्हारे काम नहीं आएगी। जब किसी पर तुम अपना वार करोगे, तुम्हारा वह वार खाली जाएगा।" —फिर उन्होंने पानी धरती पर गिरा दिया।

राजकुमार तो आगे निकल गया था। लेकिन नंददेव तब तक वहां पहुंच गया था। उसने सामने मरे पड़े मृग को देखा। उसने महात्मा का शाप भी सुन लिया था। वह समझ गया कि राजकुमार ने मृग का वध किया है। इसलिए महात्मा ने राजकुमार को शाप दे दिया है। नंददेव यह देख उदास हो गया। उसने महात्मा से प्रार्थना की —"महात्मा जी, राजकुमार को इतनी कड़ी सजा न दीजिए।"

महात्मा ने कहा— "राजन, राजकुमार को उसके अहंकार की सजा मिलनी ही चाहिए।"

"आप उसे जो चाहे, सजा दें। पर उसकी बहादुरी उसे वापस लौटा दें।" —कहते हुए नंददेव उनके चरणों में लोट गया।

महात्मा के मन में दया आ गई। राजा का मुरझाया चेहरा खिल उठा।

"राजन ! जिस दिन राजकुमार किसी वीर नारी से पराजित होकर, उसे अपने से बहादुर मान लेगा और

अपनी वीरता के अहंकार को तज देगा, उस दिन मेरा शाप खत्म हो जाएगा।''–इतना कहकर महात्मा अपने आश्रम की ओर बढ़ गए।

राजा दुखी मन से महल में लौट आया। वह महात्मा के शाप को याद कर उदास हो जाता था। वह इस घटना को किसी से कह भी नहीं सकता था।

एक दिन नंददेव का दरबार लगा था। उस समय जयगढ़ राज्य का एक दूत उपस्थित हुआ। राजा नंददेव को प्रणाम कर, वह बोला— ''महाराज, राजकुमारी चंद्रावती का इसी पूर्णिमा को स्वयंवर है। दूर-दूर से आए राजकुमारों की युद्ध प्रतियोगिता के बाद राजकुमारी के वर का चयन होगा। अतः जयगढ़ नरेश ने आपको और राजकुमार को भी निमंत्रण भेजा है।''

दूत की बात सुन, नंददेव विचारों में डूब गया कि स्वयंवर में राजकुमार को भेजे या न भेजे।

नंददेव के आदेश से दूत को अतिथिशाला में ठहरा दिया गया। दरबार में राजकुमार भी था। स्वयंवर की बात सुनकर वह राजकुमारी चंद्रावती से विवाह की बात सोचने लगा।

अगले दिन राजकुमार राजा से बोला— ''मैं जयगढ़ के स्वयंवर में जाना चाहता हूं।'' यह सुन राजा चुप ही रहा।

नंददेव को चिंता में डूबा देख, राजकुमार ने पूछा— ''आप कुछ चिंतित लगते हैं?''

—''हां बेटा, तुमने एक दिन शिकार करते हुए एक मृग को मार गिराया था। वह मृग किसी महात्मा का था। क्रोध में महात्मा ने तुम्हें शाप दे दिया था कि अब तुम्हारी वीरता कभी काम नहीं आएगी।''

राजकुमार हंसकर बोला— ''पिता जी, आप बेकार चिंता करते हैं। मेरी भुजाओं में आज भी वही ताकत है जो पहले थी। आप शाप की बात भूल जाएं और मेरी बहादुरी पर विश्वास करें।''

—''बेटा, मेरी भी इच्छा है कि चंद्रावती जैसी गुणवती राजकुमारी तुम्हारी पत्नी बने। एक बार उसने पड़ोसी राज्य पर हमला बोल दिया था। जीत उसी की हुई थी। सिद्ध महात्मा का शाप खाली नहीं जाएगा। तुम्हारी वीरता अब बेकार हो चुकी है।''

पर राजकुमार वहां जाने की जिद पर अड़ गया। उसे अपनी वीरता पर विश्वास था। वह बोला— ''पिता जी, मैं चंद्रावती को पत्नी बनाकर लाऊंगा। मैं स्वयंवर में जरूर जाऊंगा। यदि चंद्रावती को जीत कर नहीं ला सका, तो लौटकर आपको कभी मुंह नहीं दिखाऊंगा।''

राजा चाह कर भी उसे स्वयंवर में जाने से नहीं रोक सका।

राजकुमार कुछ सैनिकों और चतुर मंत्री के साथ जयगढ़ की ओर चल पड़ा। राजकुमार के जाते ही राजा को राजकुमार के कहे वाक्य याद आ गए। उसने सोचा— 'यदि राजकुमार चंद्रावती से हार गया, तो वह यहां नहीं आएगा।' उसके मन में पुत्र मोह जाग उठा।

अब उसने पूर्णिमा के दिन जयगढ़ जाने का मन बना लिया।

स्वयंवर का दिन आ गया। वहां अनेक राजकुमार

उपस्थित थे। जयगढ़ नरेश की ओर से घोषणा हुई- 'सभी राजकुमारों को अपनी बहादुरी दिखाने का अवसर मिलेगा। जो विजेता होगा, वही राजकुमारी का वर होगा।'

तभी एक सैनिक तलवार लेकर उपस्थित हुआ। वह तलवारबाजी करने लगा। सैनिक की तलवारबाजी देख, सब हैरान थे। देखते ही देखते उसने अनेक राजकुमारों को हरा दिया। जो भी राजकुमार उसके सामने अपनी तलवार उठाता, वह दो-चार दांवों के बाद ही निहत्था हो जाता।

क्रांतिदेव अपनी बहादुरी दिखाने के लिए उतावला हो रहा था। बारी आते ही उसने तलवार उठाई और उस सैनिक के सामने पहुंचा। दोनों की तलवारें झनझना उठीं। सैनिक ने थोड़ी ही देर में उसे हरा दिया। सभी राजकुमार खिलखिलाकर हंस पड़े। क्रांतिदेव को ऐसी पराजय की आशंका नहीं थी। अब उस सैनिक की तलवार राजकुमार के सीने पर टिकी हुई थी।

राजकुमार पराजय स्वीकार कर, अपने स्थान पर बैठ गया। आज उसे पहली बार अपनी हार का अहसास हुआ था। पिता का कहा आज सच निकला था। वह पछताने लगा।

उस सैनिक को कोई राजकुमार हरा नहीं सका। सभी राजकुमार सैनिक का लोहा मान चुके थे।

क्रांतिदेव ने सोचा— 'मैं अब राजधानी नहीं लौटूंगा। इससे अच्छा है कि मैं इस वीर सैनिक के हाथों वीरगति प्राप्त करूं।' फिर उसने सैनिक को ललकार कर कहा— "सैनिक ठहरो। मैं एक बार फिर लड़ना चाहता हूं।" राजकुमार की बात सुन सैनिक के चेहरे पर मुसकान आ गई

उधर जन समुदाय के बीच साधारण वेश में खड़ा राजा नंददेव राजकुमार की चुनौती सुनकर कांप उठा। उसने सोचा —'वीरता के भ्रम में डूबा क्रांतिदेव अब जरूर अपने प्राण गंवाएगा।' उधर राजकुमार और सैनिक की तलवारें दोबारा बज उठीं।

दोनों की वीरता देखकर सभी अचम्भित थे। अंत में राजकुमार के एक ही वार से सैनिक की तलवार टूट गई। पसीने से लथपथ सैनिक गर्दन झुकाए चल पड़ा। सभी राजकुमार की वीरता पर मुग्ध थे।

राजकुमार के जीतते ही नंददेव समझ गया कि सैनिक के वेश में और कोई नहीं बल्कि राजकुमारी ही थी। उसके कानों में महात्मा के शब्द गूंजने लगे। वह बहुत खुश था क्योंकि आज उसका बेटा उस शाप से मुक्त हो गया था।

उधर मंच पर राजकुमारी ने पहुंचते ही क्रांतिदेव के गले में वरमाला डाल दी। तभी जयगढ़ नरेश ने कहा— "अभी आपने जिस सैनिक को राजकुमार क्रांतिदेव के हाथों हारते देखा था, वह राजकुमारी ही थी। राजकुमार क्रांतिदेव ने उसे हरा दिया है। अतः राजकुमारी ने क्रांतिदेव को अपना वर चुना है।"

यह सुन लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। राजा नंददेव भी नगर की ओर चल पड़ा। क्योंकि उसे भी बेटे और पुत्रवधू का वहां स्वागत करना था।

अगले दिन राजकुमार क्रांतिदेव चंद्रावती के साथ अपने नगर को रवाना हो गया। ●

आंख की रोशनी

—अखिलेश राय

एक था राजा विक्रांतसिंह। एक बार उसकी एक आंख खराब हो गई। उसने बहुत इलाज कराया। लेकिन आंख ठीक नहीं हुई। धीरे-धीरे उसकी उस आंख की रोशनी चली गई। वह परेशान रहने लगा। उसका राज-काज में भी मन नहीं लगता था। उसके दो बेटे थे। बड़ा था दिवाकरसिंह। छोटे का नाम था प्रभाकरसिंह।

एक दिन दरबार में एक महात्मा आए। राजा ने अपनी विपदा उन्हें सुनाई। महात्मा बोले—"राजन! आप अद्‌भुत और भव्य मंदिर का निर्माण कराओ। आपकी आंख ठीक हो जाएगी।"

राजा ने कुछ ही दिनों में भव्य मंदिर का निर्माण कराया। उसमें पूजा-अर्चना की। फिर भी राजा की आंख ठीक नहीं हुई। राजा को महात्मा पर बड़ा गुस्सा आया। पर वह विवश था।

एक दिन प्रभाकरसिंह ने राजा से कहा—"महाराज, आप मुझे धन दें। मैं अद्‌भुत और भव्य मंदिर का निर्माण कराऊंगा।" यह सुन पास में बैठे बड़े राजकुमार दिवाकरसिंह ने कहा—"महाराज, आपने मंदिर बनाने में काफी धन लगा दिया। फिर भी आपकी आंख ठीक नहीं हुई। इसे धन न दें। धन बर्बाद करने से क्या फायदा?"

लेकिन राजा ने प्रभाकरसिंह को मंदिर के लिए धन दे दिया। धन लेकर वह महल से निकल गया।

कई महीने बीत गए। प्रभाकर महल में नहीं लौटा। राजा ने दिवाकर से कहा—"बेटा, अपने छोटे भाई को ढूंढ़ो। देखो, वह कहीं मिल जाए।"

दिवाकर बोला—"महाराज, आप नाहक परेशान हो रहे हैं। जब तक उसके पास आपका दिया धन है, तब तक वह मौज-मस्ती करेगा। धन खत्म होते ही वह अपने आप लौट आएगा।" बातें हो ही रही थीं कि प्रभाकर आ गया। उसने राजा को प्रणाम किया।

राजा ने मंदिर के बारे में प्रभाकर से पूछा। प्रभाकर बोला—"महाराज, मंदिर तैयार है। आप चलकर मंदिर देख लें।" दिवाकर हंसते हुए बोला—"तुम महाराज को क्यों परेशान कर रहे हो? सारा धन बर्बाद कर दिया होगा और अब महाराज को और परेशान करने पर तुले हो।"

प्रभाकर ने फिर राजा से मंदिर देखने के लिए कहा। राजा बोला—"ठीक है, जब तुम कहते हो, तो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

राजा मंदिर देखने चला, तो दिवाकर भी साथ चल पड़ा। चलते-चलते वे एक गांव में पहुंचे। दिवाकर ने इधर-उधर नजर दौड़ाई। उसे कोई मंदिर नजर नहीं आया। उसने राजा से कहा—"महाराज, यहां कोई मंदिर नहीं है। प्रभाकर ने आपका सारा धन बर्बाद कर दिया।"

राजा ने दिवाकर को देखा। दिवाकर ने कहा—"महाराज, आप मेरे साथ थोड़ा और चलें। मैं आपको अद्‌भुत मंदिर दिखलाता हूं।"

राजा को एक जगह कुछ नए मकान दिखाई पड़े। वहां एक दवाखाना और एक पाठशाला थी। बच्चे पढ़ रहे थे। बच्चों ने प्रभाकर को देखा, तो दौड़े-दौड़े उसके पास आ गए।

राजा सारा मामला समझ गया। प्रभाकर कुछ कहता, उससे पहले ही राजा बोल पड़ा—"हां बेटा, वास्तव में तुमने दरिद्र नारायण की सेवा करके अद्‌भुत मंदिर का निर्माण किया है। गरीब किसानों की सेवा के लिए तुमने वास्तव में बहुत मेहनत की है। इस मंदिर में आकर मेरी आंख ठीक हो गई।"—कहते हुए उसने प्यार से अपना हाथ प्रभाकर की पीठ पर रख दिया। ●

हर दिन एक

—डा. पुनीत अग्रवाल

आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व की घटना है।

रणभंगा राज्य में रण बहादुर नाम के राजा राज्य करते थे। वह बहादुर होने के साथ-साथ दयालु व शांत स्वभाव के थे। वह बड़े-बूढ़ों और विद्वानों का आदर करते थे। उनके राज्य में चारों तरफ खुशहाली थी। एक दिन कोषाध्यक्ष की मृत्यु हो गई। कोषाध्यक्ष का इकलौता पुत्र था ज्वालाप्रसाद।

एक दिन ज्वालाप्रसाद राजा से मिला। उसने कहा— "महाराज, मेरे पिता अब नहीं रहे। कृपया आप मुझे उनके स्थान पर नियुक्त करने का कष्ट करें।"

राजा उसकी बात सुनकर सकते में आ गए। उन्होंने सोचा— 'कोषाध्यक्ष का पद अत्यंत जिम्मेदारी का होता है। शाही खजाने की चाबी भी उसी के पास रहती है। अभी मैंने इसे अच्छी तरह से परखा भी नहीं है।' यह सोचकर उन्होंने ज्वालाप्रसाद को एक सप्ताह बाद दोबारा आने को कहा।

सायंकाल राजा ने महामंत्री को बुलावा भेजा। राजा ने समस्या महामंत्री के सामने रखी। महामंत्री ने काफी सोचा-विचारा। फिर कोषाध्यक्ष के चुनाव के बारे में अपनी राय बता दी। कोषाध्यक्ष पद के लिए सुयोग्य व्यक्तियों को एक हफ्ते बाद दरबार में आने को कहा गया था।

सात दिन बाद ज्वालाप्रसाद सहित पंद्रह व्यक्ति दरबार में पहुंचे। ज्वालाप्रसाद को छोड़कर सभी व्यक्ति धनवान और सेठों के यहां काम करते थे।

महामंत्री ने कुछ सोचा, फिर बोला—"आज से प्रत्येक उम्मीदवार को एक-एक दिन के लिए कोषाध्यक्ष बनाया जाएगा।"

राजा ने ऐसा ही किया। उम्मीदवारों को एक-एक दिन के लिए कोषाध्यक्ष बना दिया गया।

सोलहवें दिन सभी प्रार्थी दरबार में इकट्ठे हुए। नियत समय पर वहां राजा पधारे। उन्होंने महामंत्री को

अपना फैसला सुनाने का आदेश दिया।

महामंत्री अपने आसन से उठा, राजा का अभिवादन किया। सभी उम्मीदवारों के कार्यकलापों की जानकारी दी। फिर उसने ज्वालाप्रसाद के कोषाध्यक्ष चुने जाने का निर्णय सुना दिया। यह फैसला सुन सभी हैरान थे।

महामंत्री बोला— "महाराज, मैं सभी प्रार्थियों से बेहद प्रसन्न हूं। सभी ने मन लगाकर मेहनत से देर रात तक काम किया। लेकिन ज्वालाप्रसाद को छोड़, सब चोर हैं।

"महाराज, मैं रात में चोर रास्ते से शाही खजाने में छिपकर बैठ जाता था। सबको देखा करता था। ज्वालाप्रसाद को छोड़कर ये सब देर रात तक काम करते थे और वहां से जाते समय अपने थैलों और जेबों में ढेर सारे जेवर, गिन्नियां, हीरे, जवाहरात आदि ले जाते थे। ये सोचते थे कि एक दिन के लिए कोषाध्यक्ष बने हैं, तो इस मौके को हाथ से न जाने दें। ज्वालाप्रसाद न केवल देर रात तक काम करता था, बल्कि जाते समय सभी तालों पर लगी मुहरों की स्वयं जांच भी करता था।"

इससे पहले कि सभी प्रार्थी भागते, सुरक्षा कर्मचारियों ने उन्हें पकड़ लिया।

राजा ने ज्वालाप्रसाद को कोषाध्यक्ष बना दिया। ज्वालाप्रसाद बड़ा प्रसन्न था। उसे अपनी ईमानदारी और मेहनत का फल जो मिल गया था। ●

खड़िया का घेरा

— डा. सुरेश धींगड़ा

नीलपद्म एक कुशल अभिनेता था। उज्जयिनी में रहता था। जिस नाटक में वह अभिनय करता, उसमें दर्शकों की भीड़ लग जाती।

नीलपद्म नियम से महाकाल के मंदिर में जाता था। उसका काफी समय मंदिर के पीछे एक कुंज में बीतता था। लोग समझते, शायद नीलपद्म वहां जाकर कोई गुप्त-तंत्र साधना करता है।

एक दिन नीलपद्म वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहा था, तभी उसके कानों में किसी स्त्री के हंसने की आवाज आई। उसने इधर-उधर देखा, पर कोई नजर न आया। वह सोचने लगा— 'यह मीठी हंसी किसकी है ?' तभी हंसी एकदम पास सुनाई दी। फिर आवाज आई— ''मैं एक यक्षिणी हूं, नीलपद्म। राजकुमारी हिमानी है मेरा नाम।''

''लेकिन मैं तुम्हें देख नहीं पा रहा हूं। ऐसा क्यों ?''— नीलपद्म ने आश्चर्य से कहा।

''मैं जब तक न चाहूं, तुम मुझे नहीं देख सकते।''— अदृश्य हिमानी ने कहा और आवाज दूर चली गई। तब से नीलपद्म हिमानी के ध्यान में खोया रहने लगा। एक दिन वह चुपचाप महाकाल के मंदिर में बैठा था, तभी उसे किसी का स्पर्श अनुभव हुआ और हंसी सुनाई दी। उसे न जाने क्या सूझा। उसने हाथ बढ़ाया, तो एक अदृश्य हाथ पकड़ में आ गया। ''मेरा हाथ छोड़ दो।''— यह हिमानी का स्वर था।

''नहीं, पहले तुम्हें मेरे सामने प्रकट होना पड़ेगा।''— नीलपद्म ने कहा। आखिर हिमानी को प्रकट होना पड़ा। उसे देखकर नीलपद्म मुग्ध हो गया। उसने हिमानी से विवाह का प्रस्ताव रखा। हिमानी ने कहा— ''तुम्हें हिमखंड के यक्ष देश में जाकर मेरे पिता से बात करनी होगी। अब मुझे लौटना है। यह पिता की आज्ञा है।'' उसने अपनी अंगूठी नीलपद्म को दे दी, फिर अंतर्धान हो गई।

नीलपद्म हिमालय की ओर जा रहे सार्थ के संग हो लिया। आगे दो व्यापारी और मिल गए। नीलपद्म ने अपना लक्ष्य बताया, तो दोनों व्यापारी उसे वापस जाने को कहने लगे —''नीलपद्म, लौट जाओ। मार्ग में जंगली जातियां हैं, हूण भी हैं। वे हमें बंदी बना सकते हैं, तब हमें दासों का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। हम तो व्यापारी हैं, लाभ के लिए कठिनाइयां झेलते हैं।'' लेकिन नीलपद्म तो यक्ष देश पहुंचने का निश्चय कर चुका था।

मार्ग में बहुत सावधानी बरतने पर भी एक रात हूणों ने उन्हें घेरकर पकड़ लिया।

हूण जब अपने शिविर के द्वार पर पहुंचे, तो नीलपद्म ने उनका संकेत-शब्द ध्यान से सुन लिया। अगली रात जब पहरेदार बदले गए, तो नीलपद्म दोनों व्यापारियों को साथ लेकर शिविर के द्वार पर पहुंचा।

उसने पिछली रातवाला संकेत-शब्द दोहरा दिया।

एक प्रहरी बोला— ''लगता है, तुम नए गुप्तचर हो और ये तुम्हारे साथी।''

नीलपद्म मुसकराकर रह गया। बोलने पर भेद खुल सकता था। वह दोनों व्यापारियों को लेकर शीघ्रता से वहां से निकल गया। उसने प्रहरियों को मूर्ख बना दिया था।

व्यापारी उससे बहुत प्रभावित हुए। जब वे विदा लेने लगे, तो उनमें से एक ने उसे मंत्र सिद्ध खड़िया का टुकड़ा देते हुए कहा— ''रात को सोते समय अपने चारों ओर रेखा खींच देना। यह हर संकट से तुम्हारी रक्षा करेगी।''

वितस्ता नदी पार करके नीलपद्म हिमखंड की ओर चल पड़ा। उसने कई दुर्गम घाटियां पार कीं। रास्ते में उसे तीन बाजीगर मिले। वे भी उसके साथ हो लिए।

एक रात सोते समय उसने बांसुरी की मधुर धुन सुनी। उसने देखा, दूर एक स्त्री नाच-गा रही है। वह चुपचाप देखता रहा, वह जादूगरनी थी, पर खड़िया का घेरा पार नहीं कर सकती थी। इसी बीच एक बाजीगर की नींद खुल गई। वह मंत्र मुग्ध-सा घेरे से बाहर निकला और जादूगरनी के साथ नाचने लगा। जादूगरनी नाच के साथ-साथ कोई मंत्र भी पढ़ रही थी। नाचते-नाचते बाजीगर हिरन बन गया।

धीरे-धीरे जादूगरनी ने सब बाजीगरों को हिरन बना दिया। अब शायद नीलपद्म की बारी थी। लेकिन उसने चुपचाप जादूगरनी की बांसुरी उठा ली और बजाने लगा। अब तक उसने मंत्र भी याद कर लिया था। बांसुरी के साथ-साथ वह मंत्र भी बुदबुदाने लगा। जादूगरनी चिल्लाई— ''मुझे हिरनी मत बनाओ।''

नीलपद्म ने शर्त रखी— ''मेरे साथियों को फिर से मनुष्य बना दो।''

जादूगरनी ने कहा— ''वे तो अपने मोहवश हिरन बन गए हैं। समय आने पर फिर से वे स्वयं मनुष्य बन जाएंगे। हां, मैं तुम्हारी सहायता अवश्य कर सकती हूं।''

वह भी नीलपद्म को पीठ पर बिठाकर उत्तर की ओर उड़ चली। कई सप्ताह का कठिन मार्ग उसने पार कर लिया। हिमखंड की तलहटी में पहुंचकर उसने कहा— ''यहां से तुम्हें अकेले ही जाना होगा।''

नीलपद्म अकेला ही चल पड़ा। कुछ दूर ही चला था कि उसे यक्षों ने देख लिया और बंदी बना लिया। यक्षों ने कहा— ''तुम वही तो नहीं हो, जिसने हमारी राजकुमारी को रोगी बना दिया है? जब से वह उज्जयिनी से लौटी है, न कुछ खाती है, न पीती है।''

''मैं तुम्हारी राजकुमारी को स्वस्थ कर सकता हूं।''— नीलपद्म मुसकराया। यक्ष उसे अपने राजा के पास ले गए। राजा ने घोषणा की हुई थी— 'जो भी राजकुमारी हिमानी को स्वस्थ कर देगा, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया जाएगा।''

नीलपद्म ने हिमानी की दी हुई अंगूठी उतारकर यक्षराज को दी और कहा— ''यह राजकुमारी को दे दीजिए। वह स्वस्थ हो जाएगी।''

अंगूठी देखकर हिमानी समझ गई कि नीलपद्म आ गया है। वह पुकार उठी— ''कहां हो नीलपद्म?''

नीलपद्म उसके सामने आ गया। उसे देखकर हिमानी की उदासी जाती रही। वह स्वस्थ हो गई। कुछ दिन बाद दोनों का विवाह हो गया। फिर वे उज्जयिनी लौट आए।

●
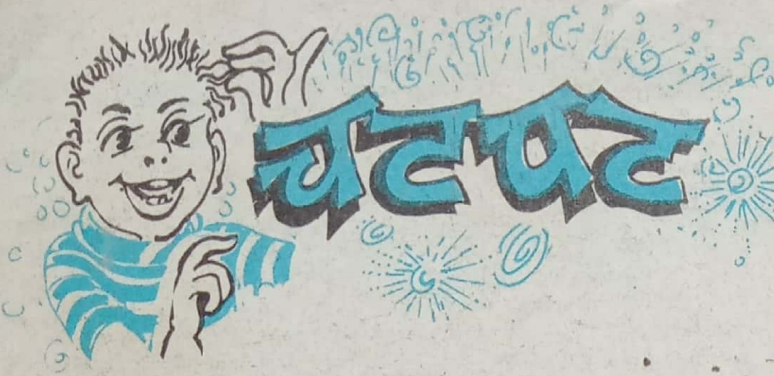
□ एक चोर—अरे भाई, तुम रातोंरात अमीर कैसे बन गए ?
दूसरा चोर—यह प्रश्न तब पूछना, जब कई दिनों के लिए बिजली गुल हो जाए।

□ नौकर—मालिक, बिजली आ गई है।
मालिक—उससे कहो, वह मेरा दस मिनट तक इंतजार करे।

□ अध्यापक—सुरेश, मैंने कल तुम्हें पढ़ते हुए देखा। अच्छी बात है, खूब पढ़ा करो।
सुरेश—हां सर, क्योंकि मैंने भी आपको अपने घर की तरफ आते देख लिया था।

□ दुकानदार—बेटा, ग्राहक से हमेशा मीठा बोलना चाहिए। तुम उस ग्राहक से लड़े क्यों ?
बेटा—पिता जी ! वह गुस्से में था। मैं उसे खाने को चीनी दे रहा था, पर वह मुझसे गुड़ मांग रहा था।

□ जेलर—कैदी भाग गया ! तुमने उसका पीछा क्यों नहीं किया ?
पुलिस वाला—हुजूर ! पीछा कैसे करता ! बाहर मेरी मोटर साइकिल खड़ी थी। वह उसी पर बैठकर भाग गया।

□ एक मित्र—जमाना कैसे बदल रहा है ? इसे सिद्ध करो।
दूसरा मित्र—पहले तुम मेरे चक्कर लगाते थे और अब मैं अपने रुपयों के लिए तुम्हारे चक्कर लगाता हूं।

□ डाक्टर—बेटा, गाजर खाया करो, चेहरा लाल हो जाएगा।
बेटा—और लोग मुझे बंदर कहने लगें तो...!

□ दारोगा—तुम्हारे घर कितने बजे चोरी हुई ?
एक आदमी—हुजूर, उस समय मेरी घड़ी बंद थी, इसलिए समय का पता नहीं लग सका।

□ विजय—बड़ा रद्दी रूमाल रखते हो। कोई बढ़िया-सा रूमाल रखा करो।
अजय—क्या करूं ? अच्छा रूमाल रखता हूं, तो तुम्हारे जैसे मित्र उठा ले जाते हैं।

□ एक पड़ोसी—भाई साहब ! कल आपके बेटे ने मेरे ऊपर पानी उंड़ेल दिया।
दूसरा पड़ोसी—वाह ! आप भी कैसी बातें करते हैं ? यहां पानी पीने को नहीं है, तो बच्चे ने पानी कहां से आपके ऊपर उंड़ेल दिया?

□ मालकिन—श्यामू, तुम आज मुझसे बहाना करके अपने घर जल्दी नहीं जा सकते।
श्यामू—कोई बात नहीं, मैं मालिक से कहकर चला जाऊंगा।

□ पिता—बेटा, यदि आज मैं तुम्हें पांच रुपए दे दूं तो...?
बेटा—तो क्या , उन रुपयों को दिखाकर मैं मां से दस रुपए ले लूंगा।

□ अध्यापक—विनय, अपने घर में सफाई रखनी चाहिए। यह नहीं कि जहां-तहां कूड़ा-करकट फेंक दो।
विनय—जी सर, इसलिए मैं रोज अपने घर का कूड़ा पड़ोसी के घर में फेंक देता हूं।

□ एक सहेली—ऐसी भी क्या कहानी कि पढ़ते ही रोने लगो।
दूसरी सहेली—ठीक है, मैं दूसरी कहानी देती हूं जिसे पढ़कर तुम लड़ने लगो।

□ एक मित्र—मित्र हो, तो तुम जैसा। तुम्हारी वजह से ही मैं लखपति बन गया हूं।
दूसरा मित्र—वह तो ठीक है। पर उन लोगों को मैं क्या जवाब दूं जो तुम्हारी देनदारी के लिए मुझे परेशान करते हैं।

□ एक मित्र—अरे भाई, तुम शेर की गुफा में घुस गए और सही-सलामत निकल भी आए, आश्चर्य की बात है !
दूसरा मित्र—इसमें आश्चर्य क्या ? जब मैं गुफा में घुसा तो, उस समय शेर वहां था ही नहीं।

तेनालीराम ३१२

परकोटा

एक बार तेनालीराम ने राजा कृष्णदेव राय से प्रार्थना की—'मुझे राज्य की सेवाओं से मुक्त किया जाए। बुढ़ापा मैं भगवान की पूजा-अर्चना में बिताना चाहता हूं।' मंत्री, सेनापति आदि कई दरबारियों के चेहरे खिल उठे।

राजा कुछ सोचकर बोले—"ठीक है। मैं बुद्धि-परीक्षा की प्रतियोगिता करवाता हूं। उसमें जो विजयी होगा,उसे तुम्हारे स्थान पर नियुक्त कर लूंगा। तब तक तुम अपने पद पर बने रहो।" तेनालीराम मान गया।

राजा ने विजयनगर के बाहर मैदान में कांच का एक परकोटा बनवाया। उसमें न कोई खिड़की थी, न दरवाजा। ऊपर से भी पूरा परकोटा शीशे की छत से बंद था। दूर-दूर तक घोषणा करा दी—जो परकोटे को स्पर्श किए बिना,इसके अंदर अपनी कोई भी चीज डाल देगा, उसे तेनालीराम के स्थान पर नियुक्त किया जाएगा।'

लोग आते। घूम-फिर कर परकोटे को देखते और लौट जाते। अंदर कुछ भी वस्तु डाल पाना संभव न था। महीनों बीत गए। न कोई विजयी हो सका और न तेनालीराम सेवा-मुक्त।

मंत्री और सेनापति को सब्र कहां। एक दिन उन्होंने दबी जबान से कह ही दिया कि इस बुद्धि-परीक्षा में तो तेनालीराम खुद भी विजयी नहीं हो सकता।

राजा ने तेनालीराम की ओर देखा। तेनालीराम बोला—"ठीक है महाराज।"
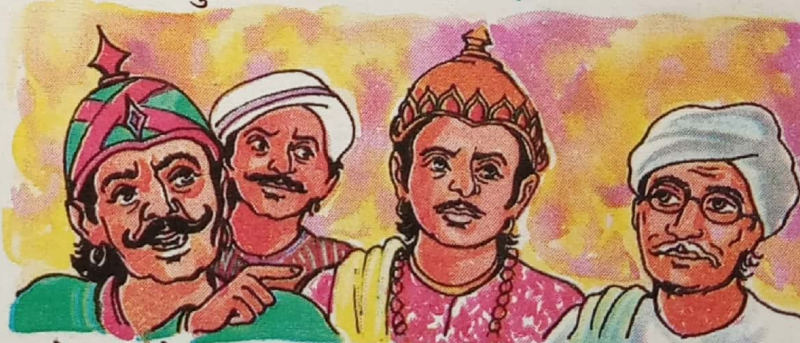
अगले दिन तेनालीराम राजा, मंत्री, सेनापति और दरबारियों के साथ परकोटे के पास पहुंचा। पूर्व की ओर पहुंचते ही वह बोला —"लीजिए महाराज, मैंने परकोटे को बिना स्पर्श किए अपनी चीज इसके अंदर डाल दी है।"

सभी ने देखा, तेनालीराम की परछाई शीशे से छन कर परकोटे के अंदर पड़ रही थी। फिर वह मंत्री के लटके चेहरे की ओर देखकर बोला—"अन्नदाता, अब मुझे अपनी सेवा से मुक्त कीजिए।"

"अब यह कैसे होगा?"—राजा मुसकराकर बोले—"हमने घोषणा कराई थी कि जो इस बुद्धि परीक्षा में विजयी होगा, वही तुम्हारा स्थान संभालेगा। विजयी तुम ही हुए न।"

ZAP
MICKEY AN
TO
YES! Zap now has a whole new range of fun watches-the Disney series. Lovable Mickey. Bashful Minnie. Crafty Donald. Perky Daisy. Bumbling Goofy. Clumsy Pluto. And of course, Ol' Unca Scrooge.
© DISNEY
Disney series: MRP Rs. 150/-
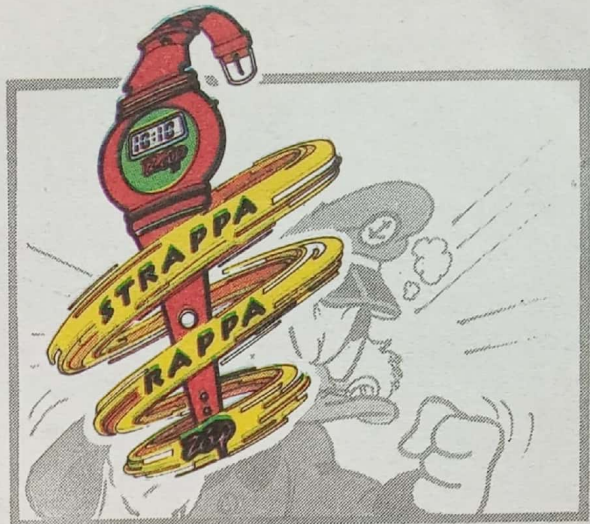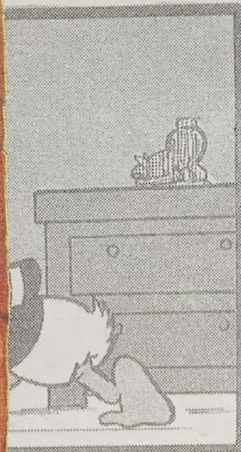
Rediffusion/BLR/HMT/40/92

नए नए रंग!
PARLE
POPPINS
नए नए स्वाद!
मुफ़्त
जंगल बुक
स्टिकर्स
पाने के लिए
नया
PARLE
POPPINS
* रु.१.२५
नेट वेट २५ ग्राम
* अधिकतम रीटेल कीमत
सभी करों सहित
पॉपिन्स के ४ रैपर और एक टिकिट
लगा जवाबी लिफाफा अपने पते के
साथ यहां भेजें :
पॉपिन्स पॉइन्ट, पारले प्रॉडक्ट्स लि.,
पी. ओ. बॉक्स ६०७,
बम्बई-४०० ०५७
Contains no fruit juice or pulp. Contains added flavours.
everest/94/PP/6-hn

पिजारो की तलवार

—दिनेश दिवाकर

लगभग पांच सौ वर्ष पहले की बात है। स्पेन के गांव में एक अनाथ लड़का रहता था। नाम था—पिजारो। पिजारो सारे दिन खेत में मजदूरी करता, रात को रूखी-सूखी खाकर पेट भरता। पिजारो जिस व्यक्ति के खेत में मजदूरी करता, उसे समुद्री यात्राओं का बड़ा शौक था। वह अक्सर पिजारो को अपने साथ यात्रा पर ले जाया करता था। समुद्री यात्राओं पर जाते-जाते पिजारो को समुद्र से प्रेम हो गया। जैसे-तैसे अभावों में पिजारो का बचपन बीता। जवान हुआ, तो जल-सेना में भर्ती हो गया। समुद्री यात्राओं का अनुभव तो था ही उसे। शीघ्र ही वह अपनी योग्यता के बल पर जल-सेना का सेनापति बन गया। स्पेन का राजा चार्ल्स पंचम पिजारो को बहुत पसंद करता था। एक दिन राजा ने पिजारो को बुलाया और कहा— "मैं अपने राज्य का विस्तार करना चाहता हूं।"

"मेरे लिए क्या हुक्म है सरकार ?" —पिजारो ने झुककर कहा।

—"यहां से हजारों मील दूर एक राज्य है पेरू। खूब धन-धान्य से भरपूर है। वहां का आम नागरिक भी हीरे-जवाहरातों से खेलता है। बहुत समृद्धि है वहां।"

"पर इससे हमारा क्या भला हो सकता है ?" —राजा को बीच में ही टोककर पिजारो बोला।

"पूरी बात सुनो। मैं चाहता हूं कि तुम कुछ सैनिक व तीन जहाज लेकर वहां जाओ। उस देश को लूटो। वहां का सारा सोना अपने देश स्पेन में लाओ।" —राजा ने कहा।

पिजारो दो सौ सैनिकों व हथियारों के साथ रवाना हुआ। एक जहाज हथियारों से भरा था, दो जहाजों में सैनिक थे। सैनिकों के एक जहाज का नेतृत्व किया पिजारो ने। दूसरे का नेतृत्व जकामा नामक एक अन्य सेनापति कर रहा था।
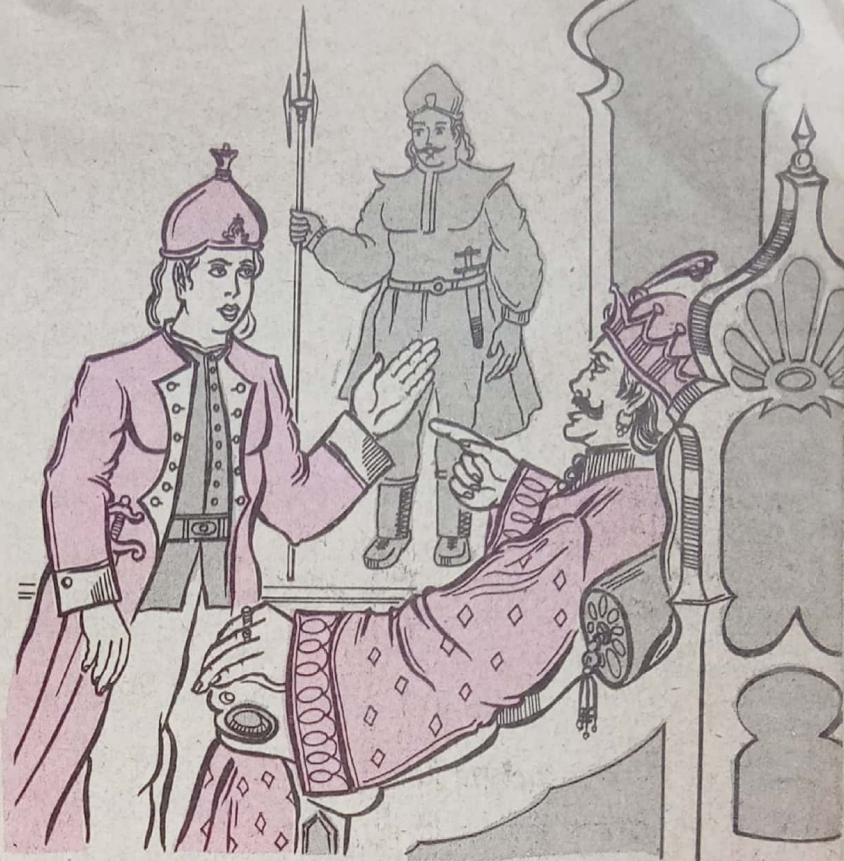
रास्ते में उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। समुद्री तूफान में कई बार उनके जहाज पलटते-पलटते बचे। कुछ सैनिक घबरा गए। वे वापस जाना चाहते थे। उन्होंने विद्रोह कर दिया। जकामा विद्रोहियों के साथ मिल गया। पिजारो ने सैनिकों को समझाने का बहुतेरा प्रयत्न किया, परंतु व्यर्थ गया। दोनों जहाजों के सैनिक दो गुटों में बंट गए। जकामा और उसके विद्रोही साथियों ने पिजारो के आगे समर्पण कर दिया।

अभी कुछ ही दूर चले थे कि जहाज में रखी भोजन सामग्री में जहरीला कीड़ा लग गया। जहरीला भोजन करते ही बीस सैनिक तत्काल भगवान को प्यारे हो गए। सारा राशन फेंक देना पड़ा। समस्या हुई कि खाया क्या जाए ? फिर उन्होंने मछली पकड़कर खाना शुरू किया। कभी मछली मिलती, कभी नहीं। कभी-कभी तो उन्हें दो-दो दिन भूखे पेट रहना पड़ता। अंततः वे पेरू के तट पर जा लगे।

तट पर पहुंचते ही पिजारो की मुलाकात पेरू के नागरिकों से हुई। पिजारो यह देख, दंग रह गया कि पेरू में सभी व्यक्ति धनी हैं। उसके मन में चोर जागा। सोचा— 'यदि इस राज्य का राजा मैं बन जाऊं, तो कितना मजा रहेगा।' यही सोच, उसने पेरू

के लोगों को बताया कि वह एक व्यापारी है। नगर की धर्मशाला में अपने साथियों सहित ठहरा है।

पिजारो ने जकामा को बुलाया। कहा— "जकामा, तुम तो यहां के निवासियों के भोलेपन और उनकी सरलता को जान ही गए होगे। यदि हम चाहें,तो यहां के राजा बन सकते हैं। तब हमारी चांदी ही चांदी होगी। इन्हें लूटकर स्पेन वापस जाने से तो हमें सब कुछ राजा को दे देना होगा। मेरी योजनानुसार कार्य करो।"

"क्या योजना है तुम्हारी ?'—जकामा ने उत्सुकता प्रकट की।

"तुम आज रात को पचास सैनिकों सहित बाजार पर धावा बोल दो। दुकानें तोड़ दो। लूटपाट करो। तब राजा के सिपाही तुम्हें पकड़ने के लिए आएंगे। इससे पहले कि राजा के सिपाही तुम्हें पकड़ेंगे,मैं अपने साथियों सहित आ, तुम्हें गिरफ़्तार कर लूंगा और राजा के सुपुर्द कर दूंगा।

"यह सब करने से मैं राजा के नजदीक आ जाऊंगा। उसका विश्वास प्राप्त करूंगा। फिर मौका देखकर उसका वध कर दूंगा।"— पिजारो ने समझाते हुए कहा।

"परंतु इस योजना से मेरा क्या हित होगा ?"— जकामा ने यह कहकर योजना में शामिल होने से स्पष्ट इंकार कर दिया।

जकामा को रास्ते पर लाने के लिए पिजारो ने कहा— "जकामा, मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं कर सकता। राजा का वध करते ही सबसे पहले मैं तुम्हें कारागार से मुक्त कराऊंगा। फिर तुम्हारी व तुम्हारे साथियों की सहायता से मैं राजमहल पर अधिकार कर लूंगा।"

जकामा फिर भी न माना,तो पिजारो ने अंतिम पासा फेंका। बोला—"उसके बाद तुम्हें यहां का राज्य सौंपकर, कुछ सोना लेकर मैं स्पेन चला जाऊंगा।"

अंतिम वाक्य सुनकर, जकामा पिघल गया और योजना में शामिल हो गया।

सारा कार्य योजनानुसार ही हुआ। जकामा ने अपने साथियों सहित बाजार में लूटपाट मचाई। पिजारो ने उसे पकड़कर राजा के सुपुर्द कर दिया और उसका विश्वासपात्र बन बैठा। मौका देखकर, उसने राजा का वध भी कर डाला। जकामा व उसके साथियों को कारावास से मुक्त भी कराया। उनकी सहायता से राजमहल पर कब्जा कर लिया। लेकिन अंत में पिजारो ने जकामा को धोखा दिया। उसे राजा बनाना तो दूर रहा, उलटे उसे बंदी बना, फिर से कारागार में डाल दिया। स्वयं वहां का राजा बन गया।

कारागार में बंद जकामा प्रतिशोध की आग में जल रहा था। वह निरुपाय था,इसलिए केवल छटपटाकर ही रह जाता था। एक दिन एक नवयुवक जकामा के पास आया। बोला— "बंदी, आजाद होना चाहते हो ?"

युवक के इस प्रश्न से जकामा चौंक गया। उसने पूछा— "तुम कौन हो। मुझे क्यों आजाद कराना चाहते हो ?"

युवक ने आगे कहा— "मैं कौन हूं, क्या चाहता हूं, इससे तुम्हें कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। सुनो, आज आधी रात को मैं कारागार के द्वारपालों को कुछ खिलाकर मूर्च्छित कर दूंगा। बस, तुम तैयार रहना।

आज की रात तुम्हारी मुक्ति की रात है।''

आधी रात हुई। जकामा ने देखा कि उसके द्वारपाल द्वार पर मूर्च्छित पड़े हैं। वही युवक प्रकट हुआ। युवक ने कारागार का दरवाजा खोला और जकामा से बात किए बिना ही चला गया। जकामा ने बाहर आकर चैन की सांस ली। अब वह आजाद था।

सहसा उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा— 'यह आजादी कितनी देर की है ? सुबह होते ही जब मैं कारागार से गायब मिलूंगा, तो पिजारो अपनी सारी सेना लगा देगा मुझे खोजने में। मैं पकड़ा जाऊंगा। और इस बार पिजारो पहले की सी बेवकूफी नहीं करेगा कि मुझे कारागार में डाले। वह तो मुझे मृत्यु दंड दे देगा। तो क्यों न मैं पहले पिजारो का ही काम तमाम कर दूं ? उसने भी तो मेरे साथ यही सब किया था।'— जकामा की आंखों में खून उतर आया।

उसके कदम राजमहल की ओर बढ़ने लगे। राजमहल के दरवाजे पर उसे दो द्वारपाल दिखाई दिए। वह राजमहल के पिछवाड़े गया। वहां उसे एक छोटा-सा दरवाजा दिखाई दिया। उसने धीरे से दरवाजे को धक्का दिया,तो चकित रह गया। दरवाजा अंदर से बंद नहीं था। जकामा शीघ्रता से अंदर घुस गया। अंदर अंधेरा था। जकामा टटोलता हुआ कमरे से बाहर आया, तो दंग रह गया। सामने के कमरे में पिजारो आराम से सो रहा था। उसकी तलवार शाही पलंग के पास ही रखी थी। जकामा ने चुपचाप तलवार उठा ली। वह तलवार से पिजारो पर वार करने ही वाला था कि उसकी आंख खुल गई। झट से पिजारो एक ओर हो, वार बचा गया। इससे पहले कि पिजारो अपनी सहायता के लिए सैनिकों को पुकारता, जकामा ने तलवार से दूसरा वार किया।

तलवार पिजारो के सीने में गड़ गई। पिजारो की चीख पूरे महल में गूंज गई। चीख सुनकर अंगरक्षक पिजारो के शयनकक्ष की ओर दौड़े। अंगरक्षकों को पास आते देख जकामा महल के पिछले दरवाजे पर जा पहुंचा। पर यह क्या ! दरवाजा बाहर से बंद था।
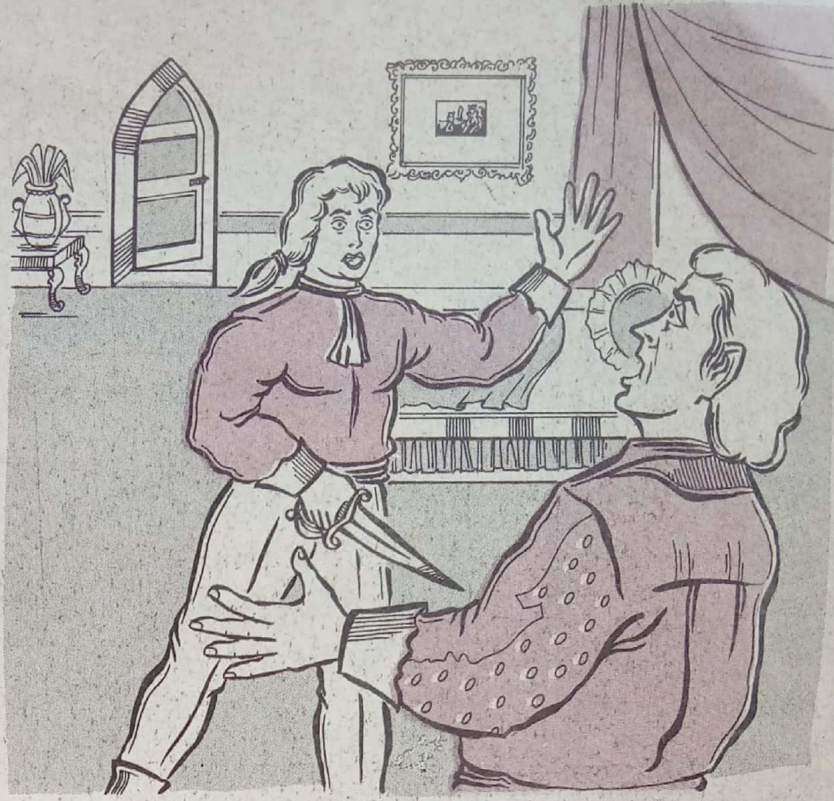
अंगरक्षक उसके पीछे थे। वह पागलों की तरह इधर-उधर भागा। भागते-भागते वह महल की छत पर पहुंचा। अंगरक्षक भी उसके पीछे-पीछे महल की छत पर आ पहुंचे। सामने मौत खड़ी देख, जकामा को कुछ न सूझा। वह महल से नीचे कूद गया। नीचे गिरकर वह दर्द से छटपटाने लगा।

तभी उसके पास वही युवक आया। बोला— ''जकामा,तुम्हारे प्राण अब छूटने ही वाले हैं। मरने से पहले इतना जानते जाओ कि मैं कौन हूं ? और क्या चाहता था ? मैं यहां का राजकुमार हूं। मेरे पिता का वध पिजारो ने किया और स्वयं राजा बन बैठा। मैं लाचार कुछ न कर पाया। प्रतिशोध की ज्वाला मेरे सीने में धधक रही थी, जो आज ठंडी हुई है।

''मैंने ही तुम्हें कारागार से छुड़वाया। मैंने ही महल का पिछला दरवाजा खोला था और बाद में बंद किया था। मैं यही चाहता था कि पिजारो या तुम में से कोई एक मर जाए। पिजारो एक साहसिक समुद्री यात्री था। उसकी इस साहसिक यात्रा के लिए विश्व में उसका नाम अमर रहेगा। लेकिन दुःख है कि वह अपने लालच पर नियंत्रण न रख पाया और मृत्यु को प्राप्त हुआ।'' यह कहकर राजकुमार ने जकामा को देखा। उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। ●
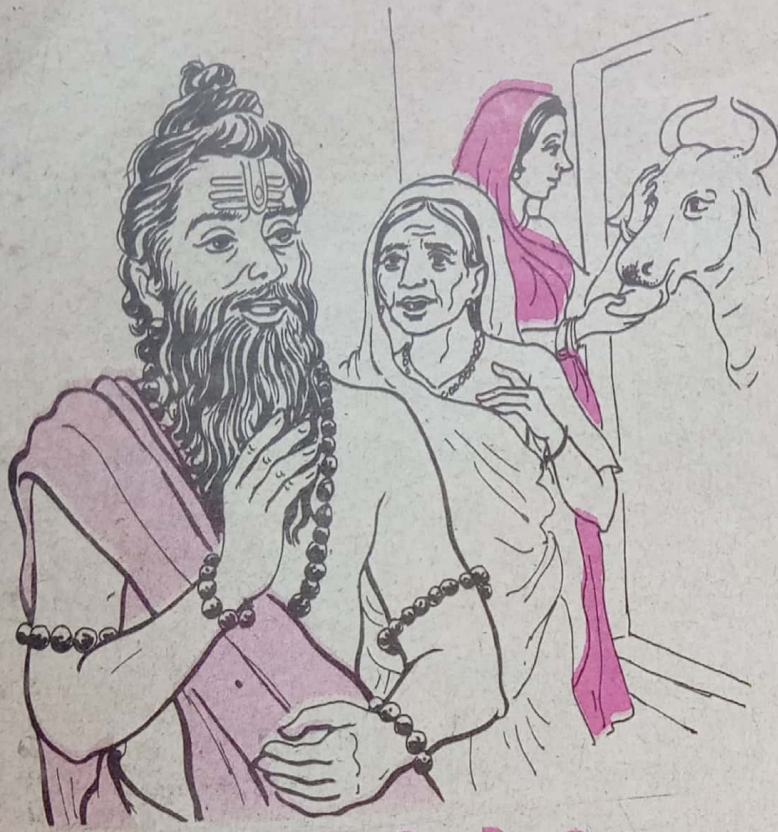
पहली रोटी

—कुमकुम शर्मा

रामपुर गांव में एक बुढ़िया अपने बेटे और बहू के साथ रहती थी। वह और उसकी बहू बड़ी ही सीधी और धार्मिक विचारों की थी। उपवास व दान-पुण्य करने में उन्हें बहुत संतुष्टि मिलती थी।

एक बार उनके गांव में एक साधु आया। साधु का प्रवचन सुनने गांव के काफी लोग एकत्र हुए। प्रवचन के बाद बुढ़िया ने साधु को अपने घर भोजन का निमंत्रण दिया।

साधु ने मुसकराते हुए कहा—"देवि, मैं कल जरूर आऊंगा। और हां, मैं जूठा भोजन नहीं करता। पहले मैं भोजन करूंगा, बाद में अन्य लोग।"

दूसरे दिन साधु ठीक समय पर बुढ़िया के घर पहुंचा। बुढ़िया ने साधु के लिए भोजन परोसा, किंतु यह क्या ! साधु ने जैसे ही पहला कौर उठाया, खाना तुरंत थाली में छोड़कर उठ खड़ा हुआ। उसने बुढ़िया से कहा—"माता, मैं जूठा भोजन नहीं करता, यह बात मैं पहले ही बता चुका हूं।"

यह सुन, बुढ़िया घबरा गई। बोली—"क्षमा कीजिए महाराज, मैं अभी दोबारा भोजन बनवाती हूं।"

किंतु साधु दूसरे दिन आने की बात कह, चला गया। दूसरे दिन भी वैसा ही हुआ। साधु फिर भोजन छोड़कर चला गया।

तीसरे दिन साधु के आने के पश्चात बुढ़िया उसे रसोईघर में ले गई। साधु के सामने बहू से भोजन तैयार करवाया। इस बार भी साधु ने जैसे ही कौर उठाया, खाना छोड़ दिया। क्रोध से बोला—"मैंने पहले ही कहा था कि मैं जूठा भोजन नहीं करता। फिर बार-बार जूठा भोजन परोसने का क्या अर्थ ?"

परेशान बुढ़िया ने हाथ जोड़कर कहा—"परंतु महाराज, भोजन तो आपके सामने ही बना है ?"

साधु ने बहू को बुलाकर पूछने के लिए कहा। अभी तक बुढ़िया ने बहू से जूठे भोजन की बात नहीं पूछी थी। साधु के सामने बुढ़िया ने बहू को बुलाया। साधु ने बहू से पूछा—"बेटी, क्या यह भोजन पूर्णतः शुद्ध है ? क्या अभी और किसी ने नहीं खाया है ?"

बहू ने विनम्र स्वर में उत्तर दिया—"क्षमा चाहती हूं महाराज। मेरी मां ने सिखाया था कि पहली रोटी गाय माता को खिलाना जिससे कि उनकी कृपा से घर में कभी धन-धान्य की कमी न हो।"

आश्चर्य से भरी बुढ़िया ने कहा—"किंतु बहू, आज तो तुमने मेरे सामने ही खाना बनाकर, पहले महाराज को परोसा है।"

"मां जी, जब मैं हाथ धोने बाहर गई थी, तब अपने साथ रोटी ले गई थी।" —बहू ने कहा।

साधु उसकी बात सुन, खुश हुआ। बोला—"माता, यह बात मैं जानता था। तीन दिन से मैं जानबूझकर जूठा खाना होने की बात करता था। मैं देखना चाहता था कि मेरे डर से आप लोग अपना नियम तो नहीं तोड़ देते। मुझे खुशी है कि आप लोगों ने ऐसा नहीं किया।"

ऐसा कह, साधु ने भोजन शुरू किया। सास ने बहू को गले से लगा लिया।

आज भी कई घरों में लोग पहली रोटी गाय को देते हैं। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. — का जल आईने की तरह साफ था। (झील/ताल)

२. लेकिन तुम उसे — क्यों देती हो छुटकी? (चने/ताने)

४. आओ, तुम्हें बलवान — की कथा सुनाएं। (भील/भीम)

८. नाना जी, आप — के बारे में क्या कह रहे थे? (चीन/चीकू)

९. —, मैं ही गीत सुनाता हूं। (लो/हां)

११. मुझे तो — प्यारी है अम्मां। (नींद/गेंद)

१२. **खाओ कभी तो बताना स्वाद!**

ऊपर से नीचे

३. — जी, जल्दी ही आपके नेत्रों की ज्योति वापस आ जाएगी। (पिता/माता)

५. अच्छा, तुम जरा — तो लाना। (बाजा/खाजा)

६. — की हालत सचमुच खराब है। (किले/किसी)

७. आप — पर नाटक झटपट लिख डालिए न मास्टर जी! (टीपू/गोपू)

१०. **कभी देखा है यह सुंदर पक्षी?**

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०४

नाम ____________

उम्र ______ पता ____________

____

नं. ज्ञा. प. ३०४

Scanned with CamScanner

पेड़ पर शिकारी

—शम्सुद्दीन

जार्ज मेरा बचपन का साथी था। वह लड़कपन से ही शिकार का बहुत शौकीन था। उन दिनों मैं और जार्ज केशकाल की घाटी में काम करते थे।

जार्ज केशकाल घाटी के रेस्ट हाउस में रहता था। रेस्ट हाउस उस स्थान से, जहां पर कार्य चल रहा था, लगभग दस मील दूर होगा। जार्ज रोज सबेरे मोटर साइकिल से काम पर जाता और शाम से पहले लौट आता था। एक दिन जार्ज काम पर जाते समय अपनी बंदूक ले जाना भूल गया। शाम को जब वह लौट रहा था, उसे जंगल में शेर के दहाड़ने की आवाज सुनाई दी। उसने नजदीक की झाड़ियों को हिलते देखा। पहले तो जार्ज घबराया, लेकिन फौरन ही उसने मोटर साइकिल की रफ़्तार तेज कर दी। मोटर साइकिल की गति के कारण शेर उसका पीछा न कर पाया और पीछे ही रह गया।

दूसरे दिन पता चला कि शेर ने जंगल में एक औरत को मार दिया है। वह औरत जंगल में पत्ते बीनने आई थी।

अगले दिन हम शेर की तलाश करने जंगल में गए। शेर के दहाड़ने की आवाज नजदीक से ही सुनाई दी। हम वहीं रुककर सोचने लगे कि शेर बाहर निकले और हम गोली चलाएं, किंतु शेर बाहर न निकला। मजबूरन जार्ज ने झाड़ियों में गोली चलाना शुरू कर दिया। गोलियों की आवाज से शेर अचानक एक झाड़ी में से कूदा और हमारे एक आदिवासी साथी को इतनी जोर से पंजा मारा कि वह जमीन पर गिर पड़ा। शेर रफूचक्कर हो गया। आदिवासी को गहरी चोट आई और उसके शरीर से खून तेजी से बहने लगा। बाद में वह छह महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहा।

एक दिन फिर खबर मिली कि शेर एक लड़के को उठाकर ले गया। उसकी तलाश में जार्ज फिर जंगल में घुस गया। जंगल में एक जगह उसे एक स्त्री का मृत शरीर पड़ा मिला, परंतु शेर कहीं दिखाई नहीं दिया। शेर के पंजों के निशान देखता हुआ जार्ज आगे चल पड़ा। वे निशान जार्ज को तालाब के किनारे तक ले गए। परंतु वहां भी शेर का पता नहीं चला। कुछ समय बाद उसे एक तरफ झाड़ियां हिलती हुई दिखाई दीं। उसने उसी ओर बंदूक का निशाना साधा, किंतु उसे निराशा ही हाथ लगी। झाड़ियों में से शेर के बजाय एक जंगली सूअर ही निकला।

एक दिन शाम को शेर फिर एक बकरी पकड़कर ले गया और सब देखते रह गए। जब जार्ज को उसकी खबर लगी, उसने बकरी के घसीटे जाने के निशानों को देखते हुए शेर का पीछा किया। शेर बकरी को इतनी घनी झाड़ियों में ले गया था कि वहां दिन में
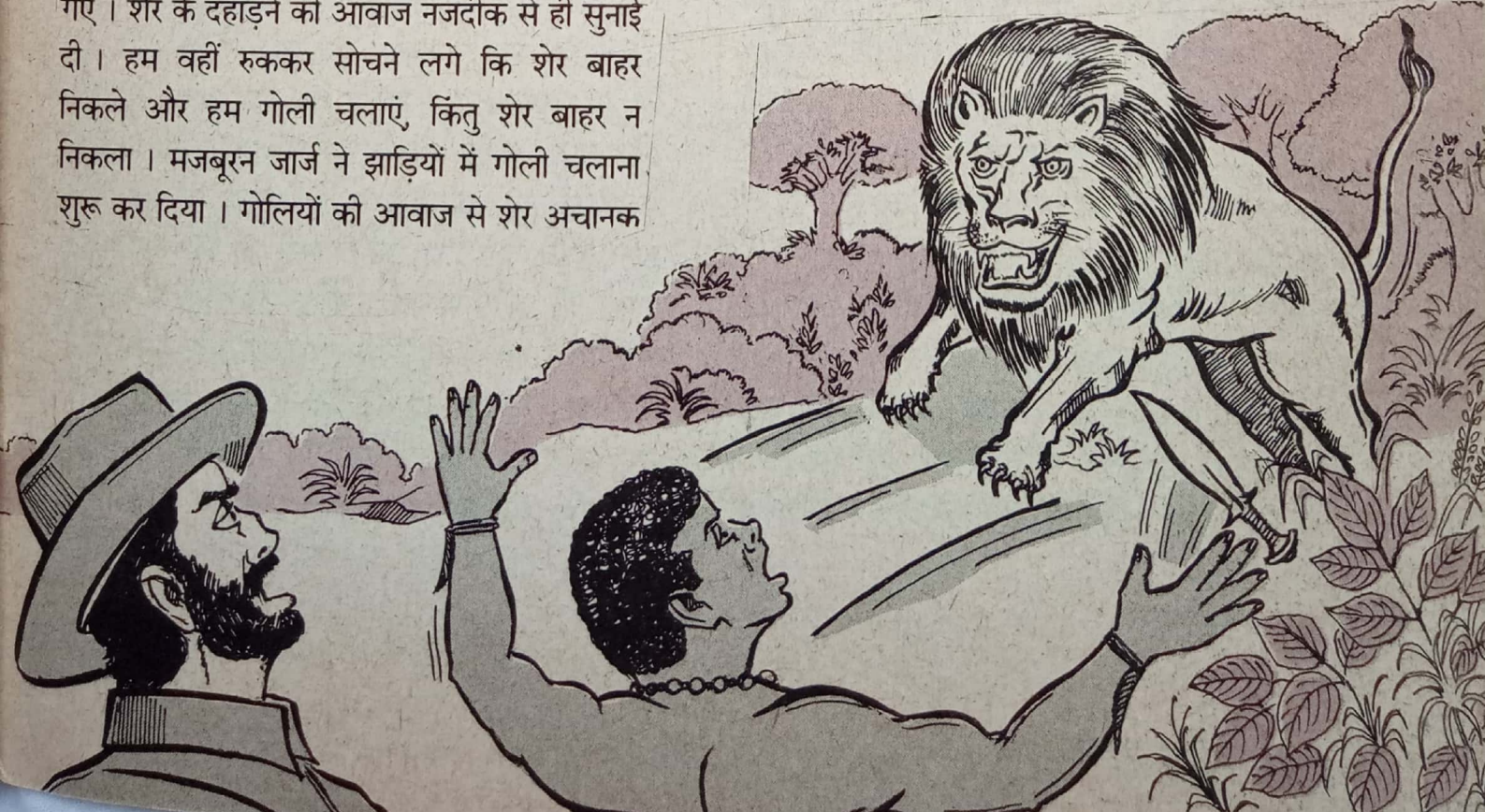
भी कुछ साफ नजर नहीं आता था। वहां पहुंचकर जार्ज को ऐसा लगा कि शेर यहीं कहीं छिपा है। उसने छान-बीन शुरू कर दी, किंतु वहां उसे केवल मरी हुई बकरी ही नजर आई और शेर का पता न चला। आखिरकार निराश हो, वह पंद्रह फीट की दूरी पर एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।

वह चांदनी रात थी। घने जंगल में जार्ज अकेला ही पेड़ पर बैठा था। जंगली कीड़े-मकोड़े उसे पेड़ पर परेशान कर रहे थे। लगभग आधी रात बीत चुकी थी। जार्ज इंतजार करते-करते परेशान हो गया था। थोड़ी ही देर में जार्ज को ऐसा लगा कि पेड़ पर उसके पीछे कुछ सुरसुराहट हो रही है। उसने मुड़कर देखा, उसी पेड़ की दूसरी डाल पर लगभग पांच फुट की दूरी पर एक काला नाग फन उठाए उसकी तरफ लपकने की कोशिश कर रहा है। जार्ज के होश उड़ गए। उसे घबराहट में कुछ नहीं सूझा। उसने वह गोली जो आदमखोर शेर के लिए रखी थी, उस नाग पर चला दी। उसके बाद जार्ज को कुछ होश नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने खुद को अस्पताल में बिस्तर पर पड़ा पाया।

अच्छा होने के बाद रेस्ट हाउस में जार्ज एक दिन सबेरे नाश्ते के बाद अखबार पढ़ने बैठा। अचानक उसने लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनी। पता चला कि चारा लाने वाली एक स्त्री पर फिर आदमखोर ने हमला करने की कोशिश की।

वह स्त्री एक पेड़ पर चढ़ गई और सहायता के लिए चिल्लाने लगी, परंतु किसी की हिम्मत न थी कि कोई उसकी सहायता के लिए वहां जाता। जार्ज ने झट से अपनी राइफल निकाली और उस स्त्री की सहायता के लिए भागा।

जब वह उसके नजदीक पहुंचा, स्त्री ने इशारे से जार्ज को बताने की कोशिश की कि शेर यहीं झाड़ियों में छिपकर बैठा हुआ है। जार्ज ने बहुत कोशिश की, परंतु उसे शेर दिखाई नहीं दिया। लेकिन थोड़ी देर बाद ही जार्ज की नजर शेर पर पड़ गई। शेर पेड़ पर बैठी स्त्री को ताक रहा था। जार्ज ने निशाना साधकर बंदूक चला दी।

बंदूक चलाने पर उसे पता चला कि उसकी बंदूक खाली है। अब क्या था! जार्ज पसीना-पसीना हो गया। उसके होश उड़ गए और घबराहट में उसे कुछ नहीं सूझ पड़ा। उधर ट्रिगर दबाने की आवाज से शेर चौंक उठा और उस स्त्री को ताकने की बजाए जार्ज की ओर देखने लगा। जार्ज समझ गया कि अब उसका अंतिम समय आ गया है।

शेर जार्ज की तरफ बढ़ने लगा। जार्ज को घबराहट में कुछ न सूझा। वह पास के एक छोटे से पेड़ पर चढ़ने लगा। शेर ने झट एक छलांग लगाई और जार्ज का पैर अपने मुंह में दबा लिया। उसे पकड़कर नीचे खींचने लगा। घबराहट में पेड़ की डाल उसके हाथों से छूटने वाली थी कि अचानक फायर की आवाज आई। फायर के साथ ही गोली आदमखोर शेर के माथे पर लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। कुछ ही क्षण में जार्ज के साले अलेक्जेंडर ने उसे पेड़ पर से उतारा। उसे फिर अस्पताल में भरती होना पड़ा, जहां उसका पैर काटा गया और नकली पैर लगाया गया। जार्ज अब शिकार नहीं कर सकता, फिर भी उसे संतोष है कि उसकी वजह से लोगों को आदमखोर शेर से छुटकारा मिल गया। ●

चीटू-नीटू
मम्मी कह गई थीं पढ़ना, पर पढ़ाई तो तब हो जब साफ-सुथरा...
सभी चीजों को झाड़-पोंछ कर सजाते हैं
पिताजी ने पुराने-पुराने खिलौने... मैं शो-केस उठाती हूं तुम नीचे से सफाई...
गिरा दिया न... खिलौने टूट गए। ऐसे ही रख दो, इस पर दादाजी का फोटो... अभी लाता हूं
धड़ाम
अरे क्या हुआ, गिर पड़े! फोटो का शीशा भी चकनाचूर! चलो दरी झाड़ कर झाड़...
शर्म नहीं आती सारे घर का कूड़ा मेरे सिर पर...
आण्टी, प्लीज मम्मी से न कहना
तौलिया दे जाती हूं, मिट्टी झाड़ लीजिए
लो हो गई सफाई! जो कूड़ा तुमने आंगन में निकाला था, तेज हवा से फिर अंदर
मम्मी आ गईं, अब क्या करें
अब तो हमारी ही सफाई और धुनाई...
ट्र-र-र

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। सोचिए कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर **१५ अप्रैल, १९९४** तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : जून '९४ अंक
चित्र : शमशेर अ. खान

पुरस्कृत चित्र

धनंजयकुमार, आयु १२ वर्ष द्वारा सी. एस. दुबे (ए एफ एस ओ) फ़्लाइंग कंट्रोल, एयरफोर्स स्टेशन, भटिंडा (पंजाब)

इनके भी चित्र पसंद आए : दयानंद सिंह, सारामोहनपुर, दरभंगा; निशिकांत निशि, बरहरवा, साहिबगंज (बि.); नंदकिशोर शर्मा, भरतपुर (राज.); शिखा गुप्ता, बुलंदशहर (उ.प्र.)

पत्र मिला

□ यह पत्रिका समाज के हर वर्ग में लोकप्रिय है। 'ज्ञान-पहेली' हमारा ज्ञान बढ़ाती है। समाचार हमारे लिए दुनिया भर की खबरें लाता है।

—गौतमसिंह, पूर्णियां

□ इस अंक में 'झोंपड़ी बनी महल', 'अनोखी भेंट' तथा 'साहसी राजकुमारी' कहानियां मजेदार लगीं।

—नीलकमल सिंह, प्रतापगढ़

□ मैं 'नंदन' पढ़ने का बहुत शौकीन हूं। सोचता रहता हूं—कब पत्रिका आए और कब पढ़ूं? 'अजब-अनोखी दुनिया' से हमें ज्ञान-विज्ञान की मजेदार जानकारियां मिलती हैं। चित्र-कथा 'हिडिम्बा का बेटा' तथा कहानियों में 'नागमणि' और 'सच का फल' बहुत अच्छी लगीं।

—संतोषकुमार, परसथुआ

□ मैं उर्दूभाषी होते हुए भी 'नंदन' को बेहद पसंद करती हूं। फरवरी अंक बहुत मनोरंजक और ज्ञानवर्धक लगा।

—शाहीन निशात, सारण

□ यह पत्रिका मनोरंजन तो करती ही है, हमारी अच्छी अध्यापिका भी है। 'तेनालीराम' मेरा सबसे प्रिय पात्र है। 'एलबम' में सुभाषचंद्र बोस का चित्र अच्छा लगा। कहानियां तो थीं ही एक से बढ़कर एक।

—मनीष जैन, पिनगवां (हरि.)

□ मैं हर माह 'नंदन' का बेसब्री से इंतजार करता हूं। इसे पढ़कर ऐसा महसूस होता है, जैसे मैं इंद्र के बगीचे में घूम रहा हूं। कभी राधाकृष्ण का होली खेलते हुए चित्र भी छापें।

—असीमकुमार सेनगुप्त, अररिया

□ फरवरी अंक मनमोहक था। खूब मजेदार और शिक्षाप्रद भी। 'नंदन' के बारे में 'गागर में सागर' वाली कहावत बिलकुल सही सिद्ध होती है।

—संदीप बंसल, जालंधर

□ बच्चों से बूढ़ों तक, यह सपरिवार पढ़ने लायक पत्रिका है। इसकी कविताएं बहुत रोचक होती हैं।

—मनीषकुमार सिंह, पटना

□ 'चीटू-नीटू' ने खूब हंसाया। 'चटपट' भी बहुत अच्छे लगे। सर्कस की रंगीन झांकी अनोखी थी। दोनों चित्र-कथाएं भी रोचक लगीं।

—नवीन अग्रवाल, कोटपुतली

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : विशाल गुप्ता, बड़ौत; सज्जन सिंह, तिलवासनी, जोधपुर; राजलक्ष्मी राय, शिमला; नीरज जैन, दिल्ली।
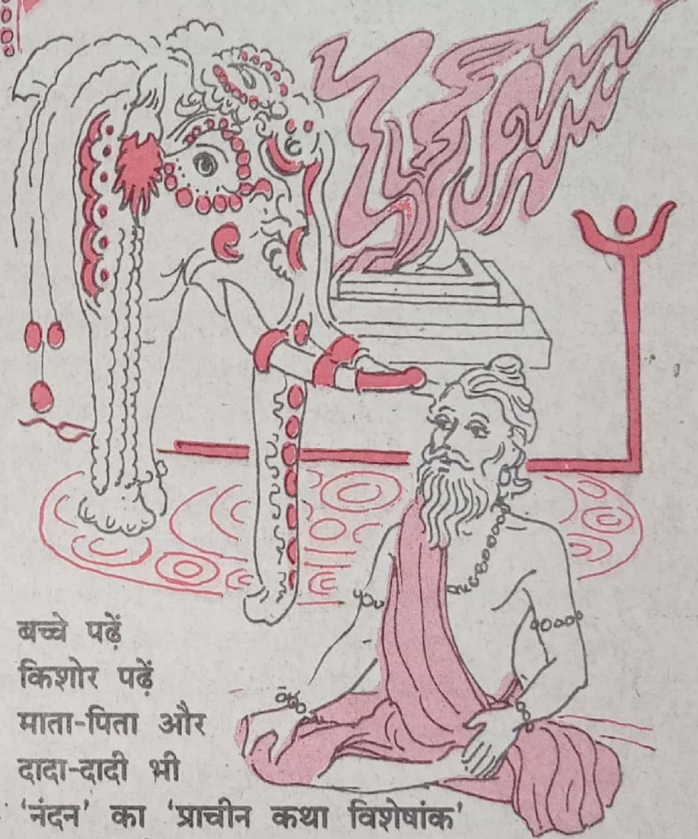
दस पुरस्कार

सबसे सुंदर प्रतियोगिता

पुरस्कृत रचनाएं

मुझे भारत माता की मूर्ति सबसे सुंदर लगती है। यह हमारी कालोनी की वाटिका में है। सफेद संगमरमर से निर्मित भारत माता की मूर्ति के एक हाथ में तिरंगा है, दूसरा हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में है। यह हम सभी को देश के प्रति अपने कर्तव्यों की याद दिलाती है।

—अमित भटनागर, रुड़की

मेरे घर में एक छोटा-सा हरिण है—स्वर्णा। उसका शरीर बड़ा ही कोमल, रंग सुनहरा है। बड़ी-बड़ी पानीदार आंखें मन को छू जाती हैं। उसमें बचपन का भोलापन है। कभी-कभी उसकी शरारतों पर मैं डांटता हूं, तो वह चकित होकर एकटक मेरा मुंह देखने लगता है। तब वह और अच्छा लगता है।

—प्रदीप पाल, कलकत्ता

मेरे घर के पास एक ताल है जिसमें गुलाबी व श्वेत कमल खिले रहते हैं। वृक्षों से घिरा यह ताल बहुत सुंदर लगता है। इस सरोवर में तैरते हुए सफेद हंस देखकर लगता है, जैसे हम कोई स्वप्न देख रहे हों।

—शिल्पी मित्तल, नेपा नगर

मेरे पिता जी के कमरे में एक बहुत ही सुंदर चीज शीशे के बाक्स में रखी हुई है—मेरे दादा जी के नकली दांत। मेरे दादा जी अब नहीं हैं, पर उनके दांत अब भी वैसे ही रखे हैं। जाने क्यों लगता है, ये मुझे आगे बढ़ने का आशीर्वाद दे रहे हैं।

—राजीव डी. एस. भटनागर, बरेली

मेरे घर के आंगन में इधर-उधर उछलती-कूदती नन्ही सी गिलहरी मुझे सबसे सुंदर और प्यारी लगती है। जब उसे कुटर-कुटर दाना खाते हुए देखता हूं, तो मन प्रसन्न हो जाता है। कभी-कभी उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे भागने लगता हूं।

—सिद्धार्थ सोन्थालिया, दिल्ली

'मां'—इस छोटे-से शब्द में कितनी महानता और विशालता है। मुझे अपनी मां बहुत अच्छी लगती हैं। वह मुझे अच्छी सीख देती हैं। हमेशा मेरी मदद करने वाली मेरी मां मेरी गुरु, सहेली, सब कुछ हैं।

—छवि मिश्रा, मुरादाबाद

मुझे अपने आस-पास सबसे सुंदर लगता है, कुत्ते का पिल्ला। रूई के गोले जैसे इसके मखमली बाल लुभाते हैं। मैं इसे गोद में लेकर घूमता हूं, खेलता हूं। मेरा बस चले तो स्कूल भी साथ ले जाऊं।

—संतोषकुमार सोनू, बोकारो

हमारे घर में एक सुंदर-सा बिल्ली का बच्चा है। सफेद रंग, ऊपर से काली-काली धारियां। अंधेरे में उसकी आंखें खूब चमकती हैं। उसे दूध पिलाना बड़ा अच्छा लगता है। आप उसे देखेंगे, तो आपकी भी गोद में लेने की इच्छा होगी।

—पिंकी अग्रवाल, जलपाईगुड़ी

हमारे घर में सबसे सुंदर है—मेरे कमरे की आलमारी में रखी मेरी तसवीर। यह मुझे मिठाई से भी ज्यादा पसंद है। जब मैं बहुत छोटा था, तो मेरे पिता जी ने यह तसवीर खींची थी। उसमें मेरे होठों से फूट रही मुसकान इतनी सुंदर है कि उसकी मोनालिसा से तुलना की जाए, तो भी कम है।

—अनिल शर्मा, विराट नगर (नेपाल)

हमारी बकरी ने 'मुनमुन' को जन्म दिया है। वह मुझे सबसे सुंदर लगती है। लम्बे कान, पतले चपल पांव। मैं जहां भी जाती हूं, मेरा पीछा करती है। उसका काला-सफेद रंग बहुत प्यारा है। त्वचा रेशम जैसी मुलायम। अभी यह घास या दाना नहीं खाती, केवल दूध पीती है। जब खूब मस्त होती है, तो लम्बी-लम्बी छलांगें लगाती है। मैं तो देखती ही रह जाती हूं।

—स्वाति शर्मा, चूरू (राज.)

इनके प्रयास भी प्रशंसनीय रहे— चंचल जायसवाल, इरोड (तमिलनाडु); कपिल पांडे, देहरादून; अनंतराम सिंह, कलकत्ता; संध्या, फिरोजपुर कैंट; इंदुबाला, रोहतक; दिव्या गुप्ता, कानपुर; किरणकुमारी, मधुबनी; पल्लव निगम, दमोह; विजया तिवारी, रांची; गीतिका बधवार, दिल्ली; गुरुमूर्ति, बंगलौर।

नई पुस्तकें

फूलों के गीत—लेखक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : सिंघल ब्रदर्स, स्टेशन रोड, मुरादाबाद—२४४००१; मूल्य : नौ रुपए।

कई बार कहा जाता है कि हिन्दी में बच्चों की बढ़िया पुस्तकें नहीं हैं। जो हैं,वे महंगी हैं। यह पुस्तक दोनों बातों को गलत सिद्ध करती है। इस सुंदर पुस्तक में हर पृष्ठ पर किसी न किसी फूल का चित्र है। उस फूल की विशेषता बताने वाला छोटा-सा गीत है। चुने गए फूल हैं—गुलाब, कमल, गुड़हल, सूरजमुखी, गेंदा, कनेर, टेसू, बेला, हरसिंगार, रजनीगंधा, चांदनी, रात की रानी, डहेलिया, गुलमोहर, बगोन बेलिया, मधुमालती, नरगिस, कदम्ब। 'रजनीगंधा' का गीत इस प्रकार है—

लम्बी-लम्बी हरी डंडियां
हर डंडी पर हंसते फूल,
ये ही तो रजनीगंधा है
छलिया गंध न पाएं भूल।
फूलदान में इन्हें सजाएं
कई दिनों तक सजे रहें,
इत्र बने तो लाजवाब हो
दुनिया भर में लोग कहें।

पुस्तक हर बालक को पसंद आएगी। इससे अच्छा उपहार उन्हें क्या मिलेगा!

रोचक कहानियां—लेखिका : संतोष नारंग; प्रकाशक : आशा प्रकाशन गृह, ३०, नाईवाला, करौलबाग; नई दिल्ली—५; मूल्य: बीस रुपए।

पुस्तक में सत्रह कहानियां हैं। कुछ कहानियों के शीर्षक हैं—साहसी गुरमीत, बुरा मत सोचो, पश्चाताप, पुनीत का साहस और सूझ-बूझ, फलों का तिरस्कार तथा स्वावलम्बन आदि। इनसे प्रकट है कि लेखिका कहानी के साथ ही बालक को क्या कुछ सिखाना चाहती है। सभी कहानियां मनोरंजक हैं। बालक के आसपास घूमती हैं। उससे जुड़ी समस्याओं की चर्चा इनमें हैं। इसीलिए ताजगी है। पाठक इन्हें पसंद करेंगे। चित्र और अच्छे हो सकते थे।

समूची हिंदी शिक्षा, भाग १, २, ३, ४, लेखक: वेद मित्र; प्रकाशक: पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा. लि., ८८८, ईस्ट पार्क रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५, रायल आकार, मूल्य : ५०.०० (प्रत्येक भाग का), सचित्र।

लेखक लंदन में इंजीनियर हैं। पंद्रह बरस से विभिन्न देशों के नागरिकों तथा उनके बच्चों के लिए हिंदी कक्षाएं चला रहे हैं। ऐसे छात्रों तथा भारत में हिंदी को अंग्रेजी के साथ सीखने वालों के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। भाग-एक में अंग्रेजी के निकटतम अक्षरों की तुलना करके उनकी ध्वनि और उच्चारण के उदाहरण दिए गए हैं। इसके साथ-साथ लेखन में मदद के लिए अक्षर-रचना, बिंदु-रेखाओं में दी गई है। अंत में स्वर व व्यंजन से बने शब्द दिए गए हैं।

भाग-२ में दो अक्षरों से बने शब्दों से प्रारम्भ कर वाक्य रचना बताई गई है। प्रत्येक पाठ में कुछ शब्दों के सहारे कहानी की रचना हुई है, जैसे पाठ-११ में 'सोहन और हंस' से सम्बंधित कहानी। प्रत्येक शब्द के साथ उसका अंग्रेजी शब्द दिया गया है। अंत में अंक तालिका है जिसमें पहले रोमन लिपि में अंक, फिर हिंदी लिपि में तथा देवनागरी अक्षरों में दिए गए हैं।

भाग-३ में सभी प्रकार की वाक्य-रचना के सचित्र उदाहरण हैं। पाठ-३ का एक उदाहरण है—'मैं जाता हूं', वर्तमान कालिक वाक्य से जुड़े सभी वाक्य और उदाहरण हैं। नए शब्दों का भी उल्लेख है जिसके साथ अंग्रेजी के शब्द दिए गए हैं। हर पाठ के अंत में अभ्यास है। इससे बच्चे सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। फिर अगले पाठ के लिए तैयार हो सकते हैं।

भाग-४ के प्रत्येक पाठ में एक लेख या कहानी या वार्तालाप है। प्रारम्भ में नए शब्द अंग्रेजी शब्दों के साथ, फिर लेख और अंत में अभ्यास। पाठ-७ का उदाहरण लें। पाठ में—'जलपान और भोजन' (पृष्ठ २१) 'नए शब्द' में जलपान व भोजन सम्बंधी आवश्यक शब्द हैं (पेय, रायता, दाल, चटनी, पापड़)। फिर बातचीत में भोजन व जलपान सम्बंधी जानकारी दी गई है।

अंत में 'शब्द भंडार' में सभी शब्दों और क्रियाओं के अंग्रेजी समानार्थी शब्दों के साथ सूची है।

सहज, सरल ढंग से हिंदी सीखने के लिए इस पुस्तक के चारों भाग अत्यंत उपयोगी हैं। छोटे तो छोटे, विद्वान भी पुस्तक उठाएंगे, तो पूरी बिना पढ़े न रहेंगे। साज-सज्जा मोहक है। चित्र बहुरंगी हैं। बालकों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखा गया है। मूल्य उचित है। इस पुस्तक-माला से देश-विदेश में हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति मिलेगी।

—डा. मृत्युंजय उपाध्याय

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर के मकान की एक चिमनी ऊंची है।
२. उसका रोशनदान गायब है।
३. पलंग पर रखे गोल तकिए का एक फुंदना नहीं है।
४. कुत्ते के गले में पट्टा पड़ा है।
५. टोप वाले आदमी की नाक नुकीली हो गई है।
६. खिड़की में खड़ी महिला के बाल अधिक हैं।
७. खिड़की की चौखट अधिक चौड़ी है।
८. छड़ी वाले लड़के की टोपी का अगला भाग छोटा है।
९. छड़ी का निचला सिरा उसके हाथ से नीचे निकला है।
१०. पानी की निकासी के लिए ऊपर लगा छोटा पाइप थोड़ा बाईं ओर हट गया है।
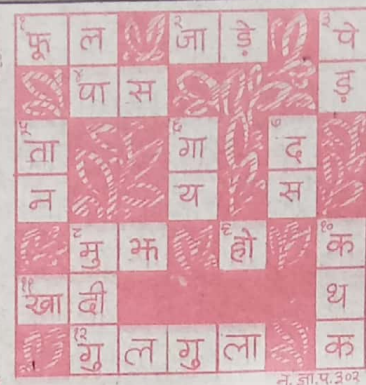
नंदन ज्ञान-पहेली : ३०२

परिणाम

पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया, लेकिन सिर्फ एक सर्वशुद्ध हल आ सका। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है।

सर्वशुद्ध : एक : चार सौ रुपए

१. अर्चना पाठक, गया (बि.)

एक गलती : तीन : प्रत्येक को दो सौ रुपए

१. गौरव गुप्ता, गाजियाबाद; २. प्रतीक शुक्ला, गोपालगंज; ३. मु. मुदस्सर, तंदुर (आं. प्र.)।
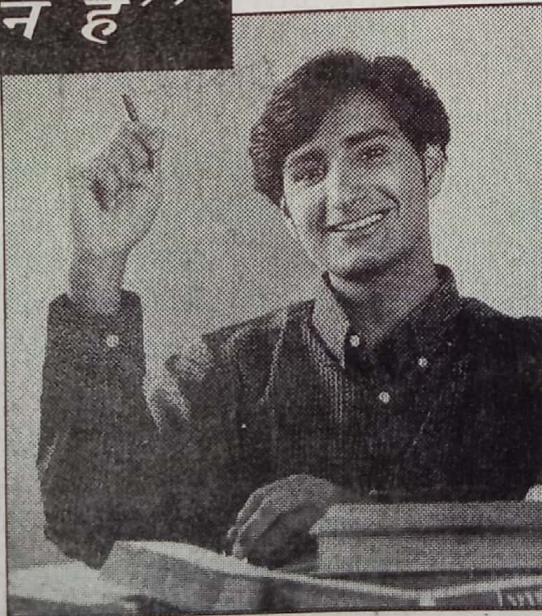
अजब-अनोखी दुनिया

पौधों में जुगनू की चमक : रामायण में लक्ष्मणजी को शक्ति लगी। हनुमानजी को संजीवनी बूटी लाने भेजा गया। संजीवनी की पहचान कैसे हो ? वैद्यराज ने कहा था कि जो बूटी जुगनू की तरह चमके, वहीं संजीवनी हैं। हनुमानजी ने देखा पहाड़ की सभी जड़ी-बूटियां दमक रही हैं। अब क्या हो ? वह पूरा पहाड़ उठाकर ले आए।

समुद्र में एक मछली मिलती है। नाम है जैली फिश। खतरा होते ही यह जुगनू की तरह चमकने लगती है। अगर फसलों में भी यह गुण आ जाए तो कैसा रहे ? स्काटलैंड के वैज्ञानिकों ने यह कमाल कर दिखाया है। उन्होंने तम्बाखू के पौधे में जुगनू की चमक भर दी है। कोई भी कीड़ा जब तम्बाखू के पौधे पर बैठता है, तम्बाखू का पौधा जगमगा उठता है। दवा छिड़कते ही कीड़ों का सफाया।

रोटियां महीनों बाद खाइए : बासी रोटियां खाना भला कौन पसंद करेगा ? दो-चार दिन बाद तो रोटियां फेंकनी ही पड़ती हैं। अगर इन रोटियों को दस-पंद्रह दिन सुरक्षित रखने का तरीका निकल आए तो अनाज की कितनी बचत हो ?

मैसूर में एक संस्था है। वह हमारी फौजों के लिए भोजन सामग्री पर खोज करती है। जवानों को तो हफ्तों मोर्चे पर रहना पड़ता है। वहां ताजी रोटियां कहां से मिलें ? कई बार तो आग जलाने का मतलब है गोली खाना। दुश्मन को फौजी ठिकाने का पता चल जाता है। मैसूर की प्रयोगशाला ने इस समस्या का हल निकाला है। वहां पोलिथिन की थैलियां तैयार की गईं हैं। इनमें रोटियां १० से १५ दिन तक सुरक्षित रहती हैं। एक ऐसी पत्री भी बनाई गई है, जिसमें रोटियां छः महीने तक ठीक रहती हैं।

गंदा पानी छानकर पीने की नली : फौजियों को अक्सर मुसीबतों से जूझना पड़ता है। न खाने की फुर्सत, न पीने के पानी की सुविधा। जंगलों में भटकते हुए कई बार गंदा पानी भी पीना पड़ता है। गंदा पानी पीने का मतलब है, बीमारियों को न्यौता। फौज में लड़ते समय बीमार को कौन संभाले ?

ग्वालियर की रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला ने गंदा पानी पीने की एक नली बनाई है। ठंडा-पेय पीने में जैसी नली (स्ट्रा) काम आती है, बहुत कुछ वैसी ही। नली में पानी छानने का एक विशेष छन्ना (फिल्टर) लगा है। गंदे पानी में नली का एक सिरा डुबोइए। दूसरे सिरे से पानी ऊपर खींचिए। केवल शुद्ध पानी ही छनकर मुंह में आएगा। है न काम की चीज।

टेलीविजन के सब चैनलों के लिए एक ही एंटीना : टेलीविजन पर आजकल खूब मजे हैं। जी टी. वी., स्टार टी. वी., बी. बी. सी. और दूरदर्शन के पांच-पांच चैनल। जो पसंद है, देखिए। बस, एक झमेला है। हर चैनल के लिए अलग डिश एंटीना चाहिए। जिधर उपग्रह हो, एंटीना का मुंह उधर घुमाओ।

अब इटली के वैज्ञानिकों ने इस समस्या का हल निकाला है। उन्होंने अस्सी सेंटीमीटर व्यास (पौने तीन फुट गोलाई) की ऐसी 'डिश' बनाई है जो हर चैनल को पकड़ती है। बार-बार एंटीना घुमाने के झंझट से छुटकारा। है न मजेदार बात !

—बृजमोहन गुप्त

पुरस्कृत कथाएं

बोली चीं-चीं

दूर निकोबार द्वीप में आठ वर्ष का राजू अपने मां-बाप का इकलौता बेटा था। अकेला होने के कारण वह सब का लाड़ला था। उसकी सबसे दोस्ती थी। यहां तक कि वह घंटों छत पर बैठकर चिड़ियों से बातें करता। उनकी बोली समझने की कोशिश करता। उस द्वीप में तरह-तरह की सुंदर चिड़ियां थीं। राजू धीरे-धीरे उनकी बातें समझने लगा था।

वह अक्सर चिड़ियों के बारे में सोचता। उन्हें ऊंची-ऊंची उड़ान भरते देख, उसे लगता कि काश उसके भी पंख होते। वह भी उड़ सकता, तो दूर देश की यात्राओं पर जाता। फिर लौटकर वह भी अपने पिता की तरह कहानियां सुनाता। वह चिड़ियों को दाना खिलाता। वे सब फुदक-फुदककर दाना खातीं। आपस में खेलतीं। कभी इस डाल पर बैठतीं तो कभी उस डाल पर। किसी दिन जब राजू उन्हें दिखाई न पड़ता, तो शोर मचा देतीं। जैसे शिकायत कर रही हों कि हमें छोड़कर कहां चले गए थे?

राजू के पिता अपने जहाज से पड़ोसी देशों में जाकर, माल बेचते और वहां से माल लाकर यहां बेचते। उन्हें समुद्री तूफानों का कई बार सामना करना पड़ा, लेकिन अब तो आदत हो गई थी। इधर राजू स्कूल से लौटकर छत पर बैठ, पिता जी का इंतजार किया करता। चिड़ियों से खेलता।

एक दिन, खबर आई कि उसके पिता का जहाज माल लेकर वापस रवाना हो गया। पंद्रहवें दिन वह घर पहुंच जाएंगे, ऐसा अनुमान था। राजू रोज की तरह छत पर बैठा था। जहाज को रवाना हुए, आठ दिन बीत गए थे। तभी एक छोटी चिड़िया आकर, राजू के पास छत पर बैठ गई। राजू ने उससे बातें शुरू कीं लेकिन चिड़िया उदास थी और कुछ जवाब नहीं दे रही थी।

अचानक चिड़िया ने मुंह खोला और चीं-चीं करती हुई, राजू से जल्दी-जल्दी कुछ कहने लगी। राजू को सारा मामला समझते देर न लगी। वह मां के पास दौड़ा आया। बताया कि थोड़ी ही देर में हिंद महासागर में भयंकर तूफान आने वाला है। उसकी मां कंट्रोल टावर की ओर भागी। फौरन ही जहाज को बेतार से खबर हो गई कि वे पास के द्वीप में लंगर डाल लें। तूफान के थमते ही फिर खबर दी जाएगी।

शाम होते ही हिंद महासागर में तेज तूफान आया। तूफान इतना भयंकर था कि कोई भी जहाज उसकी चपेट से बच नहीं सकता था। इस शताब्दी का सबसे भयंकर समुद्री तूफान था।

जब राजू के पिता घर वापस आए, तो राजू ने उन्हें सारा किस्सा सुनाया। सबने ईश्वर को धन्यवाद दिया। नन्ही चिड़िया के कारण वे बच गए थे। राजू का चिड़ियों से प्रेम और भी बढ़ गया।

—फ्रांसिस मिंज, अंडमान

सहेली

रामपुर गांव में व्यापारी सुंदरमल रहता था। वह बहुत ही दयालु एवं परोपकारी था, लेकिन उसकी कोई संतान नहीं थी।

सुंदरमल बूढ़ा हो चला था। एक दिन वह घर से दूर, व्यापार के सिलसिले में जा रहा था। उसने रास्ते में एक वृद्ध को कराहते हुए देखा। सेठ व्यापार का

कार्य भूल, उस वृद्ध को सहारा दे, पास के ही गांव में ले गया। उसके साथ दो-तीन दिन रहकर उसकी पूरी सेवा की। वृद्ध ने सेठ को आशीर्वाद दिया कि तुम परोपकारी हो। भगवान तुम्हारी मुरादें पूरी करेंगे। उस बूढ़े की बात सच निकली। उसके घर एक सुंदर बालक ने जन्म लिया।

सुंदरमल यह समाचार सुन फूला न समाया। खूब धूमधाम से बच्चे का नामकरण किया। बच्चे का नाम सूरज रखा गया। लेकिन बच्चे का दुर्भाग्य कि तीन वर्ष का था, तभी मां काल के गाल में समा गई। ठीक एक वर्ष बाद, पिता भी भगवान को प्यारे हो गए।

सूरज को मां-पिता की याद हमेशा सताती। वह उदास रहने लगा। वह हमेशा ही छत की मुंडेर पर उदास बैठा रहता था। मुंडेर के छोर पर एक गुम्बद था। उस पर एक चिड़िया आकर बैठती थी। वह सूरज को उदास देख, खुद भी उदास रहने लगी। वह चाहती थी कि सूरज हमेशा खुश रहे।

एक दिन वही चिड़िया भोजन की तलाश में जंगल में काफी दूर चली गई। वहां उसकी एक पुरानी सहेली मिल गई। उसने अपनी सहेली को सूरज के बारे में बताया। उस पेड़ के नीचे एक वृद्ध बैठे थे। उन्हें पशु-पक्षी की भाषा भी समझ में आती थी। यह जानकर उन्हें काफी दुःख हुआ कि वह बच्चा जो उनके ही वरदान से इस पृथ्वी पर आया है, दुखी है। उन्होंने चिड़िया को अपने पास बुलाया। उसे दिव्य शक्ति द्वारा मनुष्य की भाषा बोलने की शक्ति प्रदान की। उन्होंने कहा कि तुम बहुत दयालु चिड़िया हो। तुम सूरज को हर तरह से खुश रखने का प्रयास करो। चिड़िया तुरंत उड़ती हुई सूरज के पास पहुंची। उससे मनुष्य की भाषा में बात करने लगी। अब सूरज को एक सहेली मिल गई थी। दोनों अच्छे दोस्त बन गए।

—प्रिया रानी पटना,

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : चंदा पांडेय, वर्धमान; एम. जाहिद, गुवाहाटी; सोनिया देव, भवाली (उ. प्र.)।

शीर्षक बताइए

परिणाम

नंदन फरवरी '९४ अंक में छपे चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

फूल-फूल तुम कितने अच्छे, तुम्हें प्यार करते हैं बच्चे।
—निधि सोनी, म. नं. ७, श्रद्धानंद पुरा, ललितपुर (उ. प्र.)।

वसंत पर्व की बधाई, प्यारी बहना मुसकाई।
—रणजीतसिंह सैनी (उड़ीसा वाले), ग्रा. अबरामा, पो. मानकपुर, जि. पटियाला (पं.)।

सर्दी का हुआ अंत, आने वाला है वसंत।
—रीतू कौशिक, राजेंद्र कौशिक, म. नं. २४९, विकास नगर, भिवानी (हरि.)।

गुरु जनों को करूं प्रणाम, पाऊं आशीष बनूं महान।
—प्रियम, द्वारा एस. बी. पांडेय, इलाहाबाद बैंक, कन्हैया चक, परबत्ता, जि. खगड़िया (बि.)।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : कुमकुम प्रियदर्शिनी, लालबाजार, वर्धमान; ओमप्रकाश व्यास, झालावाड़ (राज.); सौरभ सराफ, दमोह (म. प्र.); विशाल, गुरदासपुर (पं.)।

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————— आयु ———

पूरा पता ————————

————————

रुचि ————————

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. पंकज कुमार, १४ वर्ष, छात्र पुस्तक भंडार, मेन रोड, मैरवा, जिला. सीवान (बि.); २. तृप्ति कुमारी, १६, डा. मोतीलाल दास, कोना सराय, बिहार शरीफ, नालंदा; ३. बलजीत शर्मा वशिष्ठ, १४, ग्रा.+पो. खेड़ला, गुड़गांव; ४. जूली कश्यप, १५, १५० राजपूत नेवरी रोड, भृगु आश्रम, बलिया; ५. गौरव गुप्ता, १५ वी. के. गुप्ता, प्राइमरी हैल्थ सेंटर, लोनी, गाजियाबाद; ६. मो. शौकीन, १६, रफीक अहमद, ग्रा. कवाल, मुजफ्फरनगर; ७. अर्चना सिन्हा, ९, देवलाल प्रसाद, रामलखन भवन, रोड नं. १३ राजेंद्र नगर, पटना; ८. सचिन गुप्ता, १०, मधुलिका वस्त्र विक्रेता, भगवंत नगर, उन्नाव; ९. देवलालकुमार अग्रवाल, १०, रमेशचंद्र अग्रवाल, हास्पिटल चौक, रीवां; १०. राकेशकुमार, १४, जगन्नाथ प्रसाद, महावीर स्थान, पुरानी बाजार, सीतामढ़ी; ११. कृष्णमुरारी गुप्ता, १४, ई. टी. ११ नई चम्बल कालोनी, श्योपुर कलां (म. प्र.);१२. अनुभव, १४, देशहित कारक फार्मेसी, पो. सरायतरीन, मुरादाबाद; १३. प्रज्ञा आर्य, १०, ५/५६१ विकास नगर, लखनऊ; १४. विकास तनेजा, १५, १६१० न्यू हाउसिंग बोर्ड कालोनी, सैक्टर १४, सोनीपत; १५.प्रदीपकुमार सिंह, १२, ७६ जी रेलवे क्वार्टर्स,बलिया, १६. पीयूषकुमार सिन्हा, १२, विवेक प्रिंटिंग प्रेस, पो. महेंद्र शाहगंज, पटना, १७. शैलेंद्रकुमार सोनी, १४, २६ स्वर्णकार कालोनी, उमा हर सदन, विदिशा; १८. राजन गर्ग, १६, रामा फ्लोर मिल, प्लांट साइड रोड, राउरकेला; १९. ममता कुमारी, १०, स्वदेशी दवा खाना, साहिबगंज, छपरा; २०. अशोककुमार शर्मा, १६, ग्र.+पो. बुडौली, रेवाड़ी; २१. राजेशकुमार, १६, खजुराहो मेडिकल स्टोर, नौगांव, छतरपुर; २२. अंशु कुमारी, १२, जगदीश प्रसाद यादव, ग्रा.+पो. बलहा बाजार, खगड़िया, २३. रीतेश चंद्र श्रीवास्तव, १६, डी. २३ सिविल लाइंस कालोनी, गोरखपुर; २४. संगीता जैन, १२, १८२ तारकेश्वरी लेन, शिवपुरी; २५. हरजीत सिंह, १५, अजमानी आटो सेंटर, पिथौरा, रायपुर; २६. चंदनकुमार चांद, १४, डा. आर. के. झा, ग्राम+पो. बसहा, सुपौल (बि.); २७. विक्रांत श्रीवास्तव, १६, आर. पी. श्रीवास्तव, कचहरी, गोरखपुर; २८. सुरेंद्रपाल सिंह, १६, २०७ अम्बेडकर नगर, ज्वालापुर, हरिद्वार; २९. अतुलकुमार गुप्ता, १६, वैश्य जनरल स्टोर, गली गन्ना दफ़्तर, फरीदपुर, बरेली; ३०. शैलेंद्र जायसवाल, १४, १० एफ. व्यापारी टोला लेन, कलकत्ता; ३१. जसविंदर कौर बेदी, १६, १०५३ फ्लावर कम्पाउंड, सिविल लाइन, झांसी; ३२. नीरजकुमार राय, १६, सहदेवप्रसाद राय, बाबू पाड़ा, दुमका; ३३. वंदना अग्रवाल, १६, बसंतलाल अग्रवाल, जूनागढ़, कालाहंडी (उड़ीसा); ३४. रोशन श्रीवास्तव, १४, अमितशरण श्रीवास्तव, जनकपुर स्टेशन एरिया (नेपाल); ३५. अभिषेककुमार सिन्हा, १४, अंजनीकुमार सिन्हा, स्टेशन चौक, मधेपुरा; ३६. नवीन बंधु, १६, १५६ बैंकर्स स्ट्रीट, सदर, मेरठ कैंट; ३७. अनूप शुक्ल, १२, श्यामनारायण शुक्ल, शिव नगर, मानिकपुर, बांदा।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. अवनीशकुमार तिवारी, १२ वर्ष, अयोध्याप्रसाद सिंह, साधनापुरी, छपरा; २.पुष्पा खिरिया, १४, राजाराम खिरिया, ग्रा. अमरा, झांसी; ३. अमितकुमार, १२, नारायणी इलेक्ट्रिक्स, लोहा पट्टी रोड, रक्सौल, पूर्वी चम्पारण; ४. शनु गुप्ता, १२, २००/३ सोलानी कुंज, रुड़की यूनिवर्सिटी, रुड़की; ५. श्रुति रघुवंशी, ८, वीनस शुगर लिमिटेड, मंझावली, चंदौसी, मुरादाबाद; ६. आकांक्षा कुमारी, ८, विश्वनाथ सिंह, चंदेल सदन, ग्रा.+पो. सूर्यपुरा, रोहतास; ७. आशुतोष प्रसाद साहू, ८, पी. एन. गुप्ता, मुगलसराय, वाराणसी; ८. अर्चना सविता, १३, केदारनाथ सविता, लाल डिग्गी, सिंहगढ़, मिर्जापुर; ९. प्रफुल्ल भालेराव, १३, भागीरथ पुरा, श्रीराम धर्मशाला रोड, लक्ष्मण भट्टा, इंदौर; १०. मनीषकुमार अरोड़ा, १३, बी. ४८ अनार कली गार्डन, गली नं. २ जगतपुरी, दिल्ली; ११. शुचि माथुर, ९, ५३२ कायस्थ मोहल्ला, सिंहपोल, भैरूं जी के सामने, जोधपुर; १२. ब्रजेशकुमार, १४, म. न. २२२३, सैक्टर ८ डी नया बोकारो स्टील सिटी; १३. गौतम साव, १३, देवलाल साव, नरपल्ली, दुर्गापुर; १४. प्रियाना जार्ज, ८, डी १/१०९ चाणक्यपुरी, नई दिल्ली; १५. सुमेधा शर्मा, १२, बृजगोपाल शर्मा, १०३५/८ रेलवे रोड, कुरुक्षेत्र; १६. सपनकुमार, १६, डी. सी. एम. स्टोर, रुद्रपुर, नैनीताल; १७. शिवम् शुक्ल, ८, ९/ए तिलक ब्रिज रेलवे कालोनी, नई दिल्ली; १८ मनोज विजयासाहु, १४, दिवाकर पैकुजी कायरकर, तीसरा बस स्टाप, गोपाल नगर, नागपुर (महा.)।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

ऐसा भी होता है!
शाम का वक्त था. सोनू स्कूल से घर लौट रहा था. आचानक तेज हवा चलने लगी... और एक उड़न-तश्तरी आसमान से उतरी और ठीक सोनू के पास आकर रूक गई...
उसमें से एक बौना-सा जीव निकला और सोनू से बोला...
"मुझसे दोस्ती करोगे?"
"त... त... तुम हो कौन?"
"मैं मंगल ग्रह से आया हूँ. दोस्ती करने."
सोनू के मुँह से निकल गया
"ठीक है"
"तो ये लो हमारी दोस्ती की निशानी. मेरी मनपसंद चीज जो तुम्हारी ही धरती का जादू है."
"जादू?"
"बिल्कुल. न गुठली न छिलका आम का खास मज़ा"
"आम? ऐसी सर्दी में? जल्दी दो."
"तो दोस्त, खोलो मुँह और करो आँखें बंद टाइट और ये लो मेरी प्यारी मैंगो बाइट"
"हं! मैंगो बाइट!"
सोनू खुशी से उछल पड़ा. तो उसकी फ़ेवरेट मैंगो बाइट मंगल ग्रह में भी फ़ेवरेट है!
जैसे ही उसने मैंगो बाइट मुँह में डाली नए दोस्त ने मैंगो बाइट से भरा हुआ एक बॉक्स थमा दिया और "फिर मिलेंगे" कह कर उड़ गया.
mango bite
पारले मैंगो बाइट

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९४ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४